इटली की लोक कथाओं में ईसाई धर्म

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Italy Ki Lok Kathaon Mein Isai Dharm (Christianity in Italian Folktales)
Cover Page picture : Vatican City
Published Under the Aspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : sushmajee@yahoo.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

इटली की लोक कथाओं में ईसाई धर्म 7

1 सेंट जोसेफ का भक्त 9

2 स्वर्ग में एक रात 12

3 जीसस और सेंट पीटर फ़ियूली में 21

4 जीसस और सेंट पीटर सिसिली में 44

5 फ़ा इगनैज़ियो 58

6 औलिव 61

7 तीन अनाथ 81

8 एक नाव जिसमें... 90

9 एक बच्चा जिसने क्रास को खाना खिलाया 105

10 सेंट ऐन्थोनी की भेंट 111

11 शेरों की घास 116

12 ननों की कौनवैन्ट और साधुओं की मोनैस्टरी 133

13 वर्मवुड 145

14 सही आदमी 163

15 लौर्ड सेंट पीटर और अपोसिल्स 168

16 लौर्ड, सेंट पीटर और लोहार 173

17 इस दुनियॉ में एक रोता है दूसरा हॅसता है 181

18 गधा 182

19 सेंट पीटर और उसकी बहिनें 189

20 पाइलेट 192

21 जूडास की कहानी 196

22 निराश मालकस 199

23 खम्भे के चारों तरफ मालकस 201

24 बुत्ताद्यु की कहानी 203

25 किवोलियू की कहानी 205
26 गलीशा के सेंट जेम्स की कहानियॉ..... 212
27 बेकर का नौकर 240
28 औकेशन 250
29 भाई जियोवानोने 255
30 गौडफ़ादर कष्ट 264

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इटली की लोक कथाओं में ईसाई धर्म

दुनियॉ में बहुत सारे धर्म हैं जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, पारसी धर्म। इन सब धर्मों में हिन्दू धर्म सबसे अधिक पुराना है। करीब **2500** साल पहले बौद्ध और जैन धर्म महात्मा बुद्ध और महावीर जी ने शुरू किये। **2000** साल पहले ईसाई धर्म जीसस काइस्ट ने शुरू किया और फिर उसके **600** साल बाद मुहम्मद साहब ने अरब में इस्लाम धर्म शुरू किया। सिख धर्म भारत में **15**वीं सदी में गुरू नानक ने शुरू किया।

जानवरों, परियों, राजाओं, सौतेली मॉओं, आदि की लोक कथाओं के अलावा पश्चिमी देशों की कई लोक कथाऐं ईसाई धर्म पर भी आधारित हैं। उनमें ईसाई धर्म साफ दिखायी देता है। ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं जिनमें ईसाई धर्म साफ झलकता है हमने तुम्हारे लिये यहॉ संकलित की हैं और उन्हें यहॉ प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस विषय की इस पुस्तक में केवल इटली देश की लोक कथाऐं शामिल है और अधिकतर इसकी कहानियॉ दो पुस्तकों से ली गयी हैं।[1] ये कहानियॉ केवल ईसाई धर्म के लोगों के लिये ही नहीं बल्कि सभी धर्मों के बच्चों और बड़ों के लिये बहुत मजेदार हैं। आशा है ईसाई धर्म की लोक कथाओं का यह संग्रह तुम लोगों को पसन्द आयेगा और तुम्हारा भरपूर मनोरंजन करेगा।

इसके दूसरे संग्रह में हम संसार के विभिन्न देशों की ईसाई धर्म पर आधारित कथाऐं प्रस्तुत करेंगे।

---

[1] (1) Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino. Tr by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. Hindi translation of 125 tales out of 200 tales of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

(2) Italian Popular Tales. By Thomas Frederick Crane. 1885. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

1 सेंट जोसेफ का भक्त[2]

एक बार एक आदमी था जो सेंट जोसेफ का बहुत बड़ा भक्त था। वह केवल सेंट जोसेफ को ही मानता था।

वह अपनी सारी प्रार्थनाएँ सेंट जोसेफ के नाम करता था। उसी के लिये मोमबत्ती जलाता था। उसी के नाम का दान देता था। कहने का मतलब यह है कि वह सेंट जोसेफ के अलावा और किसी भी सेंट को नहीं जानता था।

जब उसके मरने का दिन आया तो वह सेंट पीटर के सामने गया। सेंट पीटर ने उसको अन्दर लेने से मना कर दिया क्योंकि उसके पास जितनी भी प्रार्थनाऐं थीं जो उसने अपनी ज़िन्दगी में कही थीं वे सब सेंट जोसेफ के नाम की थीं।

उसने बताने के लिये कोई अच्छा काम भी नहीं किया था और ऐसे बर्ताव किया था जैसे कि वह कोई बहुत ही बड़ा मालिक था। उसके लिये दूसरे सेंट जैसे कहीं कुछ थे ही नहीं।

सेंट जोसेफ के भक्त ने सोचा "जब मैं यहाँ तक आ ही गया हूँ तो लौटने से पहले मुझे सेंट जोसेफ से कम से कम मिल तो लेना ही चाहिये।"

[2] The Devotee of St Joseph. A folktale from Verona, Italy, Europe. Translated from the book I"talian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". Tr by George Martin. 1980.

सो उसने सेंट पीटर से सेंट जोसेफ से मिलने की इच्छा प्रगट की। सेंट पीटर ने सेंट जोसेफ को बुलवाया। सेंट जोसेफ आया तो उसने देखा कि वहॉ तो उसका भक्त खड़ा है।

वह बोला — "बहुत अच्छे। मैं तुमको यहॉ अपने साथ देख कर आज बहुत खुश हूॅ। आओ अन्दर आ जाओ।"

वह आदमी बोला — "मै अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि यह सेंट पीटर मुझे आने नहीं दे रहे।"

"यह तुमको अन्दर क्यों नहीं आने दे रहे?"

"क्योंकि इनका कहना है कि मैंने केवल आपको ही पूजा है और किसी दूसरे सेंट को नहीं।"

"पर मैं तो तुमको अन्दर बुला रहा हूॅ। इससे क्या फर्क पड़ता है कि तुमने किसी और सेंट को पूजा है या नहीं। तुम अन्दर आ जाओ। सब सेंट एक जैसे हैं।"

पर सेंट पीटर उसको अन्दर आने से रोकते ही रहे। इस बात पर सेंट पीटर और सेंट जोसेफ दोनों सेंट्स में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई।

अन्त में सेंट जोसेफ ने सेंट पीटर ने कहा — "या तो तुम मेरे इस भक्त को अन्दर आने दो या फिर मैं अपनी पत्नी और अपने बेटे को ले कर यह स्वर्ग कहीं और ले जा रहा हूॅ।"

अब सेंट जोसेफ की पत्नी तो "आवर लेडी"[3] थी और उसका बेटा "लौर्ड"[4] था।

सो यह सुन कर सेंट पीटर ने इसी में अपनी अक्लमन्दी समझी कि वह सेंट जोसेफ के भक्त को अन्दर आने दे। और उसने उसको अन्दर आने दिया।

[3] Our Lady – Mary, the Mother of Jesus
[4] Lord – Jesus himself

2 स्वर्ग में एक रात[5]

एक बार की बात है कि एक जगह दो बड़े अच्छे दोस्त रहा करते थे। एक बार उन्होंने आपस में अपने प्रेम की वजह से यह कसम खायी कि जिस किसी की भी शादी पहले होगी वह दूसरे को अपना बैस्टमैन[6] बनने के लिये बुलायेगा चाहे वह धरती के किसी भी कोने में क्यों न हो।

इत्तफाक की बात कि इस कसम को खाने के कुछ दिन बाद ही उनमें से एक दोस्त चल बसा। और फिर दूसरा दोस्त जो ज़िन्दा बचा था उसकी शादी होने वाली थी।

अब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे। वह कैसे अपने दोस्त को अपना बैस्टमैन बनने के लिये बुलाये सो वह चर्च में अपने कन्फैशन कराने वाले पादरी[7] के पास गया।

पादरी बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। पर तुम्हें अपना वायदा तो निभाना ही चाहिये। चाहे वह मर गया है पर तुमको तो उसको बुलाना ही चाहिये।"

---

[5] One Night in Paradise. A folktale from Friuli, Italy, Europe. Translated from the book: "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980,

[6] In North America the Bestman is a male attendant to the groom in wedding ceremony; while in Europe he is an "Usher". Normally the groom selects him from among his good friends. It is an honor to be the Bestman

[7] There is a custom in Catholic Church that if you have made any mistake or sin, you have the provision to acknowledge it in the Church before a Priest. Ofcourse both cannot see each other as there is a curtain in between them. It is called confession, confessor and confesion box.

फिर पादरी ने उसको सलाह दी — "तुम ऐसा करो कि तुम उसकी कब्र पर जाओ और उसको वही कहो जो तुमको उससे कहना चाहिये। फिर यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह तुम्हारी शादी में तुम्हारा बैस्टमैन बनने के लिये आता है या नहीं।"

उस पादरी की बात मान कर वह अपने दोस्त की कब्र पर गया और बोला — "दोस्त, अब समय आ गया है जब तुम्हें मेरा बैस्टमैन बनना है।"

शादी वाले दोस्त के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसके सामने सामने जमीन हिली और उसमें से उसका दोस्त कूद कर बाहर निकल आया और बोला — "हर हाल में मुझे अपना वायदा निभाना है नहीं तो मुझे परगेटरी[8] में जाना पड़ेगा और पता नहीं मुझे फिर वहॉ कब तक रहना पड़े।"

वहॉ से पहले वे दोनों घर गये और फिर वहॉ से शादी के लिये चर्च गये। शाम को शादी की दावत हुई तो वहॉ उस मरे हुए दोस्त ने सबको बहुत सारी कहानियॉ सुनायीं पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसने उस दूसरी दुनियॉ के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा कि वहॉ उसने वहॉ क्या देखा या क्या किया।

दुलहा उससे कई सवाल पूछना चाहता था पर उससे किसी भी सवाल पूछने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी

[8] In Catholic Christianity, Purgatory is a place or state of suffering where the souls of sinners inhabit before going to Heaven.

दावत ख़त्म हो जाने के बाद वह मरा हुआ दोस्त उठा और अपने दुलहा दोस्त से बोला — "क्योंकि मैंने तुम्हारे ऊपर यह एहसान किया है कि मैं तुम्हारी शादी में बेस्टमैन बनने के लिये धरती पर आया तो इसके बदले में क्या तुम मेरे साथ वापस कुछ दूर तक चलोगे?"

"ओह क्यों नहीं, क्यों नहीं। यकीनन। पर मैं बहुत दूर तक नहीं जा सकता क्योंकि आज ही तो मेरी शादी हुई है।"

"मुझे मालूम है। तुम जब भी चाहो रास्ते में से लौट सकते हो।"

सो दुलहे ने अपनी दुलहिन से विदा ली और बोला — "मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ अभी वापस आता हूँ।" और वह अपने उस मरे हुए दोस्त के साथ चल दिया।

दोनों बात करते हुए चले जा रहे थे। उन्होंने पहले किसी एक बात के बारे में बात की, फिर दूसरी बात के बारे बात की और फिर बात करते करते वे उस मरे हुए दोस्त की कब्र तक आ गये।

वहाँ उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया। उसी समय ज़िन्दा दोस्त ने सोचा कि अगर मैंने इससे अब नहीं पूछा तो शायद फिर कभी नहीं पूछ पाऊँगा। सो उसने अपना मन पक्का किया और हिम्मत कर के पूछा — "दोस्त, क्योंकि तुम मर गये हो इसलिये मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

"पूछो।"

"इस दुनियॉ के बाद क्या होता है।"

मरा हुआ दोस्त बोला — "मैं खुद तो तुमको इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं बता सकता पर अगर तुम जानना ही चाहते हो तो तुम खुद ही मेरे साथ स्वर्ग क्यों नहीं चलते?"

तभी वह कब्र खुल गयी और वह ज़िन्दा दोस्त अपने मरे हुए दोस्त के पीछे पीछे उस कब्र में चला गया और वे दोनों स्वर्ग में आ गये।

मरा हुआ दोस्त अपने ज़िन्दा दोस्त को एक बहुत ही सुन्दर क्रिस्टल[9] के महल में ले गया। उस महल के दरवाजे सोने के बने थे। वहॉ देवदूत हार्प बजा रहे थे[10] और खुशकिस्मत आत्माऐं उस संगीत पर नाच रहीं थीं। सेंट पीटर वहॉ पर ढोल बजा रहे थे।

वह ज़िन्दा दोस्त तो यह सब शान देख कर भौंचक्का रह गया। उसका तो मुॅह खुला का खुला रह गया। उसको इस बात का पता ही नहीं चलता कि वह वहॉ उस महल को कितनी देर तक देखता रहता अगर उसको बाकी का स्वर्ग न देखना होता तो।

मरा हुआ दोस्त बोला — "चलो अब मैं तुमको दूसरी जगह दिखाता हूॅ।"

[9] Crystal – glass cut in a special fashion so that the light can reflect in various directions…

[10] Translated for the word "Angels" – they were playing Harp. See the picture of Harp above.

कह कर वह अपने दोस्त को एक बागीचे की तरफ ले गया जिसके पेड़ लकड़ी और पत्तों के न हो कर बहुत सारे रंगों की गाने वाली चिड़ियें दिखा रहे थे।

मरा हुआ दोस्त फिर बोला — "जागो मेरे दोस्त जागो। चलो और आगे चलते हैं।"

कह कर वह अपने दोस्त को एक घास के मैदान की तरफ ले गया जहॉ देवदूत[11] प्रेमियों की तरह से खुशी से नाच रहे थे।

मरा हुआ दोस्त फिर बोला — "चलो अब हम एक तारा देखेंगे।" ज़िन्दा दोस्त को तो तारे इतने अच्छे लगते थे कि वह तो तारे हमेशा के लिये देख सकता था। सो वह उसके पीछे पीछे तारा देखने चल दिया।

फिर वहॉ उसने नदियॉ देखीं जिनमें पानी की जगह शराब बह रही थी और उनकी तलियॉ चीज़ की बनी हुई थीं।[12]

अचानक वह ज़िन्दा दोस्त चिल्ला पड़ा — "ओ मेरे भगवान, ओ मेरे दोस्त, मुझे तो बहुत देर हो गयी। मुझे तो अपनी दुलहिन के पास वापस लौटना था। वह मेरे बारे में चिन्ता कर रही होगी।"

"क्या तुमने स्वर्ग इतनी जल्दी देख लिया?"

"हॉ काफी तो देख ही लिया है। काश मेरे पास मेरी अपनी इच्छा होती।"

[11] Translated for the word "Angels"

[12] Their bottoms were made of cheese – cheese in western world is a processed Indian Paneer.

"अभी तो यहॉ देखने के लिये बहुत कुछ बाकी है।"

"मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है कि यहॉ पर सचमुच ही देखने के लिये काफी कुछ होगा पर अब मुझे वापस जाना चाहिये। मुझे पहले ही काफी देर हो गयी है।"

"ठीक है जैसे तुम्हें अच्छा लगे।" कह कर वह मरा हुआ दोस्त अपने ज़िन्दा दोस्त को कब्र तक वापस छोड़ गया और खुद वहीं गायब हो गया।

ज़िन्दा दोस्त कब्र से बाहर आया पर उसको वह कब्रिस्तान पहचान में ही नहीं आया। उसमें तो बहुत सारे पत्थर और मूर्तियॉ लगी हुई थीं और ऊॅचे ऊॅचे पेड़ खड़े थे। यह कब्रिस्तान पहले तो ऐसा नहीं था।

वहॉ से जब वह बाहर निकला तो उसको बहुत ऊॅची ऊॅची इमारतें दिखायी दीं – पर वहॉ तो पहले सादे से पत्थरों के मकान हुआ करते थे जो सड़क के दोनों तरफ लाइन से लगे हुए थे। ये इतनी ऊॅची ऊॅची इमारतें कहॉ से आ गयीं?

सड़कें कार, ट्रक और कई तरह की और गाड़ियों से भरी हुई थीं और आसमान में हवाई जहाज़ उड़ रहे थे।

"अरे मैं धरती के किस हिस्से में आ गया? क्या मैं किसी गलत सड़क पर आ गया? और देखो तो ये लोग किस तरीके के कपड़े पहने हैं?"

उसने सड़क पर चलते हुए एक बूढ़े को रोका और उससे पूछा — "जनाब यह कौन सा शहर है?"

"तुम्हारा मतलब है कि इस शहर का नाम क्या है?"

"जी हॉ इसी शहर का। इस शहर का नाम क्या है? मैं इसे पहचान नहीं पा रहा हूँ। क्या आप मुझे उस आदमी के घर का पता बता सकते हैं जिसकी अभी कल ही शादी हुई है।"

वह बूढ़ा बोला — "कल? मैं चर्च की देखभाल करने वाला आदमी हूँ[13] इसलिये मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूँ कि कल तो यहॉ कोई शादी नहीं हुई।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? मेरी खुद की शादी कल हुई थी।" फिर उसने उस बूढ़े को अपने मरे हुए दोस्त के साथ स्वर्ग जाने का पूरा हाल बताया।

बूढ़ा हॅसा और बोला — "लगता है कि तुमने सपना देखा है। यह तो बहुत पुरानी कहानी है जो बूढ़े अपने पोते पोतियों को सुनाते हैं। कि एक दुलहा अपनी शादी के दिन अपनी नयी दुलहिन को छोड़ कर अपने दोस्त के साथ कब्र पर चला गया था और फिर वहॉ से कभी वापस नहीं आया। उसकी पत्नी तो बेचारी उसके दुख में रो रो कर ही मर गयी।"

"यह तो हो ही नहीं सकता क्योंकि वह दुलहा तो मैं खुद हूँ।"

[13] I am the Sacristan in the Church.

"सुनो, अब तुम केवल एक काम कर सकते हो। वह यह कि हमारे बिशप से जा कर बात कर लो। वही तुमको बता सकते हैं कि कब क्या हुआ था।"

"बिशप? पर यहॉ इस शहर में तो केवल एक पारिश पादरी[14] ही होता है। यह बिशप कहॉ से आ गया।"

"यह पारिश पादरी क्या? यहॉ बिशप को तो रहते बहुत साल हो गये।" और यह कह कर चर्च की देखभाल करने वाला वह बूढ़ा उसको अपने बिशप के पास ले गया।

वहॉ जा कर उस ज़िन्दा दोस्त ने उस बिशप को अपनी कहानी सुनायी तो उस बिशप को एक घटना की याद आयी जो उसने बचपन में सुनी थी। वह पारिश के कई रजिस्टर ले कर आया और उनमें से एक रजिस्टर के पन्ने पीछे की तरफ पलटने लगा।

पन्ने पलटते हुए वह बोला — "तीस साल पहले, नहीं नहीं पचास साल पहले, नहीं नहीं सा सौ साल पहले, नहीं नहीं दो सौ साल पहले, नहीं नहीं... ।

वह पन्ने पलटता रहा और ऐसे ही कुछ कुछ बोलता रहा। आखीर में एक पीले से मुड़े तुड़े पन्ने पर लिखे नामों पर उॅगली रख कर बोला — "हॉ यह तीन सौ साल पुरानी बात है। एक नौजवान कब्रिस्तान में गायब हो गया था और उसकी पत्नी उसके दुख में रो

[14] Parish Priest – lower grade person than BIshop

रो कर मर गयी थी। यह देखो यह पढ़ो अगर तुमको मेरा यकीन न हो तो।"

"पर यह दुलहा तो मैं खुद ही हूँ।"

"ओह तो वह तुम ही हो जो दूसरी दुनियॉ गये थे। मुझे भी तो कुछ बताओ न उस दूसरी दुनियॉ के बारे में।"

पर यह सुन कर वह ज़िन्दा दोस्त तो एक मरे हुए आदमी की तरह पीला पड़ गया, जमीन में धॅस गया और उसके बाद वह स्वर्ग के बारे में उस बिशप से एक शब्द भी कह सकता कि उससे पहले ही वह मर गया।[15]

[15] This story supports two things –

1. That there is an abnormal time gap between this world's time scale and the Other World's time scale because the married man went to Paradise only for one night but it was after 300 years when he came back to Earth again.

This phenomenon is supported by two incidents clearly written in Bhaagvat Puraan – one when Brahmaa Jee took Gwaal Baal to his abode and kept them for a year and secondly when King Raivat went to consult Brahmaa Jee for the groom for his daughter's marriage and when he stayed there only for a few moments but a long time passed on Earth that he could not find anybody who was suggested by him to Brahmaa Jee. Then he married her to Balaraam Jee. Since Balaraam Jee was shorter than Revatee he pressed Revatee a little bit to bring her to his height.

2. That whoever has visted the Other World cannot tell anything about it to a mortal man. He dies before that.

3 जीसस और सेंट पीटर फ्रियूली में[16]

जीसस और सेंट पीटर की यहाँ छोटी छोटी चार लोक कथाऐं दी जा रही हैं जो इटली के फ्रियूली प्रान्त[17] में बहुत मशहूर हैं।

1 सेंट पीटर जीसस[18] से कैसे मिला

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसका नाम था पीटर। वह मछली पकड़ कर अपना गुजारा करता था। एक दिन जब वह घर पहुँचा तो बहुत थक गया था। उस दिन उसको कोई मछली भी नहीं मिली।

उसको और भी ज़्यादा बुरा तब लगा जब उस दिन उसकी पत्नी ने उसके लिये शाम का खाना भी नहीं बनाया था। वह बोली — "मैं सारा दिन इधर उधर तो देखती रही पर मुझे कुछ मिला ही नहीं और तुम्हें मालूम है कि हमारे पास पैसे तो हैं नहीं।"

पीटर बोला — "पर बिना खाना खाये मुझे नींद कैसे आयेगी? जल्दी कर मुझे कुछ खाने के लिये दे।"

---

[16] Jesus and St Peter in Friuli. A folktale from Italy from its Friuli Province. "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980,

[17] Friuli, or Friuli-Venezia Giulia, is one of the 20 regions of Italy, and one of five autonomous regions with special statute. Its capital is Trieste. Venice, is not in this region as its name indicates. It has an area of 7,858 km² and about 1.2 million inhabitants. The name of the region was spelled Friuli–Venezia Giulia until 2001.

[18] Translated for the word "Lord".

"घर में कुछ भी नहीं है पीटर। अगर तुम चाहो तो हम लोग खेत पर जा सकते हैं जहॉ बहुत अच्छी अच्छी बन्द गोभियॉ लगी हुई हैं। वहॉ से हम उनको तोड़ कर ला सकते हैं।"

"पर मैं चोरी करना नहीं चाहता।"

"तब तो हमको आज बिना खाना खाये ही रहना पड़ेगा।"

"क्या कहा तूने? बन्द गोभी? क्या हम दोनों साथ साथ जा कर उनको ला सकते हैं?"

पीटर की पत्नी बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। कोई हम लोगों को देखे नहीं इसके लिये हम ऐसा करेंगे कि एक आदमी एक तरफ से जाये और दूसरा आदमी दूसरी तरफ से।"

पीटर बोला "यह ठीक है।" और दोनों खेत की तरफ चल दिये। पीटर ने एक सड़क ली और उसकी पत्नी ने दूसरी सड़क ली।

जब पीटर खेत की तरफ जा रहा था तो उसे सफेद बालों[19] और भूरी ऑखों वाला एक आदमी मिला। वह सड़क के किनारे लकड़ी के एक लट्ठे पर बैठा हुआ था।

पीटर ने उसको देख कर सोचा "यह अजनबी यहॉ बैठा क्या कर रहा है?"

[19] Translated for the words "Blond Hair". Blond hair is of white color.

सो उसने उस अजनबी से पूछा — "ओ भले आदमी, तुम यहॉ बैठे क्या कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "मैं यहॉ लोगों को यह सिखाने के लिये बैठा हुआ हूँ कि कोई बुरा काम नहीं करना चाहिये... ।"

पीटर ने तुरन्त सोचा — "ओ मेरे भगवान, यह तो लगता है कि मुझे ही संकेत कर के यह कह रहा है।"

वह अजनबी आगे बोला — "... और अगर उन्होंने कोई खराब काम किया तो उसके लिये बाद में उनको पछताना पड़ेगा।"

यह बात तो पीटर के दिमाग में घुसी ही नहीं। वह अजनबी को बीच में ही वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गया पर उस अजनबी के शब्द उसके कानों में बहुत देर तक गूँजते रहे।

खेत पर पहुँचने पर उसको एक स्त्री का साया वहॉ घूमता हुआ दिखायी दिया। वह उस खेत के मालिक की पत्नी का साया था। "खेत के मालिक की पत्नी का साया? मैं तो यहॉ से तुरन्त ही भागता हूँ।" और बस पीटर वहॉ से तुरन्त ही भाग लिया।

वह पौधों, गड्ढों और हैजेज़[20] को फॉदता हुआ भागा चला जा रहा था। वह भागता भागता सीधा घर पहुँचा।

[20] Hedges are the low walls made by growing special plants, so thick that even a bird cannot pass through it. See its picture above.

उस अजनबी के शब्द अभी भी उसके कानों में गूँज रहे थे "उसके लिये बाद में उनको पछताना पड़ेगा।"

जैसे ही वह घर में घुसा उसने झाड़ू उठायी और अपनी पत्नी को उससे मारना शुरू कर दिया — "तो तू मुझे एक चोर बनाना चाहती थी, ओ कमीनी औरत।"

पत्नी चिल्लायी — "पीटर, भगवान के लिये मुझे माफ कर दो। मैं भी कुछ नहीं चुरा सकी क्योंकि उसी समय खेत का मालिक वहाँ आ गया था और मुझे अपनी जान बचा कर वहाँ से भागना पड़ा।"

"और मुझे उसकी पत्नी ने डराया, ओ कमीनी औरत। तू तो मुझे चोर ही बनाना चाहती थी। मैं यहाँ से जा रहा हूँ और अब जा कर पश्चाताप करूँगा।"

और वह वहाँ से भाग लिया उस अजनबी को ढूँढने के लिये जिसके शब्द अब तक उसके कानों में गूँज रहे थे "उसके लिये बाद में उनको पछताना पड़ेगा।" उसने जल्दी ही उस अजनबी को पकड़ लिया और जा कर उसको अपनी सारी कहानी कह सुनायी।

अजनबी बोला — "हाँ पीटर यह तुमने ठीक किया कि तुम मेरे पास चले आये। पर मैं तुमको यह बता दूँ कि वह साया जो तुमने खेत पर देखा था वह साया खेत के मालिक की पत्नी का नहीं था बल्कि वह तुम्हारा अपना था। और क्योंकि तुम खराब काम करने जा रहे थे इसलिये तुम उस साये को पहचान नहीं सके।

आओ तुम मेरे साथ आओ। तुम तो मेरे सबसे अच्छे दोस्त और मेरा दॉया हाथ हो जाओगे। मैं लौर्ड हूॅ।" और पीटर उस अजनबी के पीछे पीछे चल दिया।

2 बड़े खरगोश का जिगर

एक बार जीसस और सेंट पीटर एक खेत में से हो कर जा रहे थे कि एक बड़ा खरगोश[21] सब्जियों की एक कतार के पीछे से निकला और जीसस के पैरों के पास आ कर गिर पड़ा।

जीसस बोले — "पीटर जल्दी जल्दी, अपना थैला खोलो और इस बड़े खरगोश को अपने थैले में डालो।"

पीटर ने उस बड़े खरगोश को उठाया और अपने थैले में डाल लिया और जीसस से कहा — "हमने बहुत दिनों से अच्छा खाना नहीं खाया है। इस बड़े खरगोश को तो आज हम भून कर खायेंगे।"

"ठीक है पीटर। आज शाम को हम बहुत अच्छा खाना खायेंगे। और क्योंकि तुम खाना भी बहुत अच्छा बनाते हो इसलिये तुम इस बड़े खरगोश को हमारे लिये बहुत अच्छा ही बनाओगे।"

[21] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal but is much bigger than a rabbit – see his picture above.

वहॉ से चलते चलते वे एक शहर में आये। वहॉ एक सराय का साइनबोर्ड देख कर वे उस सराय में अन्दर घुस गये।

"नमस्ते।"

"नमस्ते।"

जीसस सराय के मालिक से बोले — "हमारे लिये आधी बोतल शराब लाओ।"

फिर वह पीटर से बाले — "और पीटर इस बीच तुम यह बड़ा खरगोश भून लाओ।"

सेंट पीटर तो मास्टर था। उसके पास एक चाकू था जिसको वह हमेशा अपने साथ रखता था। उसने वह चाकू निकाला और उसको एक पत्थर पर घिस कर तेज किया। फिर उसने बड़े खरगोश की खाल निकाली, उसे काटा और एक कढ़ाई में डाल दिया।

जैसे जैसे वह बड़ा खरगोश पकना शुरू हुआ तो उसके पकने की खुशबू से सेंट पीटर के मुॅह में पानी आने लगा।

"ओह कितना बढ़िया और मोटा है यह बड़ा खरगोश। यह तो बहुत ही स्वादिष्ट होगा। कितनी अच्छी खुशबू आ रही है इसमें से। बस ज़रा सा इन्तजार और फिर मैं इसको खा कर देखता हूॅ।

यह लो इसका जिगर तो पक गया है। मैं इसको डबल रोटी के साथ खा कर देखता हूॅ। मालिक को इसमें क्या फर्क नजर आयेगा।"

यह कह कर उसने अपना कॉटा उस बड़े खरगोश के जिगर में घुसाया और उसे खा लिया। खा कर उसने जीसस को बुलाया — "मालिक, बड़ा खरगोश पक गया।"

"ओह, पक गया? तो उसको जल्दी यहॉ ले आओ। हम भी तो खा कर देखें कैसा बना है।"

एक हाथ से कढ़ाई पकड़े और दूसरे हाथ से अपनी मूँछों पर से चिकनाई साफ करते हुए पीटर जीसस के पास आया। उसने आधा बड़ा खरगोश जीसस की प्लेट में रख दिया और बाकी का आधा अपनी प्लेट में रख लिया।

दोनों ने खाना शुरू किया तो जीसस ने अपनी प्लेट में चारों तरफ देखना शुरू किया। फिर वह बोले — "पीटर, इसका जिगर कहॉ है?"

"हे भगवान, मुझे नहीं मालूम मालिक कि इसका जिगर कहॉ है। मैंने तो इस पर ध्यान ही नहीं दिया। पर वह तो मेरी प्लेट में भी नहीं है। हो सकता है मालिक कि इस बड़े खरगोश के जिगर ही न हो।"

जीसस फिर से अपना कॉटा उठाते हुए मुस्कुरा कर बोले — "हो सकता है कि इसके जिगर ना ही हो।"

पर जीसस से यह सुनने के बाद पीटर के गले से फिर दूसरा कौर नीचे नहीं उतरा।

यह देख कर जीसस ने पीटर से पूछा — "क्या बात है पीटर तुम कुछ खा नहीं रहे क्या तुमको भूख नहीं है? शायद तुम्हारे पेट पर जिगर बैठा हुआ है।"

"क्या? मेरे पेट के ऊपर जिगर बैठा हुआ है?"

"पर मैं तुमको बिल्कुल भी गलत नहीं ठहरा रहा हूँ। खाओ खाओ बड़ा खरगोश बड़ा स्वादिष्ट बना है।"

"मालिक, मैं नहीं खा सकता। मेरे यहाँ पर कुछ अटका हुआ है। मैं तो बस एक गिलास शराब ही पियूँगा।"

उस रात पीटर की एक पल को भी आँख नहीं झपकी। वह सारी रात जागता ही रहा। सुबह को जब उसकी ज़रा सी आँख लगी भी तो जीसस ने उसको जगा दिया।

"उठो पीटर उठो हमें चलना भी है।"

जीसस चाहते थे कि वे वहाँ से सुबह जल्दी ही चल सकें ताकि दूसरे शहर दोपहर से पहले ही पहुँच जायें। पीटर अभी भी उस बड़े खरगोश के जिगर के बारे में सोच रहा था। वह यह सोच कर डर रहा था कि मालिक को उसके बारे में पता चल गया था।

दोपहर को जब वे दूसरे शहर पहुँचे तो उन्होंने वहाँ आँखें झुकाये हुए दुखी चेहरे देखे। जैसी कि हर शहर की खासियत थी वहाँ उन्होंने कोई खुशी मनाता नहीं देखा।

सेंट पीटर आश्चर्य से बोला — "मालिक, यह सब यहाँ क्या हो रहा है?"

जीसस बोले — "किसी से पूछो पीटर।"

वहीं से एक सिपाही जा रहा था तो पीटर ने उसको रोक कर पूछा — "क्यों भाई क्या बात है यहॉ सब दुखी से क्यों दिखायी दे रहे है?"

सिपाही ने बताया कि यहॉ के राजा की बेटी की तबियत इतनी खराब है कि सारे डाक्टरों ने उसके इलाज की सारी उम्मीदें छोड़ दी हैं। पर राजा ने सोने के काउन से भरा एक थैला उसको देने का वायदा किया है जो उसकी बेटी को ठीक कर देगा।

जीसस पीटर से बोले — "सुनो पीटर, मैं चाहता हूॅ कि वह काउन का थैला तुम जीत लो। तुम अपना चाकू लो और राजा के महल चले जाओ। वहॉ जा कर राजा से कहो कि तुम एक बहुत ही मशहूर डाक्टर हो।

और जब तुम राजा की बेटी का इलाज करने के लिये उसके साथ अकेले हो तो उसका सिर काट लो। उस सिर को तुम एक घंटे तक पानी में भिगो कर रखो। फिर उसको निकाल कर राजा की बेटी के सिर पर फिर से रख दो। इससे वह ठीक हो जायेगी।"

पीटर सीधा राजा के पास गया और उसने वैसा ही किया जैसा जीसस ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने उससे जा कर कहा कि वह एक बहुत मशहूर डाक्टर है और उसकी बेटी का इलाज करने आया है। राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ।

राजा उसको अपनी बेटी के कमरे में ले गया तो उसने राजा से उसको उसकी बेटी के कमरे में अकेले छोड़ देने के लिये कहा। राजा उसको वहॉ अकेला छोड़ कर बाहर चला गया।

जैसे ही पीटर राजा की बेटी के साथ अकेला रह गया तो उसने अपना चाकू निकाला और राजा की बेटी का सिर काट लिया। इससे राजा की बेटी का बिस्तर खून से भर गया। उसने उसका सिर पानी की एक बालटी में डाल दिया और वहॉ एक घंटे तक इन्तजार करता रहा।

एक घंटे बाद दरवाजे पर ज़ोर ज़ोर से खटखटाने की आवाज आयी "दरवाजा खोलो।"

पीटर बोला — "ज़रा रुको एक मिनट।" उसने तुरन्त ही सिर पानी में से बाहर निकाला और लड़की के कन्धों पर रखा पर वहॉ तो कुछ भी नहीं हुआ। वह तो वहॉ चिपक ही नहीं रहा था।

इधर पीटर का डर हर पल बढ़ता जा रहा था, उधर दरवाजे पर खटखटाहट की आवाज बढ़ती जा रही थी।

राजा ने हुक्म दिया — "दरवाजा खोलो।"

"उफ़ मैं क्या करूँ? मैं अव क्या करूँ?"

राजा के लोगों ने दरवाजा तोड़ दिया और राजा कमरे के अन्दर आया। बिस्तर पर इतना सारा खून देख कर तो वह चिल्ला पड़ा — "ओ बेरहम, यह तूने क्या किया? तूने मेरी बेटी का खून कर दिया? तुझको तो मैं फॉसी की सजा दे दूँगा।"

फिर वह अपने चौकीदारों से बोला — "इसके हाथ पैर बॉध लो और इसको घसीटते हुए फॉसी के तख्ते तक ले जाओ।"

पीटर राजा से दया की भीख मॉगते हुए बोला — "जहॉपनाह, मुझ पर दया करें। मुझे माफ करें।"

"ले जाओ इसको और इसी पल इसको मेरी ऑखों के सामने से दूर कर दो।"

राजा के सिपाही तुरन्त ही राजा का हुक्म बजा लाये। उन्होंने पीटर के हाथ पैर बॉधे और उसको सड़क पर घसीटते हुए फॉसी के तख्ते की तरफ ले चले।

जब पीटर को सड़क पर घसीटा जा रहा था तो पीटर ने सोचा कि मालिक ही उसको इस मुसीबत से छुटकारा दिला सकते हैं। बस उसने यह सोचा कि तभी भीड़ में से एक आदमी निकल कर आया। ज़रा सोचो कि वह कौन हो सकता था? वह थे जीसस।

जीसस को देखते ही पीटर चिल्लाया — "मालिक, मेरी सहायता करो। मुझे बचाओ।"

जीसस ने सिपाहियों से पूछा — "तुम लोग इसको कहॉ ले जा रहे हो?"

"फॉसी के तख्ते पर।"

"क्या किया है इसने?"

"क्या किया है इसने? इसी से पूछो कि क्या किया है इसने। इसने राजा की बेटी की हत्या की है। इसने यह किया है।"

"ऐसा नहीं है। इसने राजा की बेटी की हत्या नहीं की। इसको जाने दो। बल्कि इसको तो राजा के पास उसका सोने के काउन का थैला लेने के लिये ले जाओ। राजा की बेटी मरी नहीं है वह तो ज़िन्दा है और तन्दुरुस्त है।"

यह सुन कर सिपाही तो बहुत आश्चर्य में पड़ गये और तुरन्त ही राजा के पास भागे गये। वहॉ जा कर देखा तो राजकुमारी तो अपने महल के छज्जे पर ठीकठाक खड़ी थी।

पीटर को देखते ही राजा उसके पास दौड़ा आया और सोने के काउन का थैला उसको दे दिया। पीटर हालॉकि उस समय काफी बूढ़ा था पर फिर भी उसने आपमें इतनी ताकत महसूस की कि उसने उस सिक्के के थैले को ऐसे उठा लिया जैसे कि वह कोई पंख हो।

उस थैले को उसने अपने कन्धे पर डाला और उधर की तरफ चल दिया जहॉ जीसस उसका इन्तजार कर रहे थे।

"अब तुमने देखा पीटर?"

"अब आप मुझसे कहने वाले हैं कि मैं कितना बेकार का आदमी हूँ।"

"यह पैसा मुझे दे दो और फिर हम इसको और बार की तरह बॉट लेंगे।"

पीटर ने वह थैला नीचे रख दिया और जीसस ने उसके ढेर बनाने शुरू कर दिये। "ये पॉच मेरे लिये और ये पॉच तुम्हारे लिये और ये पॉच उस दूसरे के लिये... ।" और वह इसी तरह से सिक्के बॉटते रहे।

पीटर ने कुछ देर तक तो देखा फिर जब उससे न रहा गया तो उसने जीसस से पूछा — "मालिक हम तो यहॉ दो ही हैं तो फिर आप यहॉ ये तीन ढेर क्यों बना रहे हैं?"

"क्या पीटर तुम इतनी जल्दी भूल गये? यह एक ढेर मेरे लिये है, यह एक ढेर तुम्हारे लिये है और यह तीसरा ढेर उस तीसरे के लिये है।"

"और यह तीसरा कौन है?"

"जिसने बड़े खरगोश का जिगर खाया।"

पीटर जल्दी से बोला — "लेकिन मालिक वह तो मैंने खाया था।"

जीसस बोले — "तो आखिर मैंने तुमको पकड़ ही लिया। पीटर, तुमने गलती की। जो डर मैंने तुम्हारे दिल में पैदा किया वही तुम्हारी सजा है। मैं अभी तो तुमको माफ करता हूॅ पर आगे ऐसा नहीं करना।" पीटर ने वायदा किया कि वह अब ऐसा फिर कभी नहीं करेगा।

3 खातिरदारी[22]

एक बार पहाड़ों की सड़कों पर काफी लम्बी यात्रा के बाद एक शाम जीसस और सेंट पीटर एक स्त्री के घर के सामने रुके और रात भर के लिये शरण माँगी।

स्त्री ने उनको ऊपर से नीचे तक देखा और बोली — "मुझे खानाबदोशों के साथ कोई लेना देना नहीं है।"

"पर मैम हम पर दया कीजिये। हम इस समय कहाँ जायेंगे। हमें केवल रात भर के लिये जगह चाहिये। हम कल सुबह होते ही यहाँ से चले जायेंगे।"

पर उस स्त्री ने उनकी किसी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया और घर का दरवाजा बन्द कर लिया। इस पर पीटर ने मालिक की तरफ दया की नजर से देखा जो पीटर से कह रही थीं "तुम जानते तो हो कि हमें इस स्त्री के साथ क्या करना है।"

पर उसने मालिक की नजर को अनदेखा कर दिया और वे दोनों एक दूसरे घर की तरफ चल दिये जो उनके साथ ज़्यादा मुलायमियत से बर्ताव करता। वह घर कालिख से पुता हुआ था। उसके अन्दर एक स्त्री आग के पास बैठी बैठी सूत कात रही थी।

[22] This story is very similar to a European tale given in the book "Europe Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta in Hindi language – "Bhikhaaree and Rotee".

वहॉ जा कर उन्होंने कहा — "मैम, मेहरबानी कर के क्या आप हमको रात को रुकने की जगह देंगी। हम आज बहुत लम्बी यात्रा कर के चले आ रहे हैं और अब इससे आगे जाने की हम में ताकत नहीं है।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। जो भगवान की इच्छा। आप जरूर ठहरें। इसके अलावा आप इस समय जायेंगे भी कहॉ। अब तो रात भी हो गयी है। बाहर सब जगह अॅधेरा है।

मैं आप लोगों के आराम से ठहरने के लिये जो कुछ भी थोड़ा बहुत इन्तजाम कर सकती हूॅ करती हूॅ। तब तक आप अन्दर आइये और आग के पास बैठिये और बाहर की इस ठंड में थोड़ी गर्मी लीजिये। आप भूखे भी होंगे।"

पीटर बोला — "आप ठीक कह रही हैं।"

इस बीच उस स्त्री ने जिसका नाम कैटिन[23] था कुछ लकड़ियॉ आग में डालीं और रात का खाना लाने चली गयी।

वह उनके खाने के लिये थोड़ा सा मॉस का पानी और बहुत ही मुलायम बीन्स ले आयी। पीटर उनको देख कर बहुत खुश हुआ। वह थोड़ा सा शहद भी ले आयी जो उसने बचा कर रखा हुआ था।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो उसने उनको उनके सोने की जगह दिखा दी। वह एक भूसा बिछी हुई जगह थी। पीटर सन्तोष से उस भूसे पर लेटते हुए बोला "यह बहुत अच्छी स्त्री है।"

[23] Catin – name of the woman who sheltered Jesus and St Peter

अगले दिन कैटिन से विदा लेते समय जीसस ने उस स्त्री से कहा — "मैम आज सुबह जो कुछ भी काम आप शुरू करेंगी वह आप सारा दिन करती रहेंगी।" और इसके बाद वे चले गये।

उनके जाने के तुरन्त बाद ही वह स्त्री अपना सूत कातने बैठ गयी। जीसस के कहे अनुसार वह सारा दिन सूत कातती रही, कातती रही और कातती रही। सूत की शटल आगे पीछे घूमती रही और उसका सारा घर कपड़े से भर गया।

यहॉ तक कि उसका कपड़ा उसके घर के दरवाजे से, खिड़कियों से और यहॉ तक कि घर की छत से भी बाहर निकलने लगा।

दूसरी तरफ उस स्त्री ने जिसने जीसस और पीटर को अपने घर में नहीं ठहराया था उसका नाम जिआकोमा[24] था। उसने देखा कि उसकी पड़ोसन कैटिन के घर से उसका बुना हुआ कपड़ा तो बाहर तक आ रहा था।

यह देख कर वह अपनी पड़ोसन कैटिन के पास गयी और जब तक उसने अपनी पड़ोसन से उसकी पूरी कहानी नहीं सुन ली उसको चैन नहीं पड़ा।

[24] Giacoma – name of the woman who did not let Jesus and St Peter stay in her house

जब उसने सुना कि उसने जिन दो अजनबियों को अपने घर में रुकने के लिये शरण नहीं दी थी उन्होंने ही उसकी पड़ोसन को अमीर बनाया था तो उसने उससे पूछा — "क्या तुमको लगता है कि वे फिर यहाँ वापस आयेंगे?"

"मुझे लगता तो है क्योंकि वे कुछ ऐसा कह रहे थे कि वे केवल नीचे घाटी तक ही जा रहे हैं।"

"ठीक है अगर वे लौट कर आयें तो उनको मेरे घर भेज देना ताकि वे मेरा भी कुछ भला कर सकें।"

"खुशी से।"

अगली सुबह जब जीसस और पीटर उसके घर वापस आये तो कैटिन ने उनसे कहा — "अगर मैं सच कहूँ तो मेरे घर में तो बहुत सारा सामान हो गया। अब मेरे घर में आप लोगों को ठहराने की कहीं जगह ही नहीं है।

आज आप मेरी पड़ोसन जिआकोमा के घर चले जाइये वह आपको आराम से ठहराने की अपनी पूरी कोशिश करेगी।"

पीटर अभी तक उसकी एक बात भी नहीं भूला था। उसने बुरा सा मुँह बनाया और अपने विचार कैटिन को कहने वाला ही था कि जीसस ने उसको कुछ भी कहने से रोक लिया और वे उसकी पड़ोसन के घर चल दिये।

इस बार उस स्त्री ने उनके लिये बहुत ही बढ़िया इन्तजाम कर के रखा हुआ था।

उसने उनका बड़े प्रेम से स्वागत किया और पूछा — "आपकी यात्रा तो अच्छी रही? आप अन्दर आयें। हम लोग गरीब हैं पर हमारा दिल बड़ा है। आइये आग के पास बैठिये और थोड़ी गर्मी लीजिये। मैं आपके लिये अभी शाम का खाना ले कर आती हूँ।"

इस तरह जीसस और पीटर उस रात उस पड़ोसन के घर में सोये। अगली सुबह जब वे जाने के लिये उससे विदा लेने लगे तो वह स्त्री अभी भी उनके सामने झुक रही थी और उनके सामने की जमीन पर झाड़ू लगा रही थी।

उन्होंने उससे भी चलते समय वही कहा जो उन्होंने कैटिन से कहा था कि वह भी उस सुबह जो काम भी शुरू करेगी वह वह सारा दिन करती रहेगी और वे चले गये।

पड़ोसन जिआकोमो अपनी बाँहें चढ़ाती हुई मुस्कुराती हुई बोली — "अब मैं देखती हूँ कि मैं क्या कर सकती हूँ। मैं अपनी उस पड़ोसन से दुगुना कपड़ा बुन कर दिखाऊँगी। पर इससे पहले कि मैं कपड़ा बुनने बैठूँ ताकि मुझे कोई बीच में परेशान न करे मैं ज़रा बड़ा काम[25] कर आऊँ।"

सो वह बाहर चली गयी और अपना काम करने लगी। पर यह क्या? वह तो रुक ही नहीं पा रही थी।

[25] To relieve herself through evacuation

"हे भगवान, यह मुझे क्या हो गया है। ऐसा कैसे हो रहा है कि मैं इसको रोक ही नहीं पा रही हूँ। मैने ऐसा तो कुछ नहीं खाया जो मुझको इतना बीमार बना दे। ओ ऊपर वाले, यह सब क्या हो रहा है।"

आधे घंटे बाद उसने वहाँ से उठ कर अपने कपड़ा बुनने की मशीन पर आने की कोशिश की पर उसको फिर से वहीं जाना पड़ गया। वह सारा दिन वहीं बैठी रही। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसका "वह" बहुत बड़ी जगह नहीं फैला।

4 कूटू

एक बार शाम के समय तीन पसीने से तर धूल से भरे हुए लोग रास्ता भूल गये। घूमते घूमते वे एक गाँव में आये। उस समय वहाँ के लोग अपने अपने आँगन में अपने खेती की उपज में से दाने निकाल रहे थे। उनकी भूसी अभी भी हवा में उड़ रही थी।

वहीं पर एक स्त्री भी दानों में से भूसा उड़ा रही थी। उन तीनों ने उस स्त्री से पूछा — "मालकिन। क्या आप हमको आज रात भर ठहरने की जगह देंगी?"

वह स्त्री एक विधवा थी। उसने उनको अन्दर बुलाया, खाना खिलाया और कहा कि वे भूसा रखने की जगह में सो सकते थे अगर वे यह वायदा करें कि वे उसको अगले दिन उसका अनाज ठीक करने में सहायता कर देंगे तो। और वे सोने चले गये।

अगले दिन दिन निकालने के समय जब पीटर ने मुर्गे के बॉग देनी की आवाज सुनी तो बोला — "उठो अब हमें उठना चाहिये। हमने उसका खाना खाया है तो हमें उसका काम भी करना चाहिये।"

जीसस बोले — "चुप रहो और सो जाओ।"

पीटर ने करवट बदली और सो गया। वे वापस सोये ही थे कि वह विधवा हाथ में एक डंडी ले कर वहॉ आयी और बोली — "क्या तुम लोग यह सोचते हो कि तुम लोग मेरा खाना खा पी कर और यहॉ सो कर जजमैन्ट डे[26] तक काम करने से बच जाओगे?"

कह कर उसने पीटर की पीठ पर एक डंडी मारी और वहॉ से तूफान की तरह चली गयी। पीटर अपनी पीठ सहलाता हुआ बोला — "आपने देखा कि मैं कितना ठीक था? चलिये अब तो उठिये और काम पर चलिये नहीं तो वह स्त्री हम सबको मारेगी।"

जीसस ने एक बार और कहा — "चुप रहो और सो जाओ।"

"यह तो बहुत अच्छा है। पर अगर वह फिर से वापस आयी तो वह तो मुझे ही मारेगी न।"

जीसस बोले — "अगर तुम एक स्त्री से डरते हो तो तुम इधर आ जाओ और जौन[27] को उधर सोने दो।"

---

[26] Judgment Day – it is the final and eternal judgment by God of the people in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

[27] John is the name of another disciple of Jesus. See the names of Jesus' disciples at the end of this book.

सो उन्होंने आपस में अपनी जगह बदल ली और वे तीनों फिर से सो गये। वह विधवा हाथ में अपनी डंडी ले कर फिर वहॉ वापस आयी — "अरे तुम लोग अभी तक उठे नहीं?"

न्याय से सबको मारने के लिये अबकी बार उसने बीच वाले आदमी को मारा। यह फिर पीटर था क्योंकि अब वह जौन की जगह लेटा हुआ था।

पीटर कराहता हुआ बोला — "यह क्या कि हमेशा मैं ही पिटता हूँ।"

उसको शान्त करने के लिये जीसस ने अबकी बार उसकी जगह अपनी जगह से बदल ली और उससे कहा कि अब वह सबसे ज़्यादा सुरक्षित जगह पर सोया हुआ था। उसके बाद वे सब फिर सो गये।

वह स्त्री फिर से अपनी डंडी ले कर वहॉ आयी और बोली — "तुम लोग तो उठ ही नहीं रहे हो। अबकी बार तुम्हारी बारी है।"

और पीटर एक बार फिर से पिट गया क्योंकि वह जीसस की जगह सो रहा था।

वह भूसे में से बाहर निकल आया और बोला — "मालिक को कहने दो जो वह कहते हैं अब मैं यहॉ नहीं रुक रहा।"

कह कर वह बाहर ऑगन में भाग गया और जा कर उस स्त्री से उसका काम ले लिया और उससे दूर जा कर उसका काम करने लगा।

कुछ देर बाद जीसस और सेंट जौन आये और उन्होंने भी पीटर के साथ काम करवाना शुरू कर दिया। पर जीसस ने दूसरों को चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "मुझे एक जलती हुई लकड़ी चाहिये।"

उनको एक जलती हुई लकड़ी ला कर दे दी गयी। जीसस ने उस लकड़ी से उस काम करने की जगह में चारों तरफ आग लगा दी। सारा भूसा जल कर खाक हो गया।

तुम क्या सोच रहे हो कि सारा अनाज और भूसा या और भी जो कुछ वहॉ पड़ा था वह सब जल कर खाक हो गया और वहॉ आग बुझने के बाद केवल राख ही रह गयी?

नहीं नहीं। वहॉ तो अब उसका सब अनाज ठीक से बन गया था। भूसा आदि सब अलग अलग हो गया था और अनाज अलग हो गया था। उन तीनों ने उस विधवा के धन्यवाद का भी इन्तजार नहीं किया और वे उसके ऑगन से निकल कर अपने रास्ते चले गये।

पर उस विधवा ने जो अभी भी मजबूत और लालची थी वहॉ का सारा फर्श साफ किया अनाज के दाने तौले और वहॉ के फर्श में फिर से आग लगा दी पर इस बार तो आग की लपटों ने उसका सारा अनाज पौप कौर्न की तरह से भून दिया।

वह स्त्री बेचारी रोती हुई उन तीनों खानाबदोशों को पकड़ने के लिये गॉव के बाहर भाग गयी। कुछ देर में ही उसने उनको पकड़ लिया और उनके पैरों में गिर पड़ी और अपनी घटना बतायी।

क्योंकि वह सचमुच में ही पछता रही थी इसलिये जीसस ने पीटर से कहा — "जाओ और इस स्त्री का जितना सामान बचा सकते हो उतना सामान बचाओ और इसको दिखादो कि बुराई के बदले अच्छाई कैसे की जाती है।"

सेंट पीटर उसकी काम करने की जगह पहुँचा और वहॉ जा कर उसने क्रास का निशान बनाया। आग बुझ गयी और भुना हुआ अनाज फिर से अनाज के रूप में बदल गया।

जो अनाज काला पड़ गया था या बेशक्ल का हो गया था या टूट गया था या अनाज की तरह दिखायी नहीं देता था वह सारा अनाज सेंट पीटर के आशीर्वाद से सब सामान्य अनाज में बदल गया।

बाकी बचे छोटे नुकीले टुकड़े काले कूटू के दानों में बदल गये। धरती पर ये पहले कूटू के दाने थे।

4 जीसस और सेंट पीटर सिसिली में[28]

ईसाई धर्म की जीसस और सेंट पीटर की यहॉ छोटी छोटी पॉच लोक कथाऐं दी जाती हैं जो इटली के सिसिली टापू पर बहुत मशहूर हैं।

1 पत्थरों से रोटी

जब जीसस अपने बारह अपोसिल्स[29] के साथ दुनियॉ में इधर उधर घूम रहे थे तो एक बार उनके पास खाने के लिये रोटी नहीं थी। सबको बहुत भूख लगी थी।

जीसस ने सबसे कहा — "तुम सब लोग नीचे से एक एक पत्थर उठा लो।" सब अपोसिल्स ने नीचे से एक एक पत्थर उठा लिया। सब अपोसिल्स ने बड़े बड़े पत्थर उठाये जबकि सेंट पीटर ने एक सबसे छोटा पत्थर उठाया।

सब फिर अपने सफर पर आगे बढ़ गये।

बड़े बड़े पत्थर उठाने की वजह से सबके पास बहुत बोझा था सो सब झुक कर चल रहे थे। पर क्योंकि सेंट पीटर के पास बहुत ही छोटा पत्थर था इसलिये न तो उसके पास बोझा था और न ही वह झुक कर चल रहा था। वह बड़े आराम से चल रहा था।

[28] Jesus and St Peter in Sicily. A folktale from Italy from its Palermo area. Adapted from the book "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980.
[29] Apostles – Jesus Christ had 12 Apostles. See their names at the end of this book.

चलते चलते वे सब एक शहर में आये। वहॉ उन्होंने डबल रोटी खरीदने की कोशिश की पर वहॉ किसी के पास भी डबल रोटी नहीं थी।

तब जीसस बोले — "मैं तुम लोगों को आशीर्वाद दूँगा और तुम्हारे ये पत्थर के टुकड़े डबल रोटी बन जायेंगे।"

कह कर उन्होंने आशीर्वाद दिया और सब अपोसिल्स के पास खाने के लिये खूब सारी डबल रोटी हो गयी। पर क्योंकि सेंट पीटर ने पत्थर का एक बहुत ही छोटा टुकड़ा उठाया था तो उसके पास डबल रोटी का एक बहुत ही छोटा सा टुकड़ा था।

सेंट पीटर ने जीसस से पूछा — "और मेरा खाना मालिक?"

जीसस बोले — "मेरे भाई, तुमने इतना छोटा सा पत्थर क्यों उठाया? और लोगों ने कितने बड़े बड़े पत्थर उठाये तो देखो कि उनके पास कितना सारा खाना है।"

सेंट पीटर बेचारा चुप रह गया। वे फिर आगे चल दिये। आगे चल कर जीसस ने फिर उन सबको पत्थर उठाने को कहा।

इस बार चालाक पीटर ने एक चट्टान उठा ली जिसको वह मुश्किल से उठा सकता था। उसको ले कर चलने में उसको बहुत परेशानी हो रही थी। पर दूसरे लोगों ने हल्के पत्थर उठाये थे सो वे लोग अपने हल्के पत्थर ले कर आसानी से चल रहे थे।

जीसस ने अपने अपोसिल्स से धीरे से कहा — "देखना अब हम पीटर के ऊपर हॅसेंगे।"

चलते चलते वे सब फिर एक शहर में आये। वहॉ तो बहुत सारी डबल रोटियों की दूकानें थीं और उनमें बहुत सारी गर्म गर्म डबल रोटी ओवन से निकल कर तभी तभी आ रही थीं। यह देख कर सारे अपोसिल्स ने अपने अपने पत्थर फेंक दिये और डबल रोटी लेने चल दिये।

सेंट पीटर ने जो अपनी चट्टान के बोझ से दोहरा हुआ चला आ रहा था जब डबल रोटी की इतनी सारी दूकानें देखीं तो वह गुस्से में भर कर वहॉ से चला गया और उसने डबल रोटी की तरफ मुड़ कर देखा भी नहीं।

2 एक बुढ़िया को भट्टी में रखना

वहॉ से वे सब फिर आगे चले तो उनको एक आदमी मिला। सेंट पीटर उसके पास गया और उससे कहा — "देखो अपने जीसस मालिक आ रहे हैं तुम उनसे कुछ मॉग लो।"

वह आदमी जीसस के पास गया और बोला — "मालिक मेरे पिता बूढ़े हैं और बीमार हैं। उनको ठीक कर दीजिये।"

जीसस ने जवाब दिया — "बुढ़ापे के बोझ का तो कोई डाक्टर भी कुछ नहीं कर सकता पर फिर भी तुम ध्यान से सुनो। अगर तुम अपने पिता को किसी भट्टी में डाल दो तो वह एक बच्चा बन कर बाहर आ जायेंगे।"

जैसे ही जीसस ने उससे यह कहा उसने यह कर दिया। वह तुरन्त ही घर दौड़ा गया और अपने बूढ़े पिता को भट्टी में डाल दिया। आश्चर्य, उसमें से एक लड़का निकल आया।

सेंट पीटर को यह घटना देख कर बहुत आनन्द आया। उसने सोचा मैं भी ऐसा ही कर के देखता हूँ कि क्या मैं भी किसी बूढ़े को एक बच्चे में बदल सकता हूँ या नहीं।

तभी उसे रास्ते में एक और आदमी मिला जो जीसस से अपनी मरती हुई माँ का इलाज कराने के लिये आ रहा था। सेंट पीटर ने उसको रास्ते में ही रोक लिया और उससे पूछा — "तुम किसको ढूँढ रहे हो?"

वह आदमी बोला — "मैं मालिक को ढूँढ रहा हूँ। मेरी माँ की उम्र बढ़ती जा रही है और वह बहुत बीमार है। केवल मालिक ही उसको ठीक कर सकते हैं।"

सेंट पीटर बोला — "मालिक तो अभी आये नहीं हैं पर पीटर यहाँ है और वह तुम्हारी सहायता कर सकता है। सुनो तुम्हें क्या करना है। एक भट्टी में आग जलाओ और अपनी माँ को उसमें डाल दो तो वह ठीक हो जायेगी।"

वह गरीब आदमी यह जानता था कि पीटर मालिक का बहुत ही प्रिय और खास आदमी है इसलिये उसने उसका विश्वास कर लिया। वह तुरन्त ही अपने घर भागा भागा गया और अपनी माँ को जलती भट्टी में डाल दिया।

अब ज़रा सोचो कि उस बेचारी बुढ़िया का क्या हुआ होगा? वह बेचारी तो ज़िन्दा ही जल कर मर गयी।

बेटा चिल्लाया — "ओह मैं तो मुश्किल में पड़ गया। इस दुनियॉ का और दूसरी दुनियॉ का भी यह कैसा सेंट है? इसने तो मेरे ही हाथों मेरी ही मॉ को जलवा दिया। अब मैं क्या करूँ?"

वह सेंट पीटर को ढूँढने निकला तो उसको जीसस मिल गये। उसने उनको सब कुछ बताया तो वह यह सब सुन कर बहुत हॅसे।

"पीटर, पीटर, पीटर, यह तुमने क्या किया?"

सेंट पीटर ने उनसे माफी मॉगने की बहुत कोशिश की पर उस आदमी के रोने चिल्लाने की आवाज में उसकी आवाज जीसस को बिल्कुल भी सुनायी नहीं दी।

वह आदमी तो बस चिल्लाये ही जा रहा था — "मेरी मॉ वापस करो, मुझे अपनी मॉ चाहिये।"

उसका रोना सुन कर जीसस उस आदमी के घर गये। उसकी मॉ के लिये आशीर्वाद बोला और उस बुढ़िया को ज़िन्दा किया और ठीक किया।

पीटर को उन्होंने जो सजा देनी चाहिये थी वह उन्होंने उसको नहीं दी।

3 डाकुओं की कहानी

ऐसे ही मालिक जीसस अपने अपोसिल्स के साथ एक बार फिर कभी दुनियॉ में घूम रहे थे कि एक कच्ची सड़क पर उनको रात हो गयी।

जीसस ने पूछा — "पीटर, यहॉ हम लोग अपनी रात कैसे गुजारेंगे?"

सेंट पीटर बोला — "उधर कुछ चरवाहे अपनी भेड़ें चरा रहे हैं वहॉ चल कर देखते हैं। आइये, मेरे साथ आइये।" सो वे सब उन चरवाहों की तरफ पहाड़ी के नीचे की तरफ चल दिये।

वहॉ जा कर सेंट पीटर ने पूछा — "क्या हमको रात भर के लिये सोने की जगह मिल सकती है? हम लोग गरीब यात्री हैं और बहुत थक गये हैं और बहुत भूखे भी हैं।"

चरवाहों के सरदार ने उनको नमस्ते तो की पर उनमें से कोई हिला तक नहीं। वे अपने गूँधे हुए आटे को एक तख्ते पर बेलने की कोशिश कर रहे थे पर उनको यह नहीं लग रहा था कि वे तेरह आदमियों को खाना खिला पायेंगे जबकि वे सभी भूखे थे।

उन्होंने कहा — "उधर वह भूसे का ढेर है आप लोग वहॉ सो सकते हैं।" मालिक और उनके अपोसिल्स ने अपनी अपनी पेटी बॉधी और बिना एक शब्द बोले भूसे के ढेर पर सोने चले गये।

वे लोग अभी मुश्किल से लेटे ही थे कि शोर से उनकी ऑख खुल गयी। वहॉ कुछ डाकू चिल्लाते हुए आ पहुँचे थे "हाथ ऊपर करो, हाथ ऊपर करो।"

चरवाहे उन डाकुओं को बुरा भला कह रहे थे। लोग एक दूसरे को मार रहे थे। चरवाहे इधर उधर भाग रहे थे। डाकुओं ने उनके खेतों पर कब्जा कर लिया तो उन्होंने जानवरों को देखा।

फिर उस भूसे के ढेर को देखा तो वहॉ कुछ लोगों को सोते पाया तो उनसे कहा — "हर एक अपने अपने हाथ ऊपर करो। और बताओ कि आप लोग हैं कौन?"

सेंट पीटर बोला — "तेरह थके और भूखे गरीब यात्री।"

डाकू बोले — "अगर ऐसा है तो बाहर निकलो। खाना तो तख्ते पर बिल्कुल अनछुआ रखा है। चरवाहों के खरचे पर पेट भर कर खाना खाओ क्योंकि हमको तो अपनी जान बचा कर भागना भी है।"

सभी बहुत भूखे थे। अब उनको किसी से खाना मॉगने की भी जरूरत नहीं पड़ी। वे उस तख्ते की तरफ भागे चले गये। पीटर बोला — "डाकुओं की जय हो। वे अपने अमीर होने के मुकाबले में गरीब और भूखे लोगों के बारे में ज़्यादा सोचते हैं।"

अपोसिल्स भी चिल्लाये — "डाकुओं की जय हो।" और सबने मिल कर पेट भर खाना खाया।

4 बोतल में बन्द मौत

एक बार एक बहुत ही अमीर और दयालु सराय वाला था जिसने अपनी सराय के आगे एक साइन बोर्ड लगा रखा था। उसके ऊपर लिखा था "मेरी सराय में आने वाले को खाना मुफ्त"।

सो सारा दिन लोग उसकी सराय में आते रहते थे और वह सब को मुफ्त खाना खिलाता रहता था।

एक बार जीसस और उनके बारह अपोसिल्स भी उस शहर में आये। उन्होंने भी वह साइन बोर्ड पढ़ा तो सेंट थोमस[30] बोला — "मालिक, जब तक मैं अपनी ऑखों से देख न लूँ और अपने हाथों से छू कर महसूस न कर लूँ तब तक मैं किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता। सो चलिये अन्दर चलते हैं।"

सो जीसस और सब अपोसिल्स उस सराय के अन्दर गये। उन्होंने सबने वहॉ खूब खाया और खूब पिया। सराय के मालिक ने भी उनका शाही स्वागत किया।

वहॉ से चलने से पहले सेंट थोमस बोला — "ओ भले आदमी, तुम मालिक से कोई चीज़ क्यों नहीं मॉग लेते?"

सो उस सराय वाले ने जीसस से कहा — "मालिक, मेरे घर में एक अंजीर का पेड़ है पर मैं उस पेड़ की एक भी अंजीर नहीं खा पाता। जैसे ही

[30] St Thomas was one of the four disciples of Jesus who has written one of the four Books of the New Testament Bible. Jesus had twelve Apostles. See the list of the Jesus' twelve Apostles at the end of this book.

वे पकती हैं बच्चे आ जाते हैं और वे सारी अंजीरें खा जाते हैं। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप ऐसा कुछ कर दें कि जो भी उस पेड़ पर चढ़े वह मेरी इजाज़त के बिना नीचे न आ सके।"

जीसस ने कहा — "ऐसा ही होगा।" और पेड़ को वैसा ही आशीर्वाद दे दिया।

अगली सुबह पहले चोर का उस पेड़ से हाथ चिपक गया, दूसरे का पैर चिपक गया और तीसरे का तो सिर ही दो डालियों के बीच फँस गया और वह उसे उनमें से निकाल ही नहीं सका।

जब सराय वाले ने उनको इस तरह पेड़ से चिपके देखा तो उनको नीचे उतारा और उनकी अच्छी पिटायी कर के उनको छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सबको पेड़ के इस गुण के बारे में पता चल गया तो छोटे बच्चे तो उस पेड़ के पास आते ही नहीं थे बड़े भी उस पेड़ से दूर रहने लगे। अब सराय वाला आराम से रह सकता था और अपने पेड़ की अंजीर खा सकता था।

इस तरह सालों गुजर गये। वह पेड़ बूढ़ा हो गया। अब उस पर फल नहीं आते थे। सराय वाले ने एक लकड़ी काटने वाले को उस पेड़ को गिराने के लिये बुलाया।

उसने पेड़ गिरा दिया तो सराय वाले ने उससे पूछा — "क्या तुम मेरे लिये इस पेड़ की लकड़ी की एक बोतल बना सकते हो जो इतनी बड़ी हो कि उसमें एक आदमी घुस जाये?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।" और लकड़ी काटने वाले ने उसके लिये उस पेड़ की लकड़ी की उतनी बड़ी एक बोतल बना दी।

उस बोतल में उस पेड़ की लकड़ी के जादुई गुण आ गये थे – वह यह कि जो कोई भी उस बोतल में घुसता तो वह बिना सराय वाले की इजाज़त के बाहर ही नहीं आ सकता था।

अब वह सराय वाला भी बूढ़ा हो चला था। एक दिन मौत उसको लेने के लिये आया तो वह आदमी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। चलो चलते हैं। पर तुम्हारे साथ जाने से पहले क्या तुम मेरा एक काम करोगे?

मेरे पास एक बोतल है जिसमें शराब भरी हुई है। पर उसमें एक मक्खी पड़ गयी है। अब उस शराब को मैं पी ही नहीं सकता। क्या तुम उसमें कूद कर उस मक्खी को निकाल दोगे ताकि मैं मरने से पहले उस बोतल में से कम से कम एक घूँट शराब तो पी चलूँ।"

"अरे तुम मुझसे बस इतना सा काम करवाना चाह रहे हो? यह तो कुछ भी नहीं मैं अभी करता हूँ।" कह कर मौत उस बोतल में कूद पड़ा। उसके बोतल में कूदते ही सराय वाले ने उस बोतल के मुँह पर डाट[31] लगा दी।

फिर वह मौत से बोला — "बस अब तुम मेरे पास रहोगे और तुम इसमें से कभी भी नहीं निकल पाओगे।"

[31] Translated for the word "Cork" – see its picture above.

मौत तो अब सराय वाले के पंजे में फॅस चुका था सो दुनियॉ में अब किसी को मौत ही नहीं आ रही थी। सब ज़िन्दा थे। अब सब जगह पैरों तक लम्बी सफेद दाढ़ी वाले लोग दिखायी पड़ते थे।

यह बात अपोसिल्स ने भी देखी और जीसस को इसका इशारा किया। जीसस ने आखिर उस सराय वाले के पास जा कर बात करने का इरादा किया।

वह उस सराय वाले के पास गये और उससे कहा — "भाई, क्या तुम सोचते हो कि यह ठीक है कि तुमने मौत को इस तरह से सालों से बन्द कर रखा है?

ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जो बूढ़े होने की वजह से कमजोर हो गये हैं या जो अपनी ज़िन्दगी को घसीट रहे हैं और बिना मौत के ठीक नहीं हो सकते कि उन बेचारे लोगों का क्या होगा?"

सराय वाले ने जवाब दिया — "मालिक, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं मौत को बाहर निकाल दूँ? तब आप मुझसे वायदा कीजिये कि मरने के बाद आप मुझे स्वर्ग भेज देंगे तभी मैं मौत को इस बोतल में से बाहर निकालूँगा।"

जीसस ने सोचा अब मैं क्या करूँ? अगर मैं उसको इस बात के लिये मना कर दूँ तब तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में फॅस जाऊँगा क्योंकि मौत इस बोतल में ही बन्द रह कर किसी को भी नहीं आ

पाायेगी और यह ठीक नहीं है इसलिये जीसस ने कहा — "जैसा तुम चाहते हो ऐसा ही होगा।"

जीसस से यह वायदा ले कर सराय वाले ने वह बोतल खोल दी और मौत को आजाद कर दिया।

इसके बाद सराय वाले को कुछ और साल ज़िन्दा रहने दिया गया। बाद में मौत फिर वापस आया और उसको स्वर्ग ले गया। इस तरह सराय वाला मौत को बोतल में बन्द कर के स्वर्ग गया।

5 सेंट पीटर की मॉ

ऐसा कहा जाता है कि सेंट पीटर की मॉ बहुत ही कंजूस थी। उसने कभी तो दान नहीं दिया और न ही कभी कोई पैसा अपने साथियों पर खर्च किया।

एक दिन जब वह लीक[32] छील रही थी तो एक गरीब औरत उससे भीख मॉगने आयी। उसने उससे कहा — "क्या मुझे कुछ खाने के लिये दोगी?"

सेंट पीटर की मॉ बोली — "जो आता है वह मॉगता ही चला आता है। ठीक है यह लो और अब इसके बाद कुछ और नहीं मॉगना।" कह कर उसने उसको लीक की एक पत्ती दे दी।

[32] Leek is a vegetable like green/spring onions, except that it is much largr and thicker than that. See its picture above.

अगली ज़िन्दगी में जब मालिक ने सेंट पीटर की मॉ को बुलाया तो उसको नरक भेज दिया। स्वर्ग का मालिक सेंट पीटर था। जब वह स्वर्ग के दरवाजे पर बैठा हुआ था तो उसने एक आवाज सुनी।

"पीटर, ज़रा देखो तो मैं कितनी भुन रही हूॅ। बेटा, ज़रा तुम मालिक के पास जाओ और मुझे यहॉ इस आफत से निकालो।"

सेंट पीटर मालिक के पास गया और उनसे कहा — "मालिक, मेरी मॉ नरक में है और वह वहॉ से निकलना चाहती है।"

"क्या? तुम्हारी मॉ ने ज़िन्दगी भर कभी तो कोई अच्छा काम किया नहीं। उसने सारी ज़िन्दगी में लीक की केवल एक पत्ती दान की है।

पर फिर भी तुम यह कर के देखो। उसको लीक की यह पत्ती देना और कहना कि वह इसको पकड़ ले और फिर इस पत्ती के सहारे अपने आपको स्वर्ग तक खींच लाये।"

एक देवदूत[33] उस पत्ती को ले कर नीचे गया और सेंट पीटर की मॉ से बोला "लो इसको पकड़ लो और ऊपर चढ़ आओ। मैं तुमको ऊपर खींचता हूॅ।"

सेंट पीटर की मॉ ने उस पत्ती को पकड़ लिया। जैसे ही वह देवदूत उसको स्वर्ग में खींचने वाला था कि दूसरी गरीब आत्माओं ने जो पीटर की मॉ के साथ नरक में थीं उसको ऊपर जाते हुए देख कर उसकी स्कर्ट पकड़ ली।

[33] Translated for the word "Angel"

इस तरह से वह देवदूत केवल सेंट पीटर की मॉ को ही नहीं खींच रहा था बल्कि उसके साथ और बहुत लोगों को भी खींच रहा था।

तभी वह मतलबी स्त्री चिल्लायी — "नहीं नहीं, तुम सब नहीं। तुम लोग दूर हटो। केवल मैं ही जाऊॅगी स्वर्ग में। तुमको स्वर्ग जाने के लिये एक सेंट पैदा करना पड़ेगा जैसे कि मैंने किया है।"

यह कह कर उसने उन सबको लात मार कर और अपने आपको हिला कर अपने से दूर झटक दिया।

यह करते समय वह खुद भी इतने ज़ोर से हिली कि वह नाजुक सी पत्ती दो हिस्सों में टूट गयी और सेंट पीटर की मॉ फिर से नरक में गिर गयी थी।

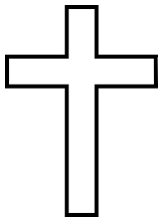

5 फ्रा इगनैज़ियो[34]

फ्रा इगनैज़ियो[35] रोज मौनेस्टरी[36] के लिये भीख मॉगने जाया करता था। वह साधारणतया वहॉ जाता था जहॉ गरीब लोग होते थे क्योंकि वे जो कुछ भी देते थे बहुत खुश हो कर देते थे।

पर एक आदमी था जिसके पास वह कभी नहीं जाता था वह था एक नोटरी[37]। उसका नाम था फ्रैन्चीनो[38]। वह बहुत ही कंजूस था और गरीबों का खून चूसने वाला था।

एक दिन फ्रा इगनैज़ियो ने उस नोटरी को नाराज कर दिया क्योंकि वह उसको छोड़ कर हमेशा ही दूसरे लोगों के घर चला जाया करता था। नोटरी इस बात से नाराज हो गया था तो एक दिन वह मौनेस्टरी में उसके इस बुरे व्यवहार की शिकायत करने गया।

---

[34] Fra Ignazio. Story No 191. A folktale from Italy from its Campidano area. Adapted from the book "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980.

[35] Fra is the short form for Friar – Friar is a religious order in Roman Catholic Church especially in mendicant orders. And Ignazio is his name.

[36] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

[37] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business.

[38] Francino – name of the Notary

उसने फ़ादर से कहा — "फ़ादर, क्या मैं आपको ऐसा लगता हूँ कि मैं किसी से ऐसा व्यवहार कर सकता हूँ कि मैं किसी को भीख भी न दे सकूँ?"

प्रायर[39] बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं फ़ा इगनैज़ियो से बात करूँगा ओर उसको समझा दूँगा।" यह सुन कर नोटरी चला गया।

जब फ़ा इगनैज़ियो मौनेस्टरी में वापस आया तो प्रायर ने उससे पूछा — "तुम्हारा क्या मतलब है नोटरी को छोटा समझने का? कल तुम उसके घर जाओ और वह जो कुछ भी तुमको दे वह सब उससे प्रेम से ले कर आओ।"

फ़ा इगनैज़ियो ने चुपचाप सिर झुकाया और वहाँ से चला गया। अगली सुबह फ़ा इगनैज़ियो नोटरी के घर गया तो नोटरी ने उसका थैला हर अच्छी चीज़ से भर दिया। फ़ा इगनैज़ियो ने वह थैला अपनी पीठ पर लादा और मौनेस्टरी की तरफ चल दिया।

जैसे ही नोटरी के घर के बाहर उसने पहला कदम रखा उस थैले में से एक बूँद ख़ून गिरा, फिर दूसरी बूँद गिरी, फिर तीसरी बूँद गिरी।

उसके पीछे जो लोग आ रहे थे उन्होंने उस थैले में से ख़ून गिरता देखा तो बोले — "आज तो फ़ा इगनैज़ियो के लिये माँस का

[39] Prior – a prior (or prioress for nuns) is a monastic superior, usually lower in rank than an abbot or abbess.

दिन है। आज फादर लोग बदलाव के लिये बहुत बढ़िया दावत खायेंगे।"

फ्रा इगनैज़ियो बिना एक शब्द बोले अपने रास्ते पर चलता रहा और अपने पीछे खून की बूँदों की लकीर छोड़ता रहा।

जब वह मौनेस्टरी पहुँचा तो ब्रदर लोगों ने देखा कि वह तो खून बिखेरता चला आ रहा है तो वे उससे बोले — "ओह, आज तो फ्रा इगनैज़ियो हमारे लिये मॉस ले कर आ रहा है, और वह भी ताजा कटा हुआ।"

फ्रा इगनैज़ियो के अन्दर आने पर उन्होंने उसका थैला खोला पर उसमें तो कोई मॉस नहीं था तो उनके मुँह से निकला — "अरे तो फिर यह खून कहॉ से आया?"

फ्रा इगनैज़ियो बोला — "डरो नहीं। यह खून तो थैले में से बह रहा है क्योंकि फ्रैन्चीनो ने जो भीख मुझे दी है वह उसकी अपनी कमाई की नहीं है बल्कि वह तो गरीबों को लूटा हुआ सामान है जो उनके खून पसीने की कमाई थी।

सो यह खून किसी कटे हुए ताजा मॉस का नहीं है बल्कि उन गरीबों का है जिनकी कमाई उस फ्रैन्चीनो ने छीनी है।"

उस दिन के बाद फादर ने फिर कभी फ्रा इगनैज़ियो को नोटरी के घर भीख मॉगने के लिये नहीं भेजा।

6 औलिव[40]

एक बार एक अमीर ज्यू की पत्नी अपनी बच्ची को जन्म देते ही मर गयी सो उस ज्यू को अपनी नयी पैदा हुई बच्ची को पालने पोसने के लिये एक किसान के पास छोड़ना पड़ा। यह किसान ईसाई था।

पहले तो वह किसान इस बोझ को उठाना नहीं चाहता था। उसने कहा — "मेरे अपने बच्चे हैं और मैं आपकी बच्ची को हिब्रू[41] रीति रिवाजों के अनुसार नहीं पाल सकता।

क्योंकि वह हमेशा मेरे बच्चों के साथ रहेगी और हम लोग तो ईसाई हैं तो उनके साथ रहते रहते वह ईसाई रीति रिवाजों को अपना लेगी और वह आपको अच्छा नहीं लगेगा।"

ज्यू बोला — "कोई बात नहीं। पर बस तुम मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी कर दो कि इसको पाल लो। मैं तुमको इसका बदला जरूर दूँगा।

अगर मैं इसको इसकी दस साल की उम्र होने तक लेने के लिये नहीं आया तो तुम जैसा चाहो इसके साथ वैसा करना। क्योंकि इसका मतलब यह होगा कि शायद मैं फिर कभी नहीं आ पाऊँगा। फिर यह बच्ची हमेशा के लिये तुम्हारे पास ही रह जायेगी।"

---

[40] Olive – a folktale from Montale Pistoiese area, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980,

[41] Hebrew customs and traditions

इस तरह उस ज्यू और उस किसान में यह समझौता हो गया कि वह अपनी बेटी को अगर दस साल की होने तक न ले जाये तो वह उसके साथ जो चाहे करे और वह बच्ची भी फिर उसी के पास रहेगी। इसके बाद वह ज्यू दूर देशों की यात्रा पर अपने काम पर निकल पड़ा।

बच्ची उस किसान की पत्नी की देख रेख में बड़ी होने लगी। वह लड़की इतनी सुन्दर और अच्छी थी कि वह उस किसान को ऐसी लगती थी जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो।

बच्ची बड़ी होने लगी, वह चलने लगी, फिर वह दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगी और फिर जैसी जैसी उसकी उम्र होती गयी वह वैसा वैसा ही काम भी करने लगी। पर किसी ने भी कभी उसको ईसाई धर्म के बारे में नहीं बताया।

उसने हर आदमी को अपनी अपनी प्रार्थना करते सुना पर उसको यह नहीं पता था कि वे लोग किस धर्म की प्रार्थना करते थे। जब तक वह नौ साल की हुई तब तक वह इन सब बातों से बिल्कुल ही अनजान रही।

जब वह दस साल की हुई तो वह किसान और उसकी पत्नी यह आशा करते रहे कि बस अब किसी भी दिन वह ज्यू अपनी बेटी को लेने के लिये आने वाला होगा।

पर उसका ग्यारहवॉ साल भी निकल गया, बारहवॉ भी, तेरहवॉ भी और चौदहवॉ भी पर वह ज्यू नहीं आया। अब किसान को

लगने लगा कि शायद वह मर गया और अब वह कभी अपनी बेटी को लेने नहीं आयेगा।

वह अपनी पत्नी से बोला — "हम लोगों ने काफी इन्तजार कर लिया अब हम इस बच्ची को बैप्टाइज़[42] करा देते हैं।"

सो उन्होंने उसको बड़ी धूमधाम से बैप्टाइज़ करा दिया और ईसाई बना दिया। सारे शहर को बुलाया गया था। उन्होंने उसका नाम औलिव[43] रख दिया। फिर उसको उन्होंने स्कूल भेज दिया ताकि वह वहॉ पढ़ने लिखने के साथ साथ कुछ लड़कियों वाली बातें भी सीख सके।

जब वह अठारह साल की हुई तो वह वाकई में एक बहुत ही अच्छी लड़की बन चुकी थी। उसको सब तौर तरीके आ गये थे और वह बहत सुन्दर भी हो गयी थी। सब उसको बहुत प्यार करते थे।

किसान और उसकी पत्नी भी उसको देख कर बहुत खुश थे और उनके दिमाग में बहुत शान्ति थी। कि एक दिन उनके दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी और उन्होंने देखा कि वहॉ तो वह ज्यू खड़ा था।

वह बोला — "मैं अपनी बेटी को लेने आया हूॅ।"

[42] Baptize – a Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled over his/her head, water is poured over him/her.
[43] Olive

यह सुनते ही मॉ चिल्लायी "क्या? तुम तो यह कह कर गये थे कि अगर तुम दस साल तक नहीं आये तो इसका हम जो चाहे वह कर सकते हैं और फिर यह हमारे पास रहेगी।

इसलिये तबसे यह अब हमारी बेटी है। अब तो यह अठारह साल की हो गयी है अब तुम्हारा इसके ऊपर क्या अधिकार है। हमने इसको बैप्टाइज़ भी करा दिया है और औलिव अब एक ईसाई लड़की है।"

ज्यू बोला — "इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह ईसाई हो या हिब्रू पर बेटी यह मेरी है। मैं इससे पहले आ नहीं सका क्योंकि मैं बस आ ही नहीं सकता था पर यह लड़की मेरी है और अब मैं इसको लेने के लिये आया हूँ।"

सारा परिवार एक आवाज में चिल्लाया — "पर हम उसको तुमको नहीं देंगे। यह निश्चित है।"

काफी लड़ाई झगड़ा हुआ तो ज्यू यह मामला कचहरी में ले कर गया। कचहरी ने उसको लड़की को ले कर जाने की इजाज़त दे दी क्योंकि आखिर वह लड़की तो उसी की थी।

अब उस गरीब किसान और उसके परिवार के पास और कोई चारा नहीं था कि वह कचहरी की बात माने। वे सब खूब रोये और सबसे ज़्यादा तो औलिव ही रोयी क्योंकि अपने असली पिता को तो वह जानती तक नहीं थी और अब उसको एक दूसरे आदमी के साथ जाना पड़ रहा था।

रोते रोते वह उन अच्छे लोगों को छोड़ कर जिन्होंने उसको इतने प्यार से पाला अपने असली पिता के पास चली गयी।

उसको विदा करते समय उसकी मॉ ने "औफिस औफ द ब्लैस्ड वरजिन"[44] की एक किताब उसको दी और कहा कि वह यह कभी न भूले कि वह एक ईसाई है। और इसके बाद वह लड़की चली गयी।

जब वे घर पहुॅचे तो उस ज्यू ने औलिव से पहली बात यह कही — "हम लोग ज्यू हैं और तुम भी। तुम अब वैसा ही करोगी जैसा हम करते हैं। अगर मैंने तुमको कभी भी वह किताब पढ़ते हुए देख लिया जो तुमको उस औरत ने दी है तो बस भगवान ही तुम्हारी सहायता करे।

पहली बार तो मैं उसको आग में फेंक दूॅगा और तुम्हारी पिटाई करूॅगा। और अगर दूसरी बार मैंने तुमको उसको पढ़ते देख लिया तो तुम्हारे हाथ काट डालूॅगा और तुमको घर से बाहर निकाल दूॅगा।

इसलिये ख्याल रखना कि तुम क्या कर रही हो क्योंकि जो मैंने तुमसे कहा है मैं वही करूॅगा इसमें कोई शक नहीं है।"

जब औलिव को इस तरह की धमकी मिली तो वह बेचारी क्या करती। वह बाहर से यही दिखाती रही कि वह ज्यू थी। पर अन्दर अपने कमरा को ताला लगा कर वह "औफिस और लिटैनीज़ औफ ब्लैस्ड वरजिन" पढ़ती।

[44] A copy of the "Office of the Blessed Virgin" – a special type of religious book in Christians

उस समय उसकी वफादार नौकरानी पहरा देती रहती कि कहीं ऐसा न हो कि उसका पिता उसको वह सब पढ़ते देख ले।

पर उसकी सारी सावधानी बेकार गयी क्योंकि एक दिन उस ज्यू ने उसको अनजाने में पकड़ लिया जब कि वह घुटनों के बल झुक रही थी और वह किताब पढ़ रही थी।

बस उसने गुस्से में आ कर उससे वह किताब छीन ली और उसको आग में फेंक दिया और फिर उसको बहुत बेरहमी से मारा भी।

पर इससे औलिव ने हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी नौकरानी को बाजार भेज कर वैसी ही एक और किताब मॅगवा ली और उसको पढ़ना शुरू कर दिया।

पर इस घटना के बाद से ज्यू को शक हो गया था तो वह भी उसके ऊपर बराबर नजर रखे हुए था। आखिर उसने उसको फिर से पकड़ लिया।

इस बार बिना कुछ बोले वह उसको एक बढ़ई के काम करने वाले की जगह ले गया और वहॉ उससे उसकी मेज पर हाथ फैलाने के लिये कहा।

फिर उसने एक तेज़ चाकू लिया और उससे उसके दोनों हाथ काट डाले और उसको एक जंगल में ले जा कर छोड़ आने के लिये कहा।

वहॉ वह लड़की बेचारी मरे हुए से भी ज़्यादा बुरी हालत में पड़ी रही। और अब जब उसके हाथ ही नहीं थे तो वह कर भी क्या सकती थी।

वह वहॉ से उठी और उठ कर चल दी। चलते चलते वह एक बहुत बड़े महल के पास आ निकली। पहले तो उसने सोचा कि वह उस महल के अन्दर जाये और कुछ भीख मॉगे पर उसने देखा कि उस महल के चारों तरफ तो एक चहारदीवारी खिंची हुई है और उसमें कोई दरवाजा नहीं है।

पर उस चहारदीवारी के अन्दर एक बहुत सुन्दर बागीचा था। उस चहारदीवारी के ऊपर से झॉकता हुआ उसको एक नाशपाती का पेड़ दिखायी दे गया जिस पर पकी हुई पीली पीली नाशपाती लदी हुई थीं।

उसके मुॅह से निकला "काश मुझे उनमें से एक नाशपाती मिल जाती। क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे उन तक पहुॅचा जा सके?"

उसके मुॅह से अभी ये शब्द निकले ही थे कि वह दीवार फट गयी और उस नाशपाती के पेड़ की शाखें नीचे झुक गयीं।

वह शाखें इतनी नीचे झुक गयीं कि औलिव जिसके हाथ ही नहीं थे उन शाखों पर लगी नाशपातियों को अपने मुॅह में पकड़ कर खा सकती थी। जब उन नाशपातियों को खा कर उसका पेट भर

गया तो वह पेड़ फिर से ऊँचा हो गया और दीवार भी बन्द हो गयी।

औलिव फिर से जंगल में चली गयी। अब उसको नाशपातियों का भेद पता चल गया था। सो अब वह रोज **11** बजे उस नाशपाती के पेड़ के पास आती और खूब फल खाती और रात बिताने के लिये जंगल वापस लौट जाती।

ये नाशपातियॉ बहुत बढ़िया थीं। एक सुबह उस राजा ने जो उस महल में रहता था नाशपाती खाने की सोची तो उसने अपने नौकर को कुछ नाशपातियॉ लाने के लिये बागीचे में भेजा।

नौकर कुछ दुखी सा लौट कर आया और उसने आ कर राजा को बताया — "मैजेस्टी, ऐसा लगता है कि कोई जानवर इन नाशपातियों को उनके बीज की जगह तक खा रहा है।"

"हम उसको पकड़ने की कोशिश करेंगे।"

राजा ने पेड़ की डंडियों से एक झोंपड़ी बनवायी और रोज रात को वह उसमें लेट कर नाशपाती के चोर को पकड़ने के लिये पहरा देता रहा। पर इस तरह से तो उसकी नींद भी खराब होती रही और चोर भी नहीं पकड़ा गया और नाशपातियॉ भी कोई कुतरता ही रहा। क्योंकि वह चोर रात में तो आता नहीं था।

तो उसने दिन में पहरा देने का विचार किया। दिन के ग्यारह बजे उसने दीवार खुलती देखी। नाशपाती का पेड़ झुकते देखा। औलिव ने पहले एक नाशपाती खायी, फिर दूसरी, फिर तीसरी... ।

राजा ने जो गोली चलाने को तैयार था यह सब देख कर आश्चर्य में अपनी बन्दूक नीचे रख दी। वह तो बस नाशपाती खाती हुई उस लड़की को ही देखता रह गया।

नाशपाती खा कर वह दीवार के बाहर गायब हो गयी थी। उसके जाते ही दीवार भी बन्द हो गयी थी।

उसने अपने नौकरों को तुरन्त ही बुलाया और उनको उस लड़की के पीछे भागने के लिये कहा। भागते भागते वे जंगल में पहुँच गये और वहाँ वह लड़की उनको एक पेड़ के नीचे सोती मिल गयी। वे उसको पकड़ कर राजा के पास ले आये।

राजा ने उससे पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो? और मेरी नाशपाती चुराने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

जवाब में लड़की ने अपने दोनों हाथ आगे कर दिये।

उन हाथों को देख कर राजा के मुँह से निकला — "उफ बेचारी। ऐसा कौन बेरहम आदमी है जिसने तुम्हारे साथ ऐसा किया?"

इस पर उस लड़की ने उसको अपनी पूरी कहानी सुना दी। राजा बोला — "मुझे अब नाशपाती की चिन्ता नहीं है पर मुझे अब तुम्हारी चिन्ता है। चलो तुम मेरे साथ चल कर रहो। मेरी रानी माँ तुमको जरूर ही रख लेंगी और तुम्हारी ठीक से देखभाल भी करेंगी।"

सो औलिव राजा के साथ चली गयी और राजा ने उसको अपनी मॉ से मिलवाया। पर राजा ने मॉ से न तो नाशपाती का जिक्र किया और न ही पेड़ के झुकने का और न ही दीवार के अपने आप खुलने बन्द होने का ही कोई जिक्र किया।

उसको लगा कि उसकी मॉ कहीं उस लड़की को जादूगरनी[45] न समझ ले और उसे बाहर न निकाल दे या उससे कहीं नफरत न करने लगे।

रानी ने औलिव को अपने घर में रखने से इनकार तो नहीं किया पर उसको रखने में कोई रुचि भी नहीं जतायी। वह उसको बहुत थोड़ा सा खाना देती थी। वह भी इसलिये कि राजा उस बिना हाथ वाली लड़की की सुन्दरता की वजह से उसकी तरफ बहुत आकर्षित था।

उस लड़की के बारे में वह राजा क्या सोचता था उन सब विचारों को उसके दिमाग से निकालने के लिये एक दिन मॉ ने अपने बेटे से कहा — "तुम अगर चाहो तो तुमको और कितनी भी सुन्दर सुन्दर राजकुमारियॉ मिल जायेंगीं।

तुम नौकर, घोड़े और पैसा लो और चारों तरफ घूम कर आओ तो तुमको जरूर ही अपनी पसन्द की कोई न कोई राजकुमारी मिल जायेगी।"

[45] Translated for the word "Witch"

मॉ की बात मान कर राजा ने नौकर घोड़े और पैसे लिये और चल दिया राजकुमारी को ढूँढने। वह कई देशों में घूमा।

छह महीने बाद जब वह घर लौट कर आया तो मॉ से बोला — "तुम ठीक कहती थी मॉ। दुनियॉ में राजकुमारियॉ तो बहुत हैं पर तुम मुझसे नाराज न होना मॉ, लेकिन औलिव जैसी दयालु और सुन्दर राजकुमारी और कोई नहीं है। इसलिये मैंने निश्चय किया है कि मैं शादी करूँगा तो औलिव से ही करूँगा।"

मॉ चिल्लायी — "क्या? जंगल से लायी गयी एक बिना हाथ वाली लड़की से तुम शादी करोगे? तुम उसके बारे में कुछ जानते भी तो नहीं। क्या तुम अपने आपको इस तरह से बदनाम करोगे?"

पर उसने मॉ की बात बिल्कुल नहीं सुनी और उससे तुरन्त ही शादी कर ली। रानी मॉ के लिये एक बिना जान पहचान की लड़की को अपनी बहू बना कर घर ले आना बहुत बड़ी बात थी जिसे वह सहन न कर सकी।

वह औलिव के साथ हमेशा ही बहुत बुरा बरताव करती थी पर यह भी ध्यान रखती कि वह राजा के सामने उसके साथ वैसा बर्ताव न करे ताकि कहीं ऐसा न हो कि राजा नाखुश हो जाये। पर औलिव ने राजा की मॉ के खिलाफ राजा से कभी कुछ नहीं कहा।

इसी बीच औलिव को बच्चे की आशा हो आयी। यह जान कर राजा को बड़ी खुशी हुई। पर इत्तफाक से उसी समय उसके एक

पड़ोसी देश के राजा ने उसके राज्य के ऊपर हमला कर दिया तो उसको अपने देश की रक्षा के लिये उससे लड़ने जाना पड़ा।

जाने से पहले वह औलिव को अपनी मॉ को सौंपना चाहता था पर रानी मॉ ने कहा — "मैं यह जिम्मेदारी नहीं ले सकती क्योंकि मैं तो खुद ही यह महल छोड़ कर कौनवैन्ट[46] जा रही हूॅ।"

इसलिये औलिव को उस महल में अकेले ही रहना पड़ा। सो राजा ने उससे उसको रोज एक चिट्ठी लिखने के लिये कहा।

और इस तरह राजा लड़ाई पर चला गया, रानी मॉ कौनवैन्ट चली गयी और औलिव नौकरों के साथ अकेली महल में रह गयी। रोज एक आदमी औलिव की चिट्ठी ले कर महल से राजा के पास जाता था। इस बीच औलिव ने दो बच्चों को जन्म दिया।

उसी समय रानी मॉ की एक बूढ़ी चाची रानी मॉ को महल की खबर देने के लिये कौनवैन्ट गयी। यह जान कर कि औलिव ने दो बच्चों को जन्म दिया है रानी मॉ कौनवैन्ट छोड़ कर महल वापस लौट आयी। उसका कहना था कि वह अपनी बहू की सहायता करने महल वापस आ रही थी।

उसने चौकीदारों को बुलाया और जबरदस्ती औलिव को बिस्तर से उठाया, उसके दोनों हाथों में एक एक बच्चा दिया और उन चौकीदारों से कहा कि वे उसको जंगल में वहीं छोड़ आयें जहॉ राजा ने उसको पाया था।

[46] Convent – the building or buildings occupied by such a society, a monastery or nunnery.

उसने चौकीदारों से कहा — "इसको भूखा मरने के लिये वहीं छोड़ देना। अगर तुम लोग मेरा हुक्म नहीं मानोगे और इस बारे में एक शब्द भी किसी और से कुछ भी कहोगे तो तुम्हारे सिर काट दिये जायेंगे।"

उसके बाद उसने राजा को लिख दिया कि उसकी पत्नी बच्चों को जन्म देते समय मर गयी और साथ में बच्चे भी मर गये।

राजा उसके झूठ पर विश्वास कर ले इसके लिये उसने तीन मोम के पुतले बनवाये और बड़ी शान से शाही चैपल[47] में उनका अन्तिम संस्कार किया और उनको दफन कर दिया।

इस रस्म के लिये उसने काले कपड़े भी पहने और बहुत रोयी भी। उधर राजा भी न तो अपनी लड़ाई से इस बदकिस्मत घटना के लिये घर आ सका और न ही वह इस सब में अपनी मॉ का कोई झूठ देख सका।

अब हम औलिव के पास चलते हैं। वह बेचारी बिना हाथ की अपने दोनों बच्चों को लिये बीच जंगल में भूखी प्यासी पड़ी थी।

वह किसी तरह से अपने दोनों बच्चों को लिये हुए एक ऐसी जगह आ गयी जहॉ एक पानी का तालाब था और वहॉ एक बुढ़िया कपड़े धो रही थी।

[47] Royal Chapel – a private or subordinate place of prayer or worship; oratory.

औलिव बोली — "मॉ जी, मेहरबानी कर के अपने एक पानी से भरे कपड़े को मेरे मुँह में निचोड़ दीजिये। मुझे बहुत प्यास लगी है।"

उस बुढ़िया ने जवाब दिया — "नहीं मैं तुमको पानी नहीं पिलाऊँगी। तुम खुद अपना सिर इस तालाब में झुकाओ और अपने आप पानी पियो।"

"पर क्या आप देख नहीं रहीं कि मेरे हाथ नहीं हैं और मुझे अपने बच्चों को भी अपनी बॉहों में पकड़ना है?"

"कोई बात नहीं। कोशिश तो करो।"

सो औलिव घुटनों के बल झुकी पर जैसे ही वह पानी पीने के लिये तालाब के ऊपर झुकी उसकी दोनों बॉहों से उसके एक के बाद एक दोनों बच्चे फिसल गये और पानी में गायब हो गये।

"ओह मेरे बच्चे, ओह मेरे बच्चे। मेरी सहायता करो मेरे बच्चे डूब रहे हैं।" पर वह बुढ़िया तो हिल कर भी नहीं दी।

वह बोली — "तुम डरो नहीं, वे डूबेंगे नहीं, तुम उनको निकाल कर देखो।"

"पर यह मैं कैसे करूँ मेरे तो हाथ ही नहीं हैं।"

"अपनी बॉहों को तुम पानी में डालो तो।"

औलिव ने अपनी बिना हाथ की बॉहें पानी में डालीं तो उसको लगा कि उसकी बॉहें तो बढ़ रहीं हैं और उसके हाथ फिर से आ

गये हैं। अपने उन हाथों से उसने अपने बच्चे पकड़ लिये और उनको सुरक्षित पानी से बाहर निकाल लिया।

वह बुढ़िया बोली — "अब तुम अपने रास्ते जा सकती हो। अब तुम्हारे पास अपना काम करने के लिये हाथों की कोई कमी नहीं है। बाई।"

इससे पहले कि औलिव उसको धन्यवाद देती वह बुढ़िया तो वहॉ से गायब हो चुकी थी।

शरण की खोज में जंगल में घूमती हुई औलिव अब एक नये घर में आ गयी थी। उस घर का दरवाजा खुला पड़ा था सो वह शरण मॉगने के लिये उस घर के अन्दर चली गयी।

अन्दर जा कर उसने देखा कि घर तो खाली पड़ा था। वहॉ कोई नहीं था और एक चूल्हे के ऊपर एक बर्तन में दलिया उबल रहा था। वहीं पास में कुछ और खाने का सामान भी रखा हुआ था।

सो औलिव ने पहले अपने बच्चों को खाना खिलाया फिर खुद खाया। फिर वह एक कमरे में गयी जहॉ एक बिस्तर लगा हुआ था और दो पालने रखे थे। उसने अपने बच्चों को पालने में सुलाया और वह खुद उस बिस्तर पर लेट गयी और सो गयी।

वह उस मकान में बिना किसी को देखे और बिना किसी चीज़ की जरूरत महसूस करते हुए रहती रही। उसको वहॉ सब कुछ अपने आप ही मिल रहा था।

अब हम राजा के पास चलते हैं। राजा की लड़ाई खत्म हो गयी थी। वह घर लौटा तो उसने देखा कि सारा शहर तो दुख मना रहा है। उसकी मॉ ने उसकी पत्नी और उसके दो बच्चों की मौत पर उसको तसल्ली देने की बहुत कोशिश की पर जैसे जैसे समय बीतता गया वह उसकी कमी से और ज़्यादा दुखी होता गया।

एक दिन अपना दिल बहलाने के लिये उसने शिकार पर जाने का इरादा किया। वह शिकार के लिये जंगल पहुॅचा ही था कि कुछ देर बाद तूफान आ गया और वह तूफान से बचने के लिये कोई जगह ढूॅढने लगा।

तूफान बहुत तेज़ था। राजा ने सोचा — "इस तूफान में तो मैं मर ही जाऊॅगा और फिर बिना औलिव के मैं जी कर करूॅगा भी क्या सो अगर में मर भी जाऊॅ तो क्या है।"

वह यह सब कह ही रहा था कि उसको दूर कहीं बड़ी धुॅधली सी रोशनी चमकती दिखायी पड़ी सो वह शरण पाने की उम्मीद में उधर ही चल पड़ा। चलते चलते वह एक घर के सामने आ गया। वहॉ आ कर उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो औलिव ने दरवाजा खोला।

राजा ने औलिव को पहचाना नहीं और औलिव भी कुछ बोली नहीं। वह राजा को अन्दर ले गयी और आग के पास बिठाया। फिर औलिव और बच्चे उसका दिल बहलाने के लिये उसके साथ खेलते रहे।

राज औलिव को देखता रहा कि उस लड़की की शक्ल औलिव से कितनी मिलती जुलती थी पर यह देख कर कि इसके हाथ तो बिल्कुल सामान्य थे उसने अपना सिर ना में हिलाया कि नहीं यह औलिव नहीं हो सकती।

बच्चे उसके चारों तरफ खेल कूद रहे थे। उनकी तरफ प्यार से देखते हुए वह बोला — "अगर आज मेरे बच्चे ज़िन्दा होते तो वे भी ऐसे ही होते पर वे तो अब मर चुके हैं। उनकी मॉ भी मर गयी है और मैं यहॉ अकेला बैठा हूॅ।"

इस बीच औलिव मेहमान का बिस्तर लगाने के लिये चली गयी। उसने वहीं से बच्चों को बुलाया और उनसे फुसफुसा कर बोली — "जब हम फिर से दूसरे कमरे में वापस जायें तो तुम मुझसे कहानी सुनाने के लिये कहना।

मैं तुमको मना करूॅ या तुमको धमकी दूॅ तभी भी तुम कहानी सुनाने की जिद करते रहना। ठीक?"

"ठीक है मॉ हम ऐसा ही करेंगे।"

जब वे सब फिर आग के पास आ गये तो बच्चे बोले — "मॉ कोई कहानी सुनाओ न।"

"तुम क्या सोचते हो यह कोई समय है कहानी सुनाने का? अब बहुत देर हो रही है और देखो यह हमारे मेहमान भी थके हुए हैं इनको भी तो सोना है। चलो तुम भी सो जाओ।"

"नहीं मॉ कहानी सुनाओ न।"

"अगर तुम चुप नहीं रहोगे तो मैं तुम्हारी पिटाई करूँगी।"

राजा बोला — "बच्चे हैं बेचारे। तुम इतने छोटे बच्चों की पिटाई कैसे कर सकती हो? इनको कहानी सुना दो न। इनको खुश रखा करो। मुझे भी अभी नींद नहीं आ रही है और फिर मैं भी तुम्हारी कहानी सुन लूँगा।"

यह सुन कर औलिव बैठ गयी और उसने कहानी सुनानी शुरू की। धीरे धीरे राजा उस कहानी को गम्भीर हो कर सुनने लगा और जैसे जैसे वह कहानी आगे बढ़ती जाती थी वह उसको सुनने के लिये और ज़्यादा उत्सुक होता जाता था और कहता जाता था "फिर क्या हुआ, फिर क्या हुआ।"

क्योंकि यही कहानी तो उसकी पत्नी की भी थी पर उसकी इतनी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह इतनी बड़ी उम्मीदों के पुल बाँध सकता कि वह उससे यह कह सकता कि तुम ही तो मेरी औलिव हो। क्योंकि उसकी कहानी का वह हिस्सा तो अभी तक आया ही नहीं था जिसमें उसके हाथ ठीक हो जाते हैं।

अन्त में वह रो पड़ा और उससे पूछा — "पर उसके हाथों का क्या हुआ जिन्हें काट डाला गया था?

तब औलिव ने उसको उस बुढ़िया धोबिन वाली घटना बतायी। सुनते ही राजा खुशी से चिल्लाया — "सो वह तुम ही हो?" कह कर उसने औलिव को गले लगा लिया। बरसों के बिछड़े मिल गये।

पर इस खुशी के तुरन्त बाद ही राजा चिन्ता में पड़ गया और बोला — "मुझे तुरन्त ही महल लौट कर अपनी माँ को उसके किये की वह सजा देनी चाहिये जो उनको मिलनी चाहिये।"

औलिव बोली — "नहीं नहीं ऐसा नहीं करो। अगर तुम मुझसे सचमुच प्यार करते हो तो तुम मुझसे वायदा करो कि तुम माँ पर बिल्कुल भी हाथ नहीं उठाओगे। अभी जो कुछ उन्होंने किया है वह इस पर अपने आप ही अफसोस करेंगी।

वह सोच रही होंगी कि वह राज्य की भलाई के लिये नाटक कर रही हैं। उनकी ज़िन्दगी बख्श दो। उनके उन सब कामों के लिये उनको माफ कर दो जो उन्होंने मेरे साथ किये। जब मैंने उनको माफ कर दिया तो तुम भी उनको माफ कर दो।"

सो राजा महल लौट गया और वहाँ जा कर उसने अपनी माँ को कुछ नहीं बताया। माँ बोली — "मैं तुम्हारे बारे में परेशान थी। इस तूफान में जंगल में तुम्हारी रात कैसी बीती?"

"माँ मेरी रात तो बहुत अच्छी बीती।"

माँ को कुछ शक हुआ तो आश्चर्य से बोली — "क्या?"

"हाँ माँ। वहाँ मुझे रात को एक घर मिल गया था। वहाँ बड़े दयालु लोग थे जिन्होंने मुझे आराम से रखा। औलिव की मौत के बाद यह पहला मौका था कि मैं इतना खुश था। पर एक बात बताओ माँ, क्या औलिव सचमुच में मर गयी?"

"इस बात के कहने का क्या मतलब है तुम्हारा? सारा शहर उसके दफ़न पर मौजूद था।"

"मॉ मैं भी उसको एक बार अपनी ऑखों से देखना चाहूँगा और उसकी कब्र पर एक बार फूल चढ़ाना चाहूँगा।"

यह सुन कर रानी को गुस्सा आ गया और वह गुस्से से बोली — "पर यह शक क्यों? क्या एक बेटे का अपनी मॉ की तरफ यही फर्ज बनता है कि वह उसकी बात पर शक करे?"

"छोड़ो भी मॉ, अब बहुत झूठ हो गया। औलिव आओ अन्दर आ जाओ।"

उसने औलिव को अन्दर बुला लिया तो वह अपने बच्चों को साथ ले कर अन्दर आ गयी। रानी जो अब तक गुस्से से लाल पीली हो रही थी डर से सफेद पड़ गयी।

पर औलिव बोली — "नहीं मॉ जी आप डरिये नहीं, हम आपको दुखी करने नहीं आये हैं। हमारे लिये एक दूसरे को पाने की खुशी किसी भी चीज़ से ज्यादा बड़ी है।"

इसके बाद रानी मॉ कौनवैन्ट चली गयी और राजा और औलिव ने अपनी बाकी की ज़िन्दगी खुशी आराम और शान्ति से गुजारी।

7 तीन अनाथ[48]

एक बार एक आदमी था जिसके तीन बेटे थे। एक बार वह आदमी बीमार पड़ा और उसी बीमारी में चल बसा। उसके तीनों बेटे लावारिस हो गये।

एक दिन सबसे बड़े भाई ने अपने दोनों छोटे भाइयों से कहा — "भाइयो मैं घर छोड़ कर अपनी किस्मत आजमाने बाहर जा रहा हूँ।" और यह कह कर वह घर छोड़ कर चला गया।

चलते चलते वह एक शहर में आया और उस शहर की सड़कों पर चिल्लाने लगा — "जो भी मुझे अपनी सहायता के लिये रख लेगा मैं उसको अपना मालिक बना लूँगा।"

उसकी यह आवाज सुन कर एक भला आदमी अपने मकान के छज्जे पर आया और उससे बोला — "अगर हम और तुम आपस में राजी हो जायें तो मैं तुमको अपनी सहायता के लिये रख सकता हूँ।"

वह लड़का बोला — "ठीक है जो चाहे दे देना।"

"पर तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।"

"मैं आपकी हर बात मानूँगा।"

और उस भले आदमी ने उसको अपने पास रख लिया।

---

[48] Three Orphans. A folktale from Italy from its Calabria area.
Adapted from the book: "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980.

अगले दिन उस आदमी ने उस लड़के को बुलाया और कहा — "यह चिट्ठी लो और यह घोड़ा लो। इस पर सवार हो कर इस घोड़े की रास[49] को बिना छुए चले जाओ।

क्योंकि अगर तुमने इस घोड़े की रास छुई तो यह घोड़ा पलट जायेगा और वापस मेरे पास आ जायेगा।

तुमको तो बस उसे कुदाना है। यह घोड़ा जानता है कि इसको कहाँ जाना है और उस जगह का रास्ता भी जानता है। वहाँ जा कर यह चिट्ठी दे आना और वापस आ जाना।"

लड़का अपने मालिक के कहे अनुसार उस घोड़े पर चढ़ गया और चल दिया। घोड़ा कुलाँचें मारता हुआ चल दिया। चलते चलते वह एक गहरी घाटी में आ पहुँचा।

लड़के ने सोचा "मैं यहाँ यकीनन घोड़े से उतर जाऊँगा वरना यह घोड़ा इतनी गहरी घाटी कैसे पार करेगा।"

यह सोच कर उसने उस घोड़े की रास खींच दी। बस फिर क्या था उस आदमी के कहे अनुसार वह घोड़ा पलटा और बिजली की सी तेज़ी के साथ उस आदमी के घर लौट आया।

लड़के को वापस आया देख कर वह आदमी बोला — "सो तुम वहाँ नहीं गये जहाँ मैंने तुमको भेजा था। तुम जा सकते हो। वह

[49] Translated for the word "Reins"

पैसों का ढेर पड़ा है उसमें से चाहे जितना पैसा ले लो और चले जाओ।"

उस लड़के ने उसमें से पैसे उठाये और उनसे अपनी जेबें भर लीं और वहॉ से चल दिया। जैसे ही वह उस घर से बाहर निकला वह सीधा नरक में गिर पड़ा।

अब जो दो भाई घर में रह गये थे उनकी कहानी सुनो। बड़े भाई के जाने के बाद उन दो छोटे भाइयों ने कुछ दिन तो अपने बड़े भाई का इन्तजार किया पर फिर जब वह नहीं आया तो दूसरे नम्बर के भाई ने भी घर छोड़ने और अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया।

वह भी उसी सड़क पर चल पड़ा जिस पर उसका बड़ा भाई गया था। वह भी उसी शहर में आ गया जिसमें उसका बड़ा भाई आया था। उसने भी उस शहर की सड़कों पर चिल्लाना शुरू कर दिया — "जो भी मुझे अपनी सहायता के लिये रख लेगा मैं उसको अपना मालिक बना लूँगा।"

उसकी यह आवाज सुन कर वही भला आदमी अपने मकान के छज्जे पर आया और उससे बोला — "अगर हम और तुम आपस में राजी हो जायें तो मैं तुमको अपनी सहायता के लिये रख सकता हूँ।"

वह लड़का बोला — "ठीक है जो चाहे दे देना।"

"पर तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।"

"मैं आपकी हर बात मानूँगा।"

और उस भले आदमी ने उसको अपने पास रख लिया।

अगले दिन उस आदमी ने उस लड़के को बुलाया और उसको भी वही कहा जो उसके बड़े भाई से कहा था।

"यह चिट्ठी लो और यह घोड़ा लो। इस पर सवार हो कर इस घोड़ी की रास को बिना छुए चले जाओ। क्योंकि अगर तुमने इस घोड़े की रास छुई तो यह घोड़ा पलट जायेगा और फिर मेरे पास ही वापस आ जायेगा।

तुमको तो बस उसे कुदाना है। यह घोड़ा जानता है कि इसको कहाँ जाना है और उस जगह का रास्ता भी जानता है। वहाँ जा कर यह चिट्ठी दे आना और वापस आ जाना।"

पर इस लड़के ने भी बीच रास्ते में उस घोड़े की रास खींच ली और घोड़ा पलट कर वापस घर आ गया।

लड़के को वापस आया देख कर वह आदमी बोला — "सो तुम वहाँ नहीं गये जहाँ मैंने तुमको भेजा था। तुम जा सकते हो। वह पैसों का ढेर पड़ा है उसमें से चाहे जितना पैसा ले लो और चले जाओ।"

उस छोटे भाई ने भी उन पैसों में से कुछ पैसा उठाया और अपनी जेबें भर लीं और वहाँ से चल दिया। जैसे ही वह उस घर से बाहर निकला वह भी सीधा नरक में गिर पड़ा।

जब दो बड़े भाई काफी दिनों तक घर वापस नहीं आये तो सबसे छोटा भाई भी घर छोड़ कर चल दिया। वह भी उसी सड़क पर चल दिया जिस पर उसके दोनों बड़े भाई गये थे।

वह भी उसी शहर में आ पहुँचा जिसमें उसके दोनों बड़े भाई आये थे।

उसने भी चिल्लाना शुरू किया — "जो भी मुझे अपनी सहायता के लिये रख लेगा मैं उसको अपना मालिक बना लूँगा।"

उसकी यह आवाज सुन कर वही भला आदमी फिर अपने मकान के छज्जे पर आया और उससे बोला — "अगर हम और तुम आपस में राजी हो जायें तो मैं तुमको अपनी सहायता के लिये रख सकता हूँ।"

वह लड़का बोला — "ठीक है जो चाहे दे देना।"

"पर तुमको मेरा कहना मानना पड़ेगा।"

"मैं आपकी हर बात मानूँगा।"

और उस भले आदमी ने उसको अपने पास रख लिया।

अगले दिन उस आदमी ने उस लड़के को बुलाया और उसको भी वही कहा जो उसके बड़े भाई से कहा था।

"यह चिट्ठी लो और यह घोड़ा लो। इस पर सवार हो कर इस घोड़ी की रास को बिना छुए चले जाओ। क्योंकि अगर तुमने इस घोड़े की रास छुई तो यह घोड़ा पलट जायेगा और फिर मेरे पास ही वापस आ जायेगा।

तुमको तो बस उसे कुदाना है। यह घोड़ा जानता है कि इसको कहॉ जाना है और यह उस जगह का रास्ता भी जानता है। वहॉ जा कर यह चिट्ठी दे आना और वापस आ जाना।"

घोड़ा कुलॉचें भरता हुआ वहॉ से चल दिया और उसी गहरी खाई की तरफ आ पहुॅचा।

लड़के ने नीचे गहरी घाटी में देखा तो उसके सारे शरीर में एक ठंडी लहर दौड़ गयी। पर उसने सोचा कि अब तो भगवान ही उसकी सहायता करेगा और अपनी ऑखें बन्द कर लीं।

अगले ही पल जब उसने अपनी ऑखें खोलीं तो वह तो उस खाई के दूसरी तरफ पहुॅच चुका था।

घोड़ा भागता ही जा रहा था। अब वह एक नदी के पास आ पहुॅचा। वह नदी क्या थी वह तो समुद्र जितनी चौड़ी थी। उसका दूसरा किनारा तो दिखायी ही नहीं दे रहा था।

वह सोचने लगा अब तो मेरे पास इसमें डूबने के अलावा और कोई चारा ही नहीं है। सो फिर उसने अपनी ऑखें बन्द कीं और भगवान की प्रार्थना की। बस वह नदी तो दो हिस्सों में बॅट गयी और उस घोड़े ने उसे आसानी से पार कर लिया।

घोड़ा फिर भागता गया और अबकी बार वह एक खून जैसे लाल रंग के पानी की नदी के पास आ गया। वह लड़का अबकी बार बहुत घबरा गया

और सोचने लगा कि अबकी बार तो वह यकीनन ही इस नदी में डूब जायेगा।

पर फिर पहले की तरह से उसने भगवान की प्रार्थना की और वह उस नदी में कूदने ही वाला था कि घोड़े के आगे वह नदी पहले की तरह दो हिस्सों में बॅट गयी और घोड़ा उसमें कूदता हुआ उसे पार कर गया।

चलते चलते वे अबकी बार एक ऐसे घने जंगल के पास आ गये जिसमें से घोड़ा तो घोड़ा कोई चिड़िया भी नहीं गुजर सकती थी।

लड़के ने सोचा "यहॉ तो मैं बस मर ही गया समझो।" उसने फिर एक बार भगवान की प्रार्थना की और लो, वह घोड़ा तो उस जंगल में घुस गया। वहॉ वह घोड़ा एक बूढ़े के पास आ कर रुक गया। वहॉ वह बूढ़ा गेंहू की एक पत्ती से एक पेड़ काट रहा था।

उस लड़के ने उस बूढ़े से पूछा — "यह आप क्या कर रहे हैं? क्या आप सोचते हैं कि आप इस गेंहू की पत्ती से यह पेड़ काट पायेंगे?"

वह बूढ़ा बोला — "तुमने अगर एक शब्द और बोला तो मैं इस पत्ती से तुम्हारी गर्दन भी काट दूँगा।"

वह घोड़ा उस लड़के को ले कर आगे बढ़ गया। चलते चलते वे एक ऐसी जगह आये जहॉ आग का एक दरवाजा बना हुआ था जिसके दोनों तरफ एक एक शेर बैठा था।

लड़के ने सोचा यहॉ तो मैं यकीनन जल जाऊँगा। पर फिर उसने सोचा कि अगर मैं जलूँगा तो यह घोड़ा भी तो जलेगा सो बढ़े चलो।

आश्चर्य, घोड़ा उसको भी पार कर गया। उस दरवाजे को पार कर वह घोड़ा एक स्त्री के पास आया। वह स्त्री एक पत्थर पर अपने घुटने टेके हुए प्रार्थना कर रही थी।

यहॉ आ कर वह घोड़ा अचानक ही रुक गया। लड़के को लगा कि वह चिट्ठी शायद इसी स्त्री के लिये थी सो वह चिट्ठी उसने उस स्त्री को दे दी।

उसने उस चिट्ठी को खोला और पढ़ा। फिर उसने नीचे से एक मुट्ठी रेत उठायी और हवा में बिखेर दी। लड़का फिर से अपने घोड़े पर चढ़ा और वापस घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँचने पर मालिक ने जो ईसा मसीह खुद थे उस लड़के से कहा — "वह खाई जो तुमने देखी वह नरक जाने का रास्ता थी। और वह पानी मेरी मॉ के ऑसू थे। वह खून जैसे लाल रंग का पानी मेरे पॉच घावों से बहने वाला खून था।

वह जंगल मेरे ताज के कॉटे थे और वह आदमी जो तुमने गेहूँ के पत्ते से पेड़ काटता देखा वह मौत खुद थी। वह आग का दरवाजा नरक था और वे दो शेर जो उस दरवाजे के दोनों तरफ बैठे थे वे तुम्हारे दोनों भाई थे।

वह झुकी हुई स्त्री जो प्रार्थना कर रही थी वह मेरी मॉ थी।

तुमने मेरा कहना माना इसलिये तुम उस सोने के ढेर में से कितना भी सोना ले जा सकते हो।"

वह लड़का तो बेचारा कुछ भी नहीं चाहता था पर अपने मालिक के कहने पर उसने उस ढेर में से एक सोने का सिक्का उठा लिया और वहॉ से चला आया।

अगले दिन वह बाजार से खरीदारी करने गया तो वह सिक्का उसने वहॉ खर्च कर दिया पर फिर भी वैसा ही एक सिक्का हमेशा ही उसकी जेब में रहा। उसके बाद वह ज़िन्दगी भर आराम से रहा।

8 एक नाव जिसमें...[50]

एक लड़के के माता पिता सेंट माइकिल द आर्कऐन्जिल[51] के बहुत बड़े भक्त थे। उनका कोई साल ऐसा नहीं जाता था जब वे उसकी दावत[52] का दिन नहीं मनाते थे।

कुछ दिनों बाद उस लड़के के पिता मर गये। पर उसकी मॉ के पास जितना भी कम पैसा था उसी से वह सेंट माइकिल का दिन हर साल मनाती रही।

और फिर एक साल ऐसा भी आया जब उसके पास एक पैनी भी नहीं थी और न ही उसके पास कुछ बेचने के लिये ही था जिसको बेच कर सेंट माइकिल की दावत का दिन मनाने के लिये वह कुछ पैसा इकट्ठा कर लेती सो वह अपने बच्चे को बेचने के लिये राजा के पास ले गयी।

"मैजेस्टी, क्या आप मेरा यह छोटा सा बच्चा खरीदेंगे? मैं इसके लिये आपसे केवल बारह काउन[53] मॉग रही हूॅ और या फिर जो कुछ आप देना चाहें। यह मैं सेंट माइकिल का दिन मनाने के लिये मॉग रही हूॅ।"

---

[50] A Boat Loaded With… – a folktale from Italy from its Terra d'Otranto.
Adapted from the book : "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980.

[51] Saint Michael, the Archangel

[52] Feast of Saint Michael

[53] Crown was the currency in use at that time in Europe.

राजा ने उसको सौ सोने के सिक्के दिये और उसके बेटे को अपने पास रख लिया।

उस स्त्री के जाने के बाद वह सोचने लगा — "इस बेचारी स्त्री को देखो इसने सेंट माइकिल का त्यौहार मनाने के लिये अपने बेटे को बेच दिया और एक मैं राजा हूँ और फिर भी मैं उसका त्यौहार नहीं मनाता।"

सो उसने एक चैपल[54] बनवाया, सेंट माइकिल की एक मूर्ति खरीदी और फिर उसका दिन धूमधाम से मनाया। पर जब त्यौहार खत्म हो गया तो उसने उसकी मूर्ति को एक कपड़े से ढक दिया और उसके बारे में फिर कभी सोचा भी नहीं।

उस छोटे लड़के का नाम पैपी[55] था। वह राजा के महल में ही रह कर पलता रहा और राजा की बेटी के साथ खेल खेल कर बड़ा होता रहा।

राजा की बेटी भी उतनी ही बड़ी थी जितना बड़ा पैपी था। वे दोनों हमेशा साथ साथ रहते और साथ साथ खेलते। जब वे बड़े हो गये तो उनकी दोस्ती प्यार में बदल गयी।

राजा की काउन्सिल ने इसे देखा तो राजा को बताया — "मैजेस्टी, यह सब क्या हो रहा है? आप अपनी बेटी की शादी उस गरीब लड़के से तो करने से रहे।"

---

[54] A chapel is a religious place of fellowship, prayer and worship that is attached to a larger, often nonreligious institution or that is considered an extension of a primary religious institution.

[55] Peppi – name of the boy

राजा बोला — "तब मैं क्या करूँ? क्या मैं उसे कहीं भेज दूँ?"

काउन्सिल के लोगों ने कहा — "अगर आप हमारी सलाह मानें तो उसको अपनी सबसे पुरानी नाव में व्यापार करने के लिये भेज दें और उसके कैप्टेन को यह हुक्म दे दें कि वह उस नाव को खुले समुद्र में पहुँच कर डुबो दे। इससे वह भी वहीं कहीं डूब जायेगा और आपकी परेशानी भी खत्म हो जायेगी।"

राजा को यह विचार अच्छा लगा सो उसने पैपी को बुलाया और उससे कहा — "सुनो बेटा, अब तुम बड़े हो गये हो। तुम मेरी एक नाव ले लो और उसको ले कर व्यापार करने चले जाओ। तीन दिन में तुम अपनी नाव में जो कुछ रखना हो वह रख लो।"

पैपी रात भर यही सोचता रहा कि वह नाव में क्या सामान ले कर जाये। वह सारी रात सोचने पर भी कुछ निश्चय नहीं कर पाया। दूसरी रात भी वह यही सोचता रहा पर दूसरी रात भी वह कुछ नहीं सोच पाया। तीसरी रात भी वह यही सोचता रहा पर जब उसको कुछ समझ में नहीं आया तो वह सेंट माइकिल के पास गया।

सेंट माइकिल उसके सामने प्रगट हुए और बोले — "तुम इतने हताश न हो पैपी। राजा से बोलो कि वह तुम्हारी नाव नमक से भर दे।"

सो सुबह होते ही वह खुशी खुशी राजा के पास गया तो राजा ने पूछा — "पैपी तुमने कुछ सोचा कि तुम अपनी नाव पर क्या ले जाना चाहते हो?"

पैपी बोला — "जी मैजेस्टी, आप मेरी नाव नमक से भरवा दें।"

राजा की काउन्सिल के लोग यह सुन कर मुस्कुरा दिये। उन्होंने सोचा यह तो बिल्कुल ठीक है। नमक के बोझ से तो वह नाव अपने आप ही डूब जायेगी। राजा ने पैपी की नाव में नमक भरवा दिया और पैपी उस नमक से भरी नाव को ले कर व्यापार के लिये चल दिया।

उस बड़ी नाव में एक छोटी नाव भी थी। उसको देख कर पैपी ने कैप्टेन से पूछा — "यह क्या है?"

कैप्टेन बोला — "यह मेरी नाव है।"

जैसे ही वे लोग खुले समुद्र में पहुँचे कैप्टेन ने वह छोटी नाव समुद्र में उतारी और उसमें बैठ कर बोला — "गुड नाइट पैपी।" और पैपी को बड़ी नाव के ऊपर अकेला छोड़ कर वह वहाँ से चल दिया।

कुछ ही देर में पैपी की नाव में छेद हो गया और उसकी नाव में पानी भरने लगा और उसको लगा कि उसकी नाव तो उस भयानक समुद्र में अब किसी भी समय डूब सकती थी।

पैपी के मुँह से निकला — "ओ माँ, ओ लौर्ड, ओ सेंट माइकिल, मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो।"

पल भर में ही एक ठोस सोने का जहाज़ वहाँ प्रगट हो गया और उसके किनारे पर सेंट माइकिल खड़े थे। उन्होंने पैपी की तरफ

एक रस्सा फेंका जिसे पैपी ने तुरन्त पकड़ लिया और अपनी नाव को सेंट माइकिल की नाव से बॉध लिया।

सेंट माइकिल की नाव समुद्र पर जल्दी जल्दी चल दी जैसे आसमान पर बिजली दौड़ती है और एक अनजाने से बन्दरगाह पर जा कर रुक गयी।

किनारे पर से आवाजें आयी — "क्या तुम शान्ति में आये हो या फिर लड़ने के लिये आये हो?"

पैपी बोला — "हम शान्ति के लिये आये हैं।"

ऐसा कहने पर वहॉ के लोगों ने उसको अपनी नाव अपने बन्दरगाह पर लगाने की इजाज़त दे दी और वह वहॉ उतर गया।

शाम को उस देश के राजा ने पैपी और उसके साथी को खाने के लिये बुलाया। उसको यह पता नहीं था कि पैपी का साथी सेंट माइकिल थे।

सेंट माइकिल ने पैपी से कहा — "ध्यान रखना कि इन लोगों को यह पता नहीं है कि नमक क्या होता है।" सो पैपी जब वहॉ के राजा के घर खाना खाने गया तो एक थैला नमक उसके लिये ले गया।

वे लोग शाही मेज पर खाना खाने बैठे और खाना खाना शुरू किया पर उस खाने में कोई स्वाद नहीं था। पैपी ने राजा से पूछा — "मैजेस्टी, आपका खाना ऐसा क्यों है?"

राजा बोला — "क्यों इस खाने में क्या बात है? हम लोग तो रोज ऐसा ही खाना खाते हैं।"

इस पर पैपी ने अपने साथ लाया थैला खोला और थोड़ा थोड़ा नमक हर एक के खाने के ऊपर छिड़क दिया और फिर उनको वह खाना खाने के लिये कहा। उन्होंने पहले वह खाना चखा फिर उन्होंने उसके कुछ और कौर खाये तो पैपी ने उनसे पूछा कि उनको वह खाना कैसा लगा।

राजा बोला — "यह खाना तो बहुत स्वादिष्ट है। क्या तुम्हारे पास यह चीज़ काफी है?"

पैपी बोला — "मेरी तो सारी नाव इसी से भरी है।"

राजा ने पूछा — "तुमको इसकी कितनी कीमत चाहिये?"

पैपी बोला — "इसी के बोझ के बराबर सोना।"

राजा बोला — "तो मैं तुम्हारी पूरी नाव ही खरीद लेता हूँ।"

"ठीक है।"

खाना खाने के बाद पैपी ने अपनी नाव से नमक उतरवाया और उसको तुलवाया। तराजू के एक पलड़े में नमक रखा और दूसरे में सोना। इस तरह पैपी ने अपना सारा नमक उतने ही बोझ के सोने के बदले में उस राजा को बेच दिया। फिर उसने अपनी नाव का छेद बन्द किया और वापस अपने देश चल पड़ा।

पैपी के जाने के बाद राजकुमारी अपने दिन छज्जे पर बैठ कर गुजारती थी। वह अपनी दूरबीन लिये बैठी रहती और दूर समुद्र की तरफ देखती रहती कि उसका पैपी कब वापस आयेगा।

जब उसने देखा कि पैपी की नाव वापस आ रही थी तो वह खुशी से अपने पिता के पास दौड़ी गयी — "पिता जी पिता जी, देखिये पैपी वापस आ गया। पिता जी, पैपी वापस आ गया।"

राजा दुखी मन से पैपी को लेने गया। जैसे ही पैपी ने जमीन पर पैर रखा उसने राजा को झुक कर सलाम किया और सारा सोना निकाल कर राजा को दे दिया।

राजा की काउन्सिल के लोग तो यह सब देख कर बहुत ही गुस्सा हो गये क्योंकि उनका तो सारा प्लान ही बेकार हो गया। पैपी तो उतने नमक के बदले उतना ही सोना ले आया था।

उन्होंने राजा से कहा — "यह तो उससे भी ज़्यादा है जो हमने सोचा था।"

राजा बोला — "अब मैं इस बारे में क्या कर सकता हूँ?"

काउन्सिल ने कहा — "इसको एक बार और भेज दीजिये राजा साहब।"

कुछ दिन बाद राजा ने एक दूसरी नाव सामान ले कर भेजने का प्लान बनाया सो उसने पैपी को फिर बुलाया और उससे कहा — "अबकी बार तुम किसी दूसरे सामान के साथ जाने का प्लान बनाओ

क्योंकि तुमको फिर से व्यापार करने जाना है। तुमने पिछली बार बहुत अच्छा व्यापार किया था।"

कुछ सोचने के बाद पैपी ने फिर से सेंट माइकिल को याद किया तो इस बार उन्होंने उसको सलाह दी कि वह अपनी नाव बिल्लियों से भर ले।

जब पैपी ने राजा को बताया कि वह अपनी नाव में बिल्लियॉ ले कर जायेगा तो राजा ने अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि राज्य की सारी बिल्लियॉ राजा के पास लायी जायें राजा सारी बिल्लियों को खरीदना चाहता है।

राजा का हुक्म। राजा के पास बहुत सारी बिल्लियॉ जमा हो गयीं और पैपी उन सब बिल्लियों को अपनी नाव में लाद कर उनके व्यापार के लिये चल दिया।

जब नाव समुद्र में काफी आगे निकल गयी तो उसकी नाव के कैप्टेन ने फिर से उससे कहा "गुड नाइट" और अपनी छोटी वाली नाव में बैठ कर उसको बड़ी नाव में अकेला छोड़ कर वहॉ से चला गया।

पैपी एक बार फिर भौंचक्का सा देखता रह गया। कुछ देर में उसकी नाव में फिर से छेद हो गया और उसकी नाव डूबने लगी। पैपी ने फिर से सेंट माइकिल को याद किया।

पल भर में ही उनकी सोने की नाव फिर से समुद्र की सतह पर प्रगट हुई और उन्होंने एक रस्सी पैपी की तरफ फेंकी। पैपी ने

तुरन्त ही उस रस्सी को पकड़ लिया और पहले की तरह से उससे अपनी नाव बॉध ली। उसकी नाव फिर से बिजली की तेज़ी से बहती हुई एक अनजान बन्दरगाह पर जा कर रुक गयी।

वहॉ भी उन्होंने पैपी से पूछा कि वह शान्ति के लिये आया है या लड़ाई के लिये। पैपी ने कहा "शान्ति के लिये।" तो वहॉ के लोगों ने भी उसको वहॉ उतरने की इजाज़त दे दी और उसका स्वागत किया।

उस टापू पर भी वहॉ के राजा ने पैपी और उसके साथी को अपने यहॉ खाना खाने के लिये बुलाया। पैपी जब वहॉ खाने की मेज पर बैठा तो यह देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि हर आदमी की प्लेट के साथ साथ एक एक झाड़ू रखी हुई थी।

पैपी ने पूछा — "मैजेस्टी, यह झाड़ू किसलिये?"

राजा बोला — यह तुमको अभी एक मिनट में पता चल जायेगा।"

थोड़ी देर में खाना आया तो खाने के साथ आये बहुत सारे चूहे। वे मेज पर रखी प्लेटों पर कूद पड़े। हर आदमी अपने पास रखी झाड़ू से उनको पीट पीट कर भगाने की कोशिश कर रहा था। पर उनको भगाने का यह तरीका कोई ज़्यादा कारगर नहीं हो पा रहा था। सभी मजबूर थे।

सेंट माइकिल ने पैपी से कहा — "तुम अपने साथ जो थैला ले कर आये हो वह खोलो।"

पैपी ने अपने साथ लाया थैला खोला तो उसमें से चार बिल्लियॉ निकल पड़ीं। वे उन सब चूहों पर कूद पड़ीं और उन सबको बहुत जल्दी ही खा गयीं।

राजा तो यह देख कर बहुत खुश हो गया और खुशी से चिल्लाया — "अरे यह तो क्या ही आश्चर्यजनक छोटा सा जानवर है। क्या तुम्हारे पास ये जानवर बहुत सारे हैं?"

लड़के ने जवाब दिया — "हमारी पूरी नाव इन्हीं जानवरों से भरी है।"

राजा ने फिर पूछा — "क्या तुमको इनके लिये बहुत सारी दौलत चाहिये?"

लड़का बोला — "बस इनके तौल के बराबर सोना।"

राजा खुशी से बोला — "बहुत अच्छे।" और राजा ने पैपी की नाव की सारी बिल्लियॉ खरीद लीं। उसने पैपी को सारी बिल्लियॉ तौल कर उनके बराबर सोना दे दिया।

बिल्लियॉ बेच कर और उनके बोझ के बराबर सोना कमा कर वे फिर बिजली की सी तेज़ी से अपने देश वापस आ गये।

राजकुमारी तो पैपी का इन्तजार ही कर रही थी। पैपी को देखते ही फिर उसने भाग कर अपने पिता को बताया कि पैपी अपनी यात्रा से वापस आ गया है।

पैपी को फिर से ज़िन्दा वापस आया देख कर और फिर से नाव भर कर सोना लाया देख कर राजा फिर से दुखी हो गया।

उसकी काउन्सिल के लोग भी कुछ और न सोच सके सिवाय इसके कि राजा को उसको तीसरी बार व्यापार पर भेजने की सलाह दी।

उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि वे दो बार तो फेल हो गये थे पर अबकी बार ऐसा नहीं होगा। उसको एक हफ्ता आराम करने दो फिर उसको तीसरी बार व्यापार के लिये भेज देना।

सो एक हफ्ते के बाद राजा ने उसे फिर व्यापार पर जाने के लिये कहा और सोचने के लिये कहा कि वह अबकी बार क्या सामान ले कर जायेगा।

इस बार सेंट माइकिल ने पैपी को सलाह दी कि वह राजा से अपनी नाव बीन्स से भरवा ले। पैपी ने ऐसा ही किया। राजा ने भी उसके कहे अनुसार उसकी नाव बीन्स से भर दी पर जब नाव बीन्स से भर गयी तो वह डूबने लगी।

पहले की तरह से सेंट माइकिल की सोने की नाव फिर से प्रगट हुई और पैपी को एक और अनजाने बन्दरगाह पर ले गयी।

वहॉ भी जब पैपी से पूछा गया कि वह लड़ाई के लिये आया है या शान्ति के लिये तो उसने जवाब दिया "शान्ति के लिये" सो उसको उस बन्दरगाह पर भी अपनी नाव लगाने की इजाज़त मिल गयी और वहॉ भी उसका स्वागत हुआ।

इस जगह पर एक रानी राज करती थी। इसने भी दोनों को खाना खाने के लिये बुलाया। खाना खाने के बाद रानी ने एक ताश की गड्डी निकाली और बोली — "आओ, हम लोग ताश की एक बाज़ी[56] खेलते हैं।"

उन्होंने लैन्सकैनैट[57] का खेल खेलना शुरू किया। रानी इस खेल की चैम्पियन थी। उसने जितने भी लोगों के साथ यह खेल खेला था उन सबको उसने हरा दिया था और फिर उनको जेल में डाल दिया था। यही वह इनके साथ भी करना चाहती थी लेकिन सेंट माइकिल को तो वह हरा नहीं सकती थी।

जब खेल शुरू हुआ तो रानी को जल्दी ही पता चल गया कि वह अपने इन मेहमानों को नहीं हरा सकती थी बल्कि अगर वह उनके साथ खेलती रही तो वह तो उनसे खुद ही हार जायेगी और अपना सब कुछ गॅवा बैठेगी।

यह सोच कर वह बोली — "मैं तुमसे लड़ना चाहती हूॅ।"

पैपी बोला — "हम तो शान्ति के लिये आये थे लड़ने के लिये नहीं। पर अगर तुम लड़ना ही चाहती हो तो लड़ाई ही सही।"

उन लोगों ने लड़ाई का समय निश्चित किया और रानी ने अपने सारे सिपाही इकट्ठे कर लिये। पैपी और सेंट माइकिल के पास तो कुछ था ही नहीं क्योंकि वे तो शान्ति के लिये गये थे और फिर

[56] Translated for the word "Deal"

[57] Lansquenet is a gambling game of chance

व्यापार के लिये गये थे। सो लड़ाई के मैदान में केवल वे दोनों ही रानी के सारे सिपाहियों के साथ लड़ रहे थे।

यह देख कर सेंट माइकिल ने एक बहुत ही ताकतवर हवा का तूफान पैदा किया जिससे बहुत ही घना धूल का बादल छा गया। वह बादल इतना घना था कि किसी को कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। इसी हालत में सेंट माइकिल रानी की तरफ बढ़े और अपनी तलवार से उसका सिर काट लिया।

जब वह धूल का बादल छँटा तो लोगों ने देखा कि रानी का तो सिर कट चुका है तो सारे लोग खुशी से चिल्ला उठे क्योंकि वहाँ का कोई भी आदमी रानी को पसन्द नहीं करता था।

वहाँ के लोगों ने सेंट माइकिल से कहा — "हम आपको अपना राजा चुनते हैं। हमारा राजा अमर रहे।"

सेंट माइकिल बोले — "मैं तो इस धरती के किसी दूसरे हिस्से का राजा हूँ इसलिये मैं तुम्हारा राजा नहीं बन सकता। तुम लोग आपस में ही किसी को अपना राजा चुन लो।"

उन्होंने रानी का सिर रखने के लिये लोहे का एक पिंजरा बनाया और उस सिर को उस पिंजरे में रख कर एक सड़क के कोने पर टाँग दिया।

पैपी और सेंट माइकिल ने रानी के जेल में बन्द सब कैदियों को आजाद किया। वे सब लोग भूखे थे। उनमें सबमें से बहुत बदबू आ रही थी। वहीं जमीन पर कई लोग मरे हुए भी पड़े हुए थे।

पैपी ने उनके ऊपर एक मुट्ठी भर बीन्स फेंकीं तो सारे लोग उन बीन्स पर टूट पड़े और उनको जानवरों की तरह से खा गये।

बाद में पैपी और सेंट माइकिल ने उनको बीन्स का सूप पीने को दिया और उनको उनके घर भेज दिया। उस जगह बीन्स को कोई जानता नहीं था सो पैपी ने अपनी बीन्स उन लोगों को सोने के बराबर तौल कर बेच दीं।

फिर वहॉ से कुछ सिपाही ले कर वह अपने देश वापस आ गया और तोप छोड़ कर अपने आने की सूचना दी। इस बार सेंट माइकिल की सोने की नाव भी राजा के बन्दरगाह तक आयी थी सो राजा ने सेंट माइकिल का भी स्वागत किया।

शाम को जब सब खाना खाने बैठे तो सेंट माइकिल ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, आपके पास एक मूर्ति है जिसकी आपने केवल एक ही दिन पूजा की और फिर आपने उसको मकड़ी के जाले लगने के लिये छोड़ दिया। आपने ऐसा क्यों किया? शायद आपके पास उसकी पूजा करने के लिये पैसे नहीं थे।"

राजा बोला — "ओह हॉ, शायद वह सेंट माइकिल द आर्कऐन्जिल की मूर्ति थी। मैं तो उसको बिल्कुल भूल ही गया था।"

सेंट माइकिल बोले — "चलिये चल कर अब उस मूर्ति को देखते हैं।" वे लोग चैपल गये तो वहॉ तो उस मूर्ति पर फंगस लगी पड़ी थी।

अजनबी बोला — "मैं ही सेंट माइकिल द आर्कऐन्जिल हूँ और मैं आपसे पूछता हूँ कि मैजेस्टी, आपने इतना गलत काम क्यों किया?"

यह सुन कर राजा तो उनके सामने घुटनों के बल बैठ गया और बोला — "आप मुझे माफ कर दें सेंट माइकिल और आप मुझे बतायें कि मैं आपकी सेवा कैसे कर सकता हूँ। आज के बाद मैं आपका दिन बहुत धूमधाम से मनाऊँगा।"

सेंट बोले — "तुम अपनी बेटी की शादी इस पैपी से कर दो क्योंकि ये दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं।"

और राजा ने सेंट माइकिल की बात मान कर अपनी बेटी की शादी पैपी से कर दी और राजा के मरने के बाद पैपी वहाँ का राजा हो गया।

9 एक बच्चा जिसने क्रास को खाना खिलाया[58]

एक बार की बात है कि एक किसान था जो भगवान को बहुत मानता था और उससे डरता भी था। एक बार उसको अपने खेत में किसी का छोड़ा हुआ एक बच्चा मिल गया।

"बेचारा बच्चा। ऐसा कौन सा आदमी है जो इस नन्हें से बच्चे को यहॉ इसकी किस्मत पर छोड़ गया है। बेटे तू डर नहीं, तू मेरे घर चल मैं तुझे पालूँगा।" और वह उस बच्चे को अपने घर ले आया।

जिस दिन से वह उस बच्चे को अपने घर ले कर आया उस दिन से उस किसान के तो दिन ही बदल गये। उसका सब कुछ बहुत अच्छा हो गया।

उसके पेड़ों पर फल ज़्यादा और अच्छे आने लगे। उसकी गेंहू की फसल भी ज़्यादा और बढ़िया होने लगी। अब उसकी गेहूँ की बालियों में से ज़्यादा अच्छे दाने निकलते थे। उसकी अंगूर की बेलों पर बड़े बड़े, ज़्यादा रसीले और ज़्यादा अंगूर आने लगे थे।

इस तरह उस किसान की सब फसलें बहुत अच्छी होने लगीं और अब उसको अपनी सब फसलों से ज़्यादा आमदनी होने लगी।

[58] The Child Who Fed the Crucifix – a folktale from Italy from its Catania area.
Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". 1980.

उधर बच्चा भी बड़ा होता गया और वह जितना बड़ा होता गया उतना ही अक्लमन्द भी होता गया।

पर इस तरह शहर से बाहर रहने पर उसने कभी कोई चर्च या कोई भगवान की तस्वीर नहीं देखी थी और न ही वह भगवान या किसी सेंट[59] के बारे में जानता था।

एक बार उस किसान को कैटेनिया[60] जाना पड़ा तो उसने बच्चे से पूछा — "क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे?"

बच्चा बोला — "जैसे आप कहें।"

और पिता किसान अपने बच्चे को साथ ले कर कैटेनिया चल दिया। जब वे कैटेनिया के कैथेड्रल[61] आये तो किसान बोला — "मुझे अपना काम करने जाना है तुम इस चर्च में चले जाओ और यहीं मेरा इन्तजार करना जब तक मैं अपना काम खत्म कर के आता हूँ।"

बच्चा उस कैथेड्रल में चला गया। वहाँ उसने सुनहरी धागों से कढ़े कपड़े देखे, फूल देखे, मोमबत्तियाँ देखीं, तो वह बहुत ही खुश हो गया। उसने वैसी चीज़ें पहले कभी नहीं देखी थीं।

वह वहाँ की पूजा की जगह तक चलता चला गया तो वहाँ उसने क्रास देखा। वह पूजा की जगह पर जाने वाली सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठा और क्रास से कहा

[59] Saint – Christians have many saints.
[60] Catania – the name of a place in Italy
[61] Cathedral – a cathedral is the seat, or a bench of Bishop in a Christian church.

— "प्यारे दोस्त, उन्होंने तुमको इस क्रास के ऊपर कीलों से क्यों गाड़ा? क्या तुमने कोई जुर्म किया था?"

उस क्रास पर लगे सिर ने हॉ में अपना सिर हिलाया।

बच्चा बोला — "ओ मेरे दोस्त, अब तुम ऐसा काम कभी नहीं करना। देखो न उसकी वजह से तुम्हें क्या कुछ नहीं सहना पड़ा।"

और लौर्ड जीसस ने फिर हॉ में सिर हिलाया।

इस तरह से वह उस क्रास से काफी देर तक बात करता रहा जब तक वहॉ की सारी पूजाऐं खत्म नहीं हो गयीं।

अब उस कैथेड्रल को बन्द करने का समय आ गया था पर उसको बन्द करने वाले ने देखा कि वह बच्चा तो अभी भी सीढ़ियों पर घुटनों के बल बैठा था। उसने बच्चे से कहा — "उठो बेटा, अब कैथेड्रल बन्द करने का समय हो गया है।"

बच्चा बोला — "नहीं अभी नहीं, अभी तो मैं यहीं हूॅ क्योंकि अगर मैं यहॉ से चला गया तो यह बेचारा यहॉ अकेला रह जायेगा।

पहले तो तुम लोगों ने उसको कीलों से जड़ा और अब तुम उसको यहॉ अकेला छोड़ कर जा रहे हो? क्या यह सच नहीं है मेरे दोस्त कि अगर मैं तुम्हारे साथ यहॉ तुम्हारे पास बैठा रहूॅ तो तुम खुश होगे?"

और लौर्ड ने फिर हॉ में सिर हिला दिया।

बच्चे को जीसस से इस तरह से बात करते देख कर और जीसस को उसके जवाब देते देख कर तो वह कैथेड्रल बन्द करने वाला डर ही गया और वहाँ से भाग लिया।

वह भागा भागा पादरी के पास गया और जा कर उसको यह सब कुछ बताया तो पादरी बोला — "यह जरूर ही कोई पवित्र आदमी[62] है। तुम उसको चर्च में ही छोड़ दो और उसके लिये एक प्लेट मैकेरोनी[63] और थोड़ी सी शराब ले जाओ।

जब वह चर्च बन्द करने वाला उस बच्चे के लिये वहाँ मैकेरोनी और शराब ले कर गया तो बच्चे ने कहा — "तुम यह सब वहाँ रख दो। मैं अभी आता हूँ और खाता हूँ।"

फिर वह क्रास की तरफ घूमा और बोला — "मेरे दोस्त, तुम जरूर ही भूखे होगे। भगवान ही जानता है कि तुमने आखिरी बार खाना जाने कब खाया होगा। लो यह लो, थोड़ी सी मैकेरोनी खा लो।"

कह कर उसने अपनी प्लेट उठायी, पूजा की जगह पर चढ़ा और अपनी प्लेट में से कॉटे से मैकेरोनी उठा उठा कर लौर्ड की तरफ बढ़ाने लगा।

लौर्ड ने अपना मुँह खोला और उसकी दी हुई मैकेरोनी खायी।

---

[62] Translated for the words "Holy Man".

[63] Macaroni – a very common Italian dish made of white flour and cheese and some kind of sauce – tomato or cheese. See its picture above.

कुछ कौर खिलाने के बाद बच्चा बोला — "दोस्त, खाना खा कर क्या तुमको प्यास नहीं लगी? लो यह थोड़ी सी शराब मेरे पास है यह भी पी लो।" कह कर उसने अपना शराब का गिलास लौर्ड के होठों से लगा दिया।

और लौर्ड ने अपना मुँह खोला और उसकी दी हुई शराब पी।

पर जैसे ही उसने लौर्ड को अपना खाना खिलाया और शराब पिलायी वह बच्चा नीचे गिर गया और मर गया। उसकी आत्मा स्वर्ग चली गयी और लौर्ड के गुण गाने लगी।

उधर वह पादरी पूजा की जगह के पीछे छिपा खड़ा यह सब देख रहा था। उसने देखा कि बच्चे ने लौर्ड को खाना खिलाने के बाद अपनी बाँहें एक दूसरे के ऊपर रखीं और उसी समय उसकी आत्मा उसका शरीर छोड़ कर स्वर्ग चली गयी।

पादरी बच्चे के शरीर की तरफ दौड़ा जो पूजा की जगह के सामने बेजान पड़ा हुआ था। उसने बच्चे को छू कर देखा तो वह तो वाकई मर चुका था। तुरन्त ही पादरी ने सारे शहर में यह घोषणा करवा दी कि एक सेंट कैथेड्रल में लेटा हुआ था।

उसने उस बच्चे के लिये एक सोने का ताबूत[64] बनवा दिया और उसके शरीर को उस ताबूत में रख दिया।

[64] Translated for the word "Coffin" in which Christians keep dead bodies to be buried. See the picture above.

यह घोषणा सुन कर शहर का हर आदमी उस सेंट को देखने के लिये कैथेड्रल की तरफ दौड़ गया और अन्दर आ कर उस ताबूत के आगे झुकने लगा। यहाँ तक कि वह किसान भी आया। उसने भी सोने के ताबूत में रखे उस छोटे से शरीर को देखा।

अरे यह तो उसी का बेटा था। वह बोला — "लौर्ड, तुमने ही उसको मुझे दिया था और अब तुमने ही उसे मुझसे ले लिया और उसे सेंट बना दिया।"

यह कह कर वह अपने घर वापस चला गया और हर चीज़ जो वह बच्चा उसके लिये कर गया था वह सफल हुई। वह किसान अब बहुत अमीर हो गया था।

बच्चे के जाने के बाद उसने बहुत सारा पैसा गरीबों में बाँट दिया और अब वह एक भक्त की ज़िन्दगी जीने लगा। जब वह मरा तो उसको भी स्वर्ग में जगह मिल गयी।

10 सेंट ऐन्थोनी की भेंट[65]

यह बहुत पहले की बात है जब दुनियॉ में आग नहीं हुआ करती थी। लोग बहुत ठंड में रहा करते थे। क्योंकि वे उस ठंड को सहन नहीं कर पा रहे थे सो एक दिन वे सेंट ऐन्थोनी के पास गये। सेंट ऐन्थोनी खुद उस समय सहायता मॉगने के लिये रेगिस्तान में गये हुए थे।

सेंट ऐन्थोनी को लोगों पर दया आ गयी। पर आग तो क्योंकि नरक में रहती थी इसलिये उन्होंने नीचे जाने का विचार किया और वहॉ से आग लाने का प्लान बनाया।

सेंट बनने से पहले सेंट ऐन्थोनी सूअरों के झुंड चराया करते थे। उनके सूअरों के झुंड में से एक सूअर का बच्चा उनका बड़ा वफादार था। वह कभी उनका साथ नहीं छोड़ता था। वह जहॉ भी जाते थे वह भी वहीं उनके पीछे पीछे जाता था।

सेंट ऐन्थोनी के पास एक सौंफ की डंडी[66] भी थी सो सेंट ऐन्थोनी अपने उस सूअर के बच्चे और

[65] St Anthony's Gift – a folktale from Italy from its Logudoro area.
Adapted from the book : "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980.

[66] Fennel staff. See Fennel's plant picture above.

सौंफ की डंडी को ले कर नरक की सीढ़ियों पर पहुँचे और जा कर नरक का दरवाजा खटखटाया।

"दरवाजा खोलो। दरवाजा खोलो। मुझे बहुत ठंड लग रही है। मुझे गर्मी चाहिये।"

नरक के दरवाजे पर खड़े शैतानों ने देखा कि यह तो कोई पापी नहीं है बल्कि यह तो एक सेंट है सो वे बोले — "नहीं नहीं। तुम अन्दर नहीं आ सकते। तुम तो एक सेंट हो। हम तुमको जानते हैं। तुम पापी नहीं हो।"

सेंट ऐन्थोनी ने उनसे प्रार्थना की — "पर मुझे अन्दर तो आने दो। मुझे बहुत ठंड लग रही है।" उनका सूअर भी वहीं दरवाजे पर अपना पैर अड़ाये खड़ा रहा।

शैतानों ने कहा — "यह सूअर तो अन्दर आ सकता है पर तुम नहीं।" कह कर उन्होंने बस इतना थोड़ा सा ही दरवाजा खोला जिसमें से केवल सूअर ही अन्दर आ सकता था।

अब जैसे ही सेंट ऐन्थोनी का सूअर नरक के अन्दर गया वह तो सारे नरक में इधर से उधर घूमने लगा, चीज़ें फेंकने लगा, शोर मचाने लगा।

शैतान उसके पीछे जलती हुई डंडियॉ ले कर भागने लगे। वे उसको कुछ कुछ चीज़ें उठा कर मारते भी थे पर वे उसको किसी तरह भी काबू में नहीं कर पा रहे थे।

सब शैतानों को उसने पागल कर रखा था और वे शैतान भी न तो उसको पकड़ ही पा रहे थे और न ही उसको नरक से बाहर निकाल पा रहे थे।

आखिर वे सेंट के पास आये जो अभी भी नरक की सीढ़ियों पर खड़ा था। वे उससे बोले — "तुम्हारा वह सूअर नरक में बहुत शोर शराबा मचा रहा है। अन्दर आ कर उसको बाहर ले जाओ।"

सो सेंट ऐन्थोनी नरक के अन्दर गये और अपने डंडे से सूअर को छुआ। सूअर उसी समय शान्त हो गया।

सेंट ऐन्थोनी बोले — "जब तक मैं यहॉ हूॅ क्या मैं कुछ देर के लिये यहॉ बैठ सकता हूॅ और गमी ले सकता हूॅ?" और वह आग की तरफ अपने हाथ बढ़ा कर एक कौर्क[67] के थैले के ऊपर बैठ गये।

हर कुछ मिनट बाद कोई न कोई शैतान उनके पास से गुजर जाता जो लूसीफ़र[68] को जा कर धरती पर की किसी न किसी आत्मा की खबर ले जा कर उसको देता कि फलॉ शैतान ने फलॉ आत्मा को पाप में लगा दिया। और हर बार सेंट ऐन्थोनी उसकी पीठ पर अपनी सौंफ की डंडी मारते।

[67] Cork is a very light material made of a tree bark grown for commercial use. It can float over water. It is mostly used to make a stopper to bottles but can be used to make many other things.

[68] Lucifer word has been mentioned in KJV of Bible only once, but otherwise has appeared in several Christian religious books – all meaning a good man. Otherwise as a proper noun it refers to Devil.

शैतान बोले — "हमें इस तरह की हॅसी अच्छी नहीं लगती। अपनी डंडी अपने पास ही रखो।"

यह सुन कर सेंट ऐन्थोनी ने अपनी डंडी ऊपर उठायी और उसको उसकी नोक को जमीन की तरफ करते हुए अपने सहारे खड़ा कर लिया।

इतने में एक शैतान चिल्लाता हुआ आया और बोला — "लूसीफ़र लूसीफ़र। एक आत्मा और।" और वह जल्दी में सेंट ऐन्थोनी की डंडी से ठोकर खा कर मुॅह के बल गिर पड़ा।

शैतान बोले — "यह ठीक है। तुमने इस डंडी से हमको काफी परेशान किया है अब हम इस डंडी को जला देंगे।" कह कर उन्होंने उस डंडी को उठाया और आग में फेंक दिया।

उसी समय सेंट ऐन्थोनी के सूअर ने फिर से नरक में शोर शराबा मचाना शुरू कर दिया। वह लकड़ी के टुकड़ों को आग में से निकाल कर और वहॉ पड़ी दूसरी चीज़ों को इधर उधर फेंकने लगा।

सेंट ऐन्थोनी बोले — "अगर तुम चाहते हो कि मैं इस सूअर को शान्त रखूॅ तो तुमको मेरी डंडी वापस देनी पड़ेगी।" उन्होंने उनको उनकी डंडी वापस दे दी और उनका वह सूअर भी शान्त हो गया।

अब वह डंडी तो सोंफ़ की थी और सोंफ़ की लकड़ी का गूदा थोड़ा सा मुलायम होता है। अगर राख का कोई जलता हुआ कण

भी उस पर आ गिरे तो वह उसमें चुपचाप सुलगता रहता है। वह आग बाहर से नहीं देखी जा सकती।

इसलिये शैतानों को यह पता ही नहीं चला कि सेंट ऐन्थोनी की उस सौंफ़ की डंडी में आग थी। शैतानों को उपदेश दे कर सेंट ऐन्थोनी ने अपनी डंडी उठायी अपने सूअर को लिया और नरक से चल दिये। सेंट ऐन्थोनी के वहॉ से चले जाने पर शैतानों ने चैन की सॉस ली।

सेंट ऐन्थोनी नरक से धरती पर आये। उन्होंने अपनी डंडी उठायी और आग की तरफ के सिरे की तरफ से उसको चारों तरफ घुमाते हुए लोगों को आशीर्वाद देते हुए उसमें भरी हुई चिनगारियॉ चारों तरफ बिखेर दीं। फिर उन्होंने गाया —

आग ओ आग, हर जगह के लिये
मैं सारी दुनियॉ को यह आग देता हूँ ताकि तुम लोग कभी कॉपो नहीं

उस समय के बाद से आदमी को आराम देने के लिये आग धरती पर आ गयी। सेंट एन्थोनी अपना ध्यान करने के लिये फिर से रेगिस्तान चले गये।

11 शेरों की घास[69]

एक बार एक बढ़ई[70] था जिसकी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी पर वे लोग बहुत गरीब थे। बेटी का नाम मारियोरसोला[71] था और क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी उसका पिता कभी उसको घर से बाहर नहीं जाने देता था। यहाँ तक कि वह उसको खिड़की के बाहर भी नहीं झाँकने देता था।

इस बढ़ई के सामने वाले घर में एक सौदागर रहता था। यह सौदागर बहुत अमीर था और इसके एक ही बेटा था। उसके बेटे ने सुना कि उसके सामने वाले घर में रहने वाले बढ़ई की बेटी बहुत सुन्दर है।

बस वह उस बढ़ई के घर जा पहुँचा और उससे बोला — "मिस्टर ऐन्थोनी[72]? क्या आप मेरे लिये दो मेजें बना देंगे?"

बढ़ई बोला — "जनाब, अगर आप मुझे लकड़ी ला देंगे तो। क्योंकि मेरे पास लकड़ी खरीदने के लिये पैसे नहीं हैं। जैसे ही मुझे लकड़ी मिल जायेगी मैं आपके लिये दो मेजें बना दूँगा।"

---

[69] The Lions' Grass. A folktale from Italy from its Nurra area.
Adapted from the book : "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980,

[70] Translated for the word "Carpenter"

[71] Mariorsola – name of the carpenter's daughter

[72] Mr Anthony – name of the carpenter

वह चालाक लड़का उसके लिये लकड़ी ले तो गया पर यह लकड़ी उसके माता पिता की थी और उसके माता पिता यह बिल्कुल नहीं चाहते थे कि उनका बेटा जो हमेशा उस बढ़ई की लड़की को देखने की कोशिश करता रहता था उस गरीब आदमी के घर जाये।

एक दिन मारियोरसोला ने सोचा कि शायद वह लड़का अब वहॉ से चला गया होगा सो वह सीढ़ियों से उतर कर नीचे आयी पर वह लड़का तो तब तक भी वहॉ से नहीं गया था सो पैपीनो[73] ने उसको देख लिया और देखते ही उसको चाहने लगा।

उसने बढ़ई से कहा — "मिस्टर ऐन्थोनी, मैं आपसे अपनी शादी के लिये मारियोरसोला का हाथ मॉग रहा हूॅ।"

बढ़ई बोला — "मेरे बच्चे, मेरे साथ मजाक मत करो। मारियोरसोला बहुत गरीब है आपके माता पिता उसको अपनी बहू कभी बनाना नहीं चाहेंगे।"

पैपीनो बोला — "मैं मजाक नहीं कर रहा मिस्टर ऐन्थोनी। आप मेरे माता पिता की चिन्ता न करें। मारियोरसोला मुझे बहुत अच्छी लगती है और मैं अगर शादी करूॅगा तो बस उसी से शादी करूॅगा और किसी से नहीं।"

सो पैपीनो के माता पिता को बताये बिना ही दोनों की शादी की बात पक्की हो गयी। पैपीनो की मॉ को यह बात शहर वालों से

[73] Peppino – the name of the son of the merchant

पता चली कि उसके बेटे ने अपनी शादी पक्की कर ली है। मालूम पड़ते ही यह बात उसने अपने पति से कही।

सौदागर बोला — "अब क्या करें, हमको तो अब इसे घर से बाहर निकलना ही पड़ेगा।"

जब रात को पैपीनो घर वापस आया तो उसके पिता ने उससे कहा — "तुम देख रहे हो कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ इसलिये अब तुमको जहाज़ में सामान ले कर व्यापार के लिये जाना चाहिये और व्यापार सीखना चाहिये।"

बेटा बोला — "ठीक है पिता जी। मुझे बता दीजियेगा कि कब जाना है मैं तभी चला जाऊँगा।"

अगले दिन पैपीनो ने मारियोरसोला से कहा — "मुझे बाहर व्यापार करने जाना है।"

बेचारी मारियोरसोला तो यह सुन कर रो पड़ी। पैपीनो ने उसको कुछ पैसे दिये और कहा — "खुश रहना और चिन्ता नहीं करना मैं जल्दी ही घर वापस लौटूँगा। और हाँ देखो मुझे कभी भूलना नहीं।"

अगले दिन जब वह अपनी यात्रा पर जा रहा था तो मारियोरसोला ने अपनी खिड़की से झाँका और पैपीनो को सड़क पर खड़े लोगों से कहते हुए सुना — "अच्छा विदा, मैं चलता हूँ और अब मैं एक साल बाद लौटूँगा।"

पैपीनो की आवाज सुन कर मारियोरसोला तो बेहोश सी हो गयी। उसको बिस्तर में लिटा दिया गया और उस दिन के बाद से तो वह बस ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलने लगी।

एक साल बाद पैपीनो टौरैस के बन्दरगाह[74] पर उतरा और तुरन्त ही अपने घर सन्देश भेजा कि वह अपनी यात्रा से सही सलामत वापस आ गया है और उसके लिये एक गाड़ी भेज दी जाये ताकि वह वह सामान जो ले कर आया है उस गाड़ी में भर कर घर ला सके।

उसके माता पिता और दोस्त लोग सब उससे मिलने आये। उन सबसे मिलने के बाद उसने अचानक पूछा — "हमारी गली में और सब कैसे हैं?"

उसको बताया गया — "सब लोग ठीक हैं सिवाय ऐन्थोनी की बेटी मारियोरसोला के। अगर वह अभी मर नहीं गयी है तो वह बहुत जल्दी ही मर जायेगी। वह तो जबसे तुम गये हो तभी से बिस्तर में पड़ी है।" यह सुन कर पैपीनो तो वहीं बेहोश हो गया।

लोगों ने पैपीनो को उठा कर गाड़ी में रखा और घर ले गये। डाक्टर बुलाया गया। असल में मारियोरसोला के बारे में सुन कर उसका दिल टूट गया था पर डाक्टर को तो यह पता ही नहीं था कि उसको क्या हुआ है। पैपीनो की मॉ भी बहुत परेशान थी।

[74] Port Torres

व्यापार पर जाने से पहले पैपीनो ने केवल अपने दो करीब के दोस्तों को ही अपनी छिपी हुई शादी के बारे में बताया था।

उसके ये दोस्त डाक्टर के पास गये और बोले — "डाक्टर, ऐसा हुआ है कि इसने अपने माता पिता को बताये बिना ही शादी कर ली थी। फिर यह व्यापार करने चला गया।

इसकी पत्नी तभी से बहुत ज़्यादा बीमार है जबसे यह व्यापार करने गया। इसकी बीमारी यही है। जब तक इसकी पत्नी ठीक नहीं होगी तब तक यह भी ठीक नहीं हो सकता।"

डाक्टर ने यह सब पैपीनो की माँ से कहा तो पैपीनो के पिता ने पैपीनो की माँ से कहा — "हम क्या करें?"

उसका पिता इस बात से बहुत ज़्यादा परेशान था कि उसके बेटे ने एक गरीब की लड़की से शादी कर ली थी।

पैपीनो की माँ बोली — "बजाय इसके कि हम अपने बेटे को मरने दें अच्छा तो यही होगा कि हम उसको उस बढ़ई की लड़की से शादी की इजाज़त दे दें।" और उसने तुरन्त ही किसी को यह पता करने के लिये भेज दिया कि मारियोरसोला कैसी थी।

मारियोरसोला की माँ ने जवाब दिया — "मारियोरसोला तो मरने वाली है। इतने समय तक जब तक वह बीमार थी तब तो तुम किसी ने उसके बारे में कभी पूछा नहीं और अब जब तुम्हारा अपना बेटा मर रहा है तब तुम लोग उसके बारे में पूछ रहे हो?"

पैपीनो की माँ बोली — "मैं उसको अपने घर ले जा रही हूँ।"

मारियोरसोला की मॉ बोली — "मैं कहती हूॅ कि उसको तुम यहीं रहने दो वह मर रही है।"

पर पैपीनो की मॉ ने बहुत जिद की और वह मारियोरसोला को किसी तरह अपने घर ले गयी। वहॉ जा कर उसने उसको एक सोफे पर लिटा दिया जो पैपीनो के पलंग के बराबर में ही पड़ा था।

फिर उसने अपने बेटे को पुकारा — "पैपीनो, बेटा देखो कौन आया है। मारियोरसोला आयी है।"

ये शब्द सुन कर पैपीनो के बेजान से शरीर में कुछ जान आयी और वह अपने पलंग से नीचे उतरा। उसने भी पुकारा — "मारियोरसोला।"

उधर पैपीनो को अपने बिस्तर के पास देख कर मारियोरसोला भी धीरे धीरे ठीक होने लगी और धीरे धीरे दोनों ठीक हो गये। जब वे बिल्कुल ठीक हो गये तब शादी का जश्न मनाया गया।

पर कुछ दिनों बाद मारियोरसोला फिर बीमार पड़ गयी। वह बोली — "सुनो पैपीनो, अगर मैं मर जाऊॅ तो मेरे मरे शरीर पर "औफिस औफ द डैड"[75] जरूर पढ़ देना।" और लो यह कह कर तो वह मर ही गयी।

[75] "Office of the Dead" – The Office of the Dead or Office for the Dead is a prayer cycle of the Canonical Hours in the Catholic Church, Anglican Church and Lutheran Church, said for the repose of the soul of a decedent. It is the proper reading on All Souls' Day (normally November 2) for all souls in Purgatory, and can be a votive office on other days when said for a particular decedent. The work is composed of different psalms, scripture, prayers and other parts, divided into The Office of Readings, Lauds, Day time Prayers etc.

सब उसको चर्च ले गये और पैपीनो उसके ऊपर औफिस औफ द डैड पढ़ना भूल गया।

उसी रात उसने सोचा — "अरे मैं उसके ऊपर औफिस औफ द डैड पढ़ना तो भूल ही गया।" बस वह तुरन्त ही चर्च की तरफ भागा गया और चर्च का दरवाजा खटखटाया।

चर्च के चौकीदार ने पूछा — "कौन है?"

पैपीनो बोला — "मैं हूँ पैपीनो। दरवाजा खोलो"

चौकीदार आया और उसने दरवाजा खोला तो पैपीनो बोला — "उस मरी हुई लड़की की कब्र खोलो मैं तुमको दस काउन दूँगा।"

चौकीदार बोला — "यह मैं कैसे कर सकता हूँ लोगों ने सुन लिया तो?"

पैपीनो बोला — "किसी को पता नहीं चलेगा अभी तो घुप अँधेरा है।" सो उस चौकीदार ने उस लड़की की कब्र खोद दी और पैपीनो को वहाँ छोड़ दिया। पैपीनो घुटनों के बल बैठा और औफिस औफ द डैड पढ़ने लगा।

जब वह औफिस औफ द डैड पढ़ रहा था तो उसको चिंघाड़ने की आवाज सुनायी पड़ी और उसने दो शेर चर्च में आते देखे। आते ही शेरों ने लड़ना शुरू कर दिया। एक ने दूसरे को काटा और इस तरह एक शेर ने दूसरे शेर को मार दिया।

ज़िन्दा शेर वहाँ से भाग गया और चर्च के मैदान में उगी थोड़ी सी घास उखाड़ कर ले आया और उस मरे हुए शेर के मुँह में ठूँस दी

और कुछ घास उसने उसके दॉतों पर भी मल दी। वह मरा हुआ शेर तो ज़िन्दा हो गया और फिर दोनों शेर वहॉ से भाग गये।

इतनी देर में पैपीनो ने औफिस औफ द डैड पढ़ लिया था सो उसने सोचा क्यों न मैं भी इस घास को मारियोरसोला पर आजमा कर देखूॅ। शायद उस घास के इस्तेमाल से मेरी मारियोरसोला भी ज़िन्दा हो जाये।

यह सोच कर वह भी चर्च के बाहर गया और वहॉ से थोड़ी सी घास तोड़ लाया और उसको मारियारसोला के दॉतों पर मल दिया। तो लो वह तो ज़िन्दा हो गयी।

ज़िन्दा होते ही उसने पूछा — "पैपीनो, यह तुमने क्या किया? मैं तो अपने हालात से बहुत खुश थी।" पैपीनो ने उसको अपना शाल[76] ओढ़ाया और उसका हाथ पकड़ कर कब्र में से उठा कर घर ले जाने लगा।

तभी चर्च का चौकीदार भी आ गया। वह बोला — "यह सब यहॉ क्या हो रहा है? यह तुम क्या कर रहे हो? इस मरी हुई लड़की को कहॉ ले जा रहे हो?"

पैपीनो बोला — "मुझे जाने दो। यह मेरी पत्नी है और मेरी पत्नी ज़िन्दा है।"

चौकीदार तो यह देख कर बेहोश होते होते बचा। पैपीनो मारियोरसोला को घर ले गया। उसको बिस्तर पर लिटा दिया और

[76] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

उसको एक गर्म चादर ओढ़ा दी ताकि उसको थोड़ी गर्मी आ जाये। उसके बाद वह भी उसके पलंग के पास बिछे एक पलंग पर सो गया।

अगली सुबह सात बजे जब पैपीनो की माँ ने दरवाजा खटखटाया तो मारियोरसोला ने पूछा — "कौन है?"

मरी हुई लड़की की आवाज सुन कर तो पैपीनो की माँ की साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी और वह नीचे दौड़ी। इस परेशानी में वह सीढ़ियों से नीचे गिर पड़ी। उसका सिर जमीन से टकरा गया और वह मर गयी।

कुछ देर बाद एक नौकरानी ऊपर गयी और उसने भी पैपीनो के कमरे का दरवाजा खटखटाया। मारियोरसोला ने फिर पूछा — "कौन है? क्या तुम अभी भी दरवाजा खटखटा रहे हो?"

यह नौकरानी भी मरी हुई लड़की की आवाज सुन कर डर गयी और सीढ़ियों से नीचे भागी। नीचे भागते समय वह भी गिर गयी। उसके सिर में भी चोट लगी और वह भी मर गयी।

कुछ देर बाद पैपीनो की ऑख खुलीं तो मारियोरसोला बोली — "इस घर में तो कोई सो भी नहीं सकता। ये लोग हमेशा ही दरवाजा खटखटाते रहते हैं।"

पैपीनो ने आश्चर्य से पूछा — "और तुमने जवाब दिया?"

"हॉ मैंने जवाब दिया।"

पैपीनो परेशान सा बोला — "यह तुमने क्या किया? वे लोग तो यह सोच चुके थे कि तुम मर चुकी हो।"

वह तुरन्त उठा और उसने दरवाजा खोला तो उसने देखा कि उसकी माँ और नौकरानी दोनों सीढ़ियों के नीचे मरी पड़ी हैं। उसके मुँह से निकला — "ओह यह हमारे ऊपर क्या मुसीबत आ पड़ी। पर अभी मुझे इसके बारे में चुप ही रहना चाहिये नहीं तो मेरी पत्नी डर जायेगी।"

यह सोच कर वह तुरन्त ही चर्च भागा गया। वहाँ से वह ज़िन्दा करने वाली घास ले कर आया और अपनी माँ और नौकरानी दोनों को ज़िन्दा किया।

X X X X X X X

जब मारियोरसोला बीमार थी तो उसने सेंट गवीनो के चर्च[77] जाने की मन्नत माँगी थी कि अगर वह ठीक हो जायेगी तो वह सेंट गवीनो के चर्च जायेगी। सो एक दिन उसने पैपीनो से कहा कि वह सेंट गवीनो के चर्च जाना चाहती है।

पैपीनो ने कहा — "हाँ हाँ कल ही चलें?"

अगले दिन वे सेंट गवीनो के चर्च चल पड़े पर कुछ दूर जाने के बाद मारियोरसोला बोली — "पैपीनो, मैं अपनी अँगूठी तो खिड़की पर ही रखी भूल आयी हूँ।"

[77] Church of Saint Gavino

पैपीनो बोला — "अभी तुम उसकी चिन्ता छोड़ो और अभी तुम केवल चर्च चलो।"

मारियोरसोला बोली — "नहीं नहीं, मैं उसको लेने के लिये अभी वापस घर जा रही हूँ क्योंकि अगर कहीं हवा का कोई झोंका आ गया तो वह नीचे गिर जायेगी।"

पैपीनो ने उसको तसल्ली दी — "ठीक है। मैं उसको उठा कर ले आऊँगा पर इस बीच तुम समुद्र के पास नहीं जाना जहाँ मसकोवी के राजा[78] की नाव है।" कह कर पैपीनो मारियासोला की अँगूठी लाने चला गया।

पैपीनो के जाने के बाद मारियोरसोला उसके मना करने पर भी समुद्र की तरफ चल दी। वहाँ मसकोवी के राजा की नाव खड़ी थी। बस उन लोगों ने उसको देखा तो उसको पकड़ कर वहाँ से ले गये।

जब पैपीनो उसकी अँगूठी ले कर वापस आया तो उसको मारियोरसोला कहीं दिखायी नहीं दी। उसने चारों तरफ देखा भी पर फिर भी वह उसको कहीं दिखायी नहीं दी तो वह समुद्र में कूद पड़ा और तैर गया। थोड़ी दूर जा कर उसको एक नाव दिखायी दी तो उसने एक सफेद कपड़ा उसको दिखा कर हिलाया[79]।

[78] The King of Muscovy

[79] Waving the white cloth is the symbol of Peace. This shows that he was not an enemy and wanted some help from the boat.

नाव के मालिक ने कहा — "जल्दी करो। एक आदमी समुद्र में डूब रहा लगता है।" वे नाव वाले जल्दी जल्दी पैपीनो के पास आये और उसको समुद्र में से निकाल कर अपनी नाव पर चढ़ा लिया।

पैपीनो ने उनसे पूछा — "क्या तुम लोगों ने राजा मसकोवी की नाव देखी है?"

वे बोले — "नहीं, हमने तो नहीं देखी।"

पैपीनो बोला — "तो मेहरबानी कर के मुझे मसकोवी ले चलो।" सो वे उसको मसकोवी ले गये।

वहॉ मसकोवी में तो मारियोरसोला रानियों की तरह सजी बैठी थी। जब पैपीनो ने उसको देखा तो वह उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया पर मारियोरसोला ने उसकी तरफ से मुॅह फेर लिया।

उसके पास तक पहुॅचने का कोई रास्ता नहीं था सो वह वहॉ के राजा के पास गया और अपने आपको खाना परसने वाला बता कर अपना परिचय दिया। राजा ने उसको एक खाने की मेज पर काम करने की नौकरी दे दी।

जब उसने मारियोरसोला को मेज पर अकेला बैठा देखा तो उससे बोला — "अगर तुम मेरी मारियोरसोला हो तो तुम मुझे क्यों नहीं पहचानतीं?"

उसने बुरा सा मुॅह बनाया और अपना मुॅह दूसरी तरफ को घुमा लिया। उसने उसको तंग करने का पहले से ही एक प्लान बना रखा था। उसने राजा के एक नौकर से पैपीनो की तरफ इशारा करते हुए

कहा — "ये सारी चॉदी की चम्मचें उठाओ और उस आदमी की जेब में डाल दो।"

जब उस नौकर ने वे चॉदी की चम्मचें पैपीनो की जेब में डाल दीं तो उसने उसे फिर हुक्म दिया — "इस आदमी की जेबों की तलाशी लो।" पैपीनो की जेबों की तलाशी ली गयी तो उसकी जेबों में वे चम्मचें मिल गयीं जो उसकी जेबों में रखवायी गयी थीं।

वह बोली — "तो यह है वह चोर जिसने हमारी चम्मचें चुरायी हैं। इसे अभी जेल में डाल दो। फिर इसको हमारी खिड़की के सामने फॉसी लगा देना।"

पैपीनो के पास अभी भी वह शेरों वाली घास थी सो जब वह फॉसी के तख्ते की तरफ ले जाया जा रहा था तो उसने पादरी को थोड़ी सी वह घास दी और उससे कहा — "पादरी जी, मैं बिल्कुल बेकुसूर हूॅ मैंने कोई चम्मच आदि नहीं चुरायी है।

इसलिये जब वे मुझे फॉसी लगायें तो आप ज़रा यह ख्याल रखें कि वे मेरी गर्दन न तोड़ें। फॉसी लगा कर वे मुझे आपके घर ले जायें और जब वे मुझे आपके घर में छोड़ कर चले जायें तो वहॉ आप यह घास मेरे दॉतों पर मल देना इससे मैं ज़िन्दा हो जाऊॅगा।"

सो जब फॉसी लगाने का समय आया तो पादरी ने फॉसी लगाने वाले से कहा कि इसको ध्यान से फॉसी लगाना इसकी गरदन न टूटने पाये। फिर उसने राजा से इस बात की इजाज़त भी ले ली कि फॉसी के बाद वह उसके शरीर को अपने घर ले जायेगा।

फॉसी लगाने वाले ने फॉसी लगाते समय इस बात का ध्यान रखा कि उसकी गरदन न टूटने पाये।

फॉसी के बाद पादरी उसके शरीर को अपनी मोनैस्टरी[80] ले गया। वहॉ जा कर पादरी ने उसकी दी हुई घास उसके दॉतों पर मल दी तो वह ज़िन्दा हो गया। पैपीनो ने पादरी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दिया।

फिर वह सात राजाओं के राजा के देश[81] गया। इत्तफाक की बात कि उस देश के राजा की पत्नी तभी तभी मरी थी सो सारा महल दुख में डूबा हुआ था।

पैपीनो के लिये राजा को प्रभावित करने का यह बहुत अच्छा मौका था सो वह राजा के महल की तरफ चल दिया। वह महल पहुॅचा और उसने महल के चौकीदार से कहा — "मैं महल के अन्दर जाना चाहता हूॅ और राजा से मिलना चाहता हूॅ।"

चौकीदार ने पूछा — "क्या तुम सोचते हो कि इस समय उनको तुम्हारी जरूरत है?"

पैपीनो ने फिर कहा — "मैंने कहा न कि उनको बोलो कि मैं अन्दर आना चाहता हूॅ।"

[80] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits).

[81] Country of the Seven Crowns

चौकीदार तो उसको अन्दर नहीं जाने देना चाहता था पर जब पैपीनो ने बहुत ज़िद की तो वह उसको महल के अन्दर ले गया। वहॉ जा कर पैपीनो ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, अगर आप मुझे रानी जी के साथ कुछ देर के लिये अकेला छोड़ दें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

राजा उसकी यह अनोखी बात सुन कर कुछ परेशान सा हो गया और तुरन्त ही कुछ बोल नहीं सका। पर इसमें अपना कुछ नुकसान न देखते हुए उसने सबको वहॉ से बाहर निकाल दिया और फिर खुद भी बाहर चला गया।

अब पैपीनो रानी की लाश के साथ बिल्कुल अकेला रह गया। उसने कमरे का दरवाजा बन्द किया, रानी के शरीर को ताबूत[82] में से बाहर निकाला और उसको पलंग पर लिटा दिया। उसने थोड़ी सी वह शेरों वाली घास निकाली और रानी के होठों के बीच में रख दी। कुछ पल में ही रानी ज़िन्दा हो गयी।

पैपीनो ने कमरे का दरवाजा खोल दिया और राजा को अन्दर बुला कर कहा — "मैजेस्टी, यह रही आपकी रानी।"

रानी को ज़िन्दा देख कर वहॉ मौजूद सारे लोग रोना तो भूल गये और खुशियॉ मनाने लगे।

[82] Translated for the "Coffin" – in which Christians keep their dead body to be buried. See its picture above.

उस दिन के बाद से राजा पैपीनो को हमेशा अपने साथ रखता था।

एक दिन राजा ने पैपीनो से कहा — "पैपीनो, मैं तो अब बूढ़ा हो रहा हूँ और तुम तो हमारे बेटे की तरह ही हो सो अपने सात ताज मैं तुमको देता हूँ।"

पैपीनो बोला — "कौन कौन राजा लोग इस सात ताजों के राजा बनने की रस्म में आयेंगे?"

राजा बोला — "स्पेन, इटली, फ्रांस, पुर्तगाल, इंगलैंड, आस्ट्रिया और मसकोवी के राजा आयेंगे। ये सात राजा हैं जो सात राजाओं के राजा को ताज पहनायेंगे।"

"तब मैं यह ताज स्वीकार करता हूँ।"

सब राजाओं को बुलावा भेज दिया गया। मसकोवी का राजा अपनी पत्नी के साथ आने के लिये तैयार हुआ। उसकी पत्नी मारियोरसोला ने इस खास मौके के लिये एक खास पोशाक बनवायी थी।

ताजपोशी की रस्म के बाद एक दावत का इन्तजाम था। इस दावत के बाद सात ताजों के ताज वाला राजा पैपीनो बोला — "अब हम सब एक एक कहानी सुनायेंगे।"

सो हर एक ने कोई न कोई कहानी सुनायी। आखीर में पैपीनो बोला — "अब मैं एक कहानी सुनाता हूँ पर यह कहानी नहीं है सच

है। जब तक मैं अपनी कहानी पूरी न कर लूँ कोई इस मेज पर से उठेगा नहीं।"

तब पैपीनो ने अपनी पूरी कहानी सुनायी – मारियोरसोला से मुलाकात से ले कर, अपनी शादी से ले कर, अब तक की। कहानी सुन कर मारियोरसोला तो बहुत बेचैन हो गयी।

उसने सिर दर्द का बहाना किया और वहाँ से जाने की इजाज़त माँगी पर पैपीनो ने उसको हाथ हिला कर बैठने का इशारा किया और बोला — "नहीं, कोई यहाँ से नहीं उठेगा।"

अपनी कहानी के आखीर में उसने मसकोवी के राजा से पूछा — "ऐसी स्त्री को क्या सजा मिलनी चाहिये?"

मसकोवी का राजा बोला — "उसको तो सबसे पहले फाँसी पर चढ़ा देना चाहिये, फिर उसे जला देना चाहिये और फिर उसकी राख को हवा में उड़ा देना चाहिये।"

पैपीनो ने हुक्म दिया "ऐसा ही किया जाये। मसकोवी के राजा की पत्नी को पकड़ लो।"

मसकोवी के राजा की पत्नी को पकड़ लिया गया और पैपीनो के लोग उसको फाँसी के फन्दे की तरफ ले चले।

पैपीनो अब सात ताजों का बादशाह था।

12 ननों की कौनवैन्ट और साधुओं की मोनैस्टरी[83]

एक बार एक दर्जी था जिसकी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी जिसका नाम था जीनी[84]। वह सुन्दर होने के साथ पढ़ी लिखी भी थी। वहीं उसके घर के पास में एक नौजवान भी रहता था जिसका नाम था जौनी[85]।

जौनी जीनी की सुन्दरता से इतना प्रभावित था कि वह हमेशा उसके पीछे पीछे घूमता रहता था और जीनी के पास उससे बचने का कोई रास्ता नहीं था।

जब वह जौनी की इन हरकतों से तंग आ गयी तो एक दिन उसने अपनी सहेलियों से कहा — "क्या हम लोगों को कोई कौनवैन्ट[86] नहीं ढूँढ लेना चाहिये जहाँ हम लोग सुरक्षित रह सकें?"

उसकी सहेलियाँ बोलीं — "हाँ, शायद हम लोगों को ऐसा ही करना चाहिये।"

---

[83] The Convent of Nuns and the Monastery of Monks. A folktale from Italy from its Nurra area. Adapted from the book : "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980.

[84] Jeannie – name of the daughter of the tailor

[85] Johnny – the name of the young man living opposite to Jeannie's house

[86] Convent is a community of people devoted to religious life under a superior – normally of females. Wherever they live that building is also called Convent.

जीनी की ये सहेलियॉ राजाओं की, नाइट्स[87] की और कुलीन लोगों की बेटियॉ थीं। इन सबने जा कर अपने अपने पिताओं से कहा — "पिता जी, हम लोग एक कौनवैन्ट बनाने जा रहे हैं।"

पिता बोले — "क्या तुम लोग केवल अपने लिये एक कौनवैन्ट बनाओगी?"

पर इन लड़कियों के इरादे पक्के थे सो उन्होंने शहर से दूर एक जगह देखी, अपने साथ काफी खाना पीना लिया और ये सारी बारह लड़कियॉ वहॉ कौनवैन्ट में जा कर रहने लगीं। जीनी को उन्होंने अपना ऐबैस[88] बना लिया।

अब जौनी जो जीनी को बहुत प्यार करता था उसने अपने दोस्तों से कहा — "मैंने जीनी को बहुत दिनों से नहीं देखा। कहॉ हो सकती है वह?"

वे बोले — "यह तुम हमसे पूछ रहे हो? यह तो हमसे ज़्यादा तुमको मालूम होना चाहिये।"

जौनी बोला — "मुझे नहीं मालूम कहॉ है वह। अब क्योंकि मेरी प्रेमिका खो गयी है तो मैं तो साधु[89] बन जाऊॅगा। क्यों न हम एक मोनैस्टरी बना लें? क्या विचार है?"

---

[87] A Knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity.

[88] Abbess is the woman who is the superior in a convent of nuns.

[89] Translated for the word "Monk"

सबने हॉ कर दी सो उन्होंने भी एक मोनैस्टरी बना ली। उनकी यह मोनैस्टरी लड़कियों के कौनवैन्ट के पास ही थी। वे सब जल्दी ही उस मौनेस्टरी में चले गये।

एक रात ननों की कौनवैन्ट में खाने का सामान खत्म हो गया। ऐबैस जीनी खाने के सामान की देखभाल करती थी। उसने खिड़की से बाहर झॉका तो उसे दूर एक रोशनी चमकती दिखायी दी सो वह कुछ खाना पीना पाने की आशा में उधर की तरफ ही चल दी।

वह रोशनी एक घर से आ रही थी। वहॉ पहुँच कर उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। जब वहॉ उसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने दरवाजा देखा तो वह खुला था सो वह उस घर के अन्दर घुस गयी। पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि घर के अन्दर तो कोई भी नहीं था।

पर वहॉ बारह आदमियों के लिये एक खाने की मेज लगी थी – बारह प्लेटें, बारह गिलास, बारह चम्मचें, बारह कॉटे, बारह नैपकिन और बारह बड़े कटोरे मैकेरोनी[90] से भरे।

जीनी ने मैकेरोनी के वे बारह बड़े कटोरे अपनी टोकरी में रखे और अपने कौनवैन्ट की तरफ चल दी। कौनवैन्ट पहुँच कर उसने वे बारह कटोरे अपनी खाने की मेज पर रखे और खाने की घंटी

[90] Macaroni – a very famous and common dish of Italy. See its picture above.

बजा दी। सब लड़कियॉ आ गयीं और जीनी ने सबको एक एक कटोरा मैकेरोनी दे दी।

यह घर जहॉ से जीनी ने मैकेरोनी के कटोरे लिये थे वे उन बारह लड़कों की मोनैस्टरी थी। जब वे लड़के घर लौटे तो उन्होंने देखा कि उनकी खाने की मेज पर से तो मैकेरोनी के कटोरे गायब थे।

तो उनका फादर सुपीरियर[91] जौनी बोला — "यह कौन मैना है जो हमारा शाम का खाना ले गयी है। कल को किसी को इस मेज का पहरा देना पड़ेगा।"

सो अगली रात जौनी ने एक लड़के को यह देखने के लिये मौनेस्टरी में छोड़ दिया कि वह यह देखे कि हमारा खाना कौन चुरा कर ले गया।

जौनी ने उससे कहा कि जब तुम चोर को देखो तो बस सीटी बजा देना। जैसे ही हम तुम्हारी सीटी की आवाज सुनेंगे हम सब दौड़े आ जायेंगे। और हॉ देखना सो नहीं जाना।

पर वह साधु तो बहुत जल्दी ही गहरी नींद सो गया। जीनी उस दिन फिर आयी और फिर उसने मेज पर बारह कटोरे मैकेरोनी रखी देखी। उसने फिर चारों तरफ देखा तो उसको सोता हुआ एक साधु दिखायी दिया।

[91] Father Superior is the Head in Monastery, as Abbess in Convent

उससे उसको कोई खतरा महसूस नहीं हुआ सो उसने बारहों कटोरे उठा कर अपनी टोकरी में रख लिये। फिर उसने एक बर्तन लिया और उसमें से तेल निकाल कर उस सोते हुए साधु के मुँह पर मल दिया और वहाँ से चली आयी।

वह कौनवैन्ट पहुँची और वहाँ के दरवाजे की घंटी बजायी। दरवाजा खुला, वह अन्दर गयी और सबने मिल कर भर पेट खाना खाया।

जब फादर सुपीरियर ने उस साधु का काला चेहरा देखा तो बोला — "तुम तो बड़े अच्छे चौकीदार निकले।"

अगली रात एक और साधु को पहरे पर तैनात किया गया पर वह भी सो गया और जब वह जागा तो उनके मैकेरोनी के भी सब कटोरे जा चुके थे और उस पहरेदार का मुँह भी काला था।

यह सब ग्यारह रात तक चलता रहा। हर रात एक नया साधु पहरे पर तैनात किया जाता, हर रात वह सो जाता, हर रात उनके मैकेरोनी के कटोरे गायब हो जाते और हर सुबह उस साधु का मुँह काला मिलता।

बारहवीं रात को फादर सुपीरियर जौनी ने खुद पहरा देने का निश्चय किया। जौनी ने सोने का बहाना किया और एक तरफ को बैठ गया ताकि वह सब देख सके।

उस दिन भी जीनी आयी और बारह मैकेरोनी के कटोरे अपनी टोकरी में भर कर ले जाने लगी तो वह उस पहरेदार का मुँह काला करने के लिये भी आयी।

जैसे ही उसने तेल ले कर उसका मुँह काला करना चाहा कि जौनी उठ खड़ा हुआ और बोला — "रुको, आज तुम यह सब यहाँ से नहीं ले जा सकतीं। मैं तुमको हाथ भी नहीं लगाऊँगा अगर तुम मुझे वे ग्यारह नन ला कर दे दो तो।"

जीनी बोली — "ठीक है पर एक शर्त पर। तुम उनका बाल भी बाँका नहीं करोगे।"

"पक्का वायदा।"

ऐबैस जीनी अपने मैकेरोनी के कटोरे ले कर कौनवैन्ट लौट गयी। वहाँ सबने खाना खाया। फिर वह बोली — "मेरी बहिनों सुनो। आज हमको साधुओं की मोनैस्टरी जाना पड़ेगा।"

सबने एक साथ पूछा — "वहाँ वे हमारा क्या करेंगे?"

जीनी ने उनको विश्वास दिलाया — "उन्होंने मुझसे वायदा किया है कि वे हमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे इसलिये तुम लोग चिन्ता न करो।"

सो खाना खा कर वे सब मौनेस्टरी चल दीं और वहाँ जा कर कहा — "हमको यहाँ एक कमरा चाहिये जहाँ हम रह सकें।"

फादर सुपीरियर ने उनको एक कमरा दिखा दिया जहाँ बारह पलंग पड़े हुए थे। वे सब वहाँ सोने चली गयीं।

जब दूसरे साधु लौटे तो उन सबका खाना जा चुका था। वे बोले — "अरे यह क्या? फादर भी हमारा खाना नहीं बचा सके?"

फादर सुपीरियर ने कहा — "चुप रहो। हमने उस चोर मैना को पकड़ लिया है जो तुम सबका मुँह काला कर के चली गयी थी।"

"क्या तुम ठीक कह रहे हो?"

फादर सुपीरियर जौनी बोला — "हॉ और उसके साथ ग्यारह और भी हैं। और अब वे सब हमारे लिये मैकेरोनी पकायेंगी।"

यह कह कर वह गया और ननों के कमरे का दरवाजा खटखटाया और कहा — "उठो और हमारे लिये मैकेरोनी पकाओ।"

ऐबैस जीनी ने कहा — "मेरी नन बिना संगीत के खाना नहीं बना सकतीं।"

साधु बोले — "ठीक है हम संगीत बजायेंगे।"

उस समय हालॉकि सारे साधु भूखे थे फिर भी उन्होंने बिगुल बजाने शुरू किये। किसी ने वायलिन[92] बजाया, किसी ने ड्रम बजाया

पर उस समय में बजाय रात का खाना बनाने के सब ननों ने अपने अपने गद्दे नीचे खिड़की से बाहर फेंक दिये और चादरें खिड़की से बॉध कर नीचे गद्दों पर कूद गयीं। घर का दरवाजा बाहर से बन्द किया और अपने कौनवैन्ट भाग गयीं।

[92] Violin – a string musical instrument. See its picture above.

इस बीच वे भूखे साधु घर के अन्दर बिगुल, वायलिन, ड्रम आदि बजाते रहे। कुछ देर बाद वे बोले — "अरे इतनी देर हो गयी मैकेरोनी का क्या हुआ? क्या वह अभी तक नहीं पकी?"

उन्होंने जा कर ननों के कमरे का दरवाजा खटखटाया तो उनको वहाँ से कोई जवाब नहीं मिला। उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया। उन्होंने देखा कि कमरा तो खाली था। न उसमें गद्दे थे, न चादरें थीं और न एक भी नन।

सब साधु एक साथ बोले — "उन्होंने हमारे साथ चाल खेली हमें उनकी इस चाल का जवाब देना पड़ेगा।"

अगले दिन उन्होंने एक बक्सा[93] बनवाया और उसमें उन्होंने अपने फादर सुपीरियर जौनी को बन्द कर दिया। वे सब उस बक्से को ले कर ननों के कौनवैन्ट गये और रात होने तक बाहर छिपे रहे।

रात होने पर एक साधु उस बक्से को कौनवैन्ट के दरवाजे तक लुढ़का कर ले गया। वहाँ का दरवाजा खटखटाया और बोला — "क्या आप हमारे इस बक्से को रात भर के लिये रख लेंगी?"

उन्होंने हाँ कर दी तो वह साधु उस बक्से को कौनवैन्ट के अन्दर छोड़ आया।

[93] Translated for the word "Cask"

पर ऐबैस को कुछ दाल में काला लगा तो उसने सोचा कि बस अब यह खेल खत्म। खाने की मेज पर उसने अपनी सहेलियों से कहा — "बहिनों, पता नहीं यहॉ कब क्या हो जाये पर डरो नहीं।"

तभी जौनी बक्से में से निकला और ऊपर पहुँच कर खाने के कमरे का दरवाजा खटखटाया।

ननों ने पूछा — "कौन है?"

जौनी बोला — "दरवाजा खोलो।"

एक नन ने दरवाजा खोला और फादर सुपीरियर अन्दर आये।

नन ने कहा — "गुड ईवनिंग फादर। आप बैठें और इसे अपना ही घर समझें।"

फादर सुपीरियर जौनी बैठ गया और उसने उनके साथ खाना खाया। खाते समय वह उनसे इधर उधर की बातें भी करता रहा। जब खाना खत्म हो गया तो उसने अपनी जेब से एक बोतल निकाली और उन सब ननों को देते हुए कहा — "आप लोग यह पियें।"

उन सब ननों ने उस बोतल में से एक एक घूँट पी पर ऐबैस ने अपना गिलास पास में ही फेंक दिया इसलिये सारी नन तो सो गयीं पर ऐबैस जीनी ने सोने का केवल बहाना ही किया।

जौनी ने जब देखा कि सब नन सो गयीं तो उसने उन सारी ननों के कमर में रस्सियों बॉध दीं ताकि वह उन सबको खिड़की के रास्ते

नीचे उतार सके। फिर वह खिड़की के पास गया और अपने साथी साधुओं को बुलाया।

पर जीनी उसके पीछे पीछे पहुँच गयी और जैसे ही वह साधुओं को बुलाने के लिये खिड़की पर झुका उसने उसके पैर पकड़ कर उसको खिड़की के बाहर फेंक दिया। बेचारा जौनी सिर के बल जमीन पर गिर पड़ा।

फिर जीनी ने अपनी सहेलियों को जगाया और कहा — "उठो जल्दी करो, हमें यहाँ से बहुत जल्दी बाहर निकलना है। हम अपने अपने पिताओं को लिखेंगे कि वे हमें यहाँ से बुलवा लें। हम लोग अब नन बन कर थक चुके हैं।"

उसके बाद वे सब नन अपने अपने घर चली गयीं। उधर साधुओं ने भी मौनेस्टरी छोड़ दी और वे भी अपने अपने घर चले गये।

पर जौनी ने जीनी से प्यार करना नहीं छोड़ा। अपने सिर पर पट्टियाँ बाँधे वह जीनी के पिता के पास गया और उससे कहा कि वह उसकी बेटी से शादी करना चाहता है। काफी ना नुकुर के बाद जीनी जौनी से शादी करने के लिये राजी हो गयी।

शादी से पहले उसने अपने साइज़ की चीनी की एक गुड़िया बनवायी और शादी की रात उसने अपने पति से कहा — "यह मोमबत्ती बुझा दो क्योंकि कौनवैन्ट मे रहते रहते अब मुझे अँधेरे में सोने की आदत हो गयी है।" जौनी ने मोमबत्ती बुझा दी।

जब अँधेरा हो गया तो वह अपने सोने के कमरे में गयी और उसने अपने बिस्तर में तो एक चीनी की गुड़िया लिटा दी और वह खुद पलंग के नीचे लेट गयी। वहाँ से वह उस चीनी की गुड़िया को एक रस्सी से कठपुतली की तरह से हिला सकती थी।

रात हुई तो जौनी उस कमरे में सोने के लिये आया। उसके एक हाथ में तलवार थी।

आते ही बोला — "जीनी। क्या तुमको याद है कि तुमने मेरे साथ क्या क्या किया था? क्या तुम्हें याद है कि तुमने रात को मेरा खाना चुराया?"

चीनी की गुड़िया ने हाँ में सिर हिलाया।

"क्या तुमको यह भी याद है कि तुमने मुझे खिड़की के बाहर फेंका और मेरी खोपड़ी तोड़ दी?"

चीनी की गुड़िया ने फिर अपना सिर हाँ में हिला दिया।

"और तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम उसको मान भी रही हो?" कह कर उसने अपनी तलवार निकाली और उस चीनी गुड़िया की छाती में भोंक दी।

फिर वह बोला — "जीनी, मैंने तुम्हें मार दिया। अब मैं तुम्हारा खून पियूँगा।" कह कर वह अपनी तलवार चाटने लगा।

तलवार चाटते हुए वह बोला — "जीनी तुम जब तक ज़िन्दा थीं तब भी तुम मीठी थीं और अब जब तुम मर गयी हो तब भी तुम मीठी हो।"

यह कह कर वह तलवार उसने अपने दिल की तरफ की और बोला — "पर कुछ भी है मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता इसलिये तुमको मार कर अब मैं खुद को भी मार रहा हूँ।"

तभी जीनी नीचे से चिल्लायी — "रुको जौनी, तुम अपने आपको मत मारो। मैं ज़िन्दा हूँ।"

और जीनी पलंग के नीचे से बाहर निकल कर जौनी से लिपट गयी। उस दिन के बाद से वे कभी नहीं लड़े और प्रेम से ही रहते रहे।

13 वर्मवुड[94]

यह कहानी बहुत बार कही गयी है पर आज हम इसे एक बार फिर लिख रहे हैं। यह कहानी कुछ ऐसे है कि एक बार एक राजा और रानी थे। पर इस राजा और रानी के महल में जब भी रानी किसी बच्चे को जन्म देती तो वह एक लड़की को ही जन्म देती।

राजा को एक बेटे की जरूरत थी जो उसके बाद उसका राज्य सँभाल सकता। जब राजा का धीरज छूट गया तो उसने रानी से कहा — "रानी जी बस अब बहुत हो गया। अगर तुमने अब एक और लड़की को जन्म दिया तो मैं उसको मार दूँगा।"

और जैसा कि रानी को डर था इस बार उसने फिर से एक लड़की को जन्म दिया पर उसकी यह लड़की बहुत सुन्दर थी। कहीं राजा उसको मार न दे इसलिये उसने उसकी गौडमदर[95] से कहा — "इस बच्ची को तुम ले लो और जैसे तुम चाहो इसको वैसे रखो नहीं तो राजा इसको मार देंगे।"

[94] Wormwood. A folktale from Italy from its Palermo area. Adapted from the book : "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980,
Wormwood is a kind of bitter bush plant.

[95] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

गौडमदर ने उस बच्ची को ले तो लिया पर वह यही सोचती रही कि वह उसका क्या करे। फिर वह उसको खेतों में ले गयी और उसको एक वर्मवुड[96] की झाड़ी के नीचे रख दिया।

उन्हीं खेतों के पास एक साधु रहता था। उसकी गुफा में एक हिरनी रहती थी जिसके कुछ छोटे छोटे छौने[97] थे जिनको वह दूध पिलाती थी।

वह हिरनी खाना खाने के लिये रोज बाहर जाती थी। एक दिन जब वह बाहर से खाना खा कर लौटी तो उसके बच्चों ने उसका दूध पीने की कोशिश की पर उसके थन खाली थे। उनमें दूध नहीं था सो उसके बच्चे भूखे रह गये।

उसके अगले दिन भी यही हुआ और उसके अगले दिन भी और उसके अगले दिन भी। इस तरह से उसके अपने बच्चे भूख से कमजोर होने लगे।

साधु ने जब यह देखा तो उसको उस हिरनी के बच्चों पर बहुत दया आयी सो वह उस हिरनी के साथ यह देखने के लिये बाहर गया कि हिरनी के दूध का क्या होता है। जब वह गया तो उसको पता चला कि वह एक वर्मवुड की झाड़ी की तरफ जाती है और एक बच्ची को अपना दूध पिलाती है।

---

[96] Wormwood is a kind of woody plant, grown as bush, bitter in taste, native to Eurasia. It is used in medicine but at some places it is used as tea also. See its picture above.

[97] Translated for the word “Fawns” – means the children of a deer.

साधु ने उस बच्ची को उठा लिया और उसे अपनी गुफा में ले आया। उसने हिरनी से कहा — "लो अब तुम इस बच्ची को अपना दूध यहाँ पिलाओ और अपने दूध को अपने बच्चों और इस बच्ची दोनों में बाँटो।"

बच्ची धीरे धीरे बड़ी होती गयी। जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर और प्यारी होती गयी। वह उस साधु के घर का काम करती और साधु भी उसको इतना प्यार करता जैसे वह उसकी अपनी बेटी हो। उसने उस बच्ची का नाम भी वर्मवुड की झाड़ी के नाम पर वर्मवुड ही रख दिया।

एक दिन एक और राजा शिकार खेलते खेलते उधर आ निकला। बीच में ही बहुत ज़ोर का तूफान आ गया। बहुत तेज़ हवा चलने लगी, बिजली चमकने लगी और गरज के साथ बहुत तेज़ बारिश होने लगी।

उस तूफान से बचने के लिये उस समय उसको केवल साधु की गुफा ही दिखायी दी सो वह उस साधु की गुफा में चला गया। एक राजा को भीगे हुए अपनी गुफा में आते देख कर साधु ने आवाज लगायी — "वर्मवुड, वर्मवुड। राजा के बैठने के लिये एक गर्म ले कर आ।"

"वर्मवुड? अरे साधु, यह किस तरह का नाम है?"

तब साधु ने उसको उस बच्ची के वर्मवुड की झाड़ी में पाने और उस झाड़ी के नाम पर उसका नाम रखने के बारे में बता दिया।

जैसे ही राजा ने उस लड़की को देखा तो राजा बोला — "ओ साधु, क्या तुम मुझे इस लड़की को मेरे महल ले जाने की इजाज़त दोगे? तुम तो अब बूढ़े हो रहे हो। तुम्हारे बाद यह लड़की अकेली रह जायेगी तब यह कैसे करेगी? मैं उसको पढ़ाने के लिये टीचर रखूँगा उसको पढ़ना लिखना सिखाऊँगा।"

साधु बोला — "मैजेस्टी। मैं इस बच्ची को बहुत प्यार करता हूँ सो इसकी खुशी के लिये मैं इसको आपको महल में ले जाने की इजाज़त देता हूँ। जो शिक्षा आप इसको देंगे वह मेरे जैसे साधु के लिये तो इसको देना बिल्कुल ही नामुमकिन है।"

राजा ने उस लड़की को अपने साथ अपने घोड़े पर बिठाया और अपने महल चल दिया। महल पहुँच कर उसने उसको दो स्त्रियों के हवाले कर दिया।

जब राजा को उस लड़की के गुणों का पता चला तो उसने सोचा कि वह खुद ही उससे शादी कर के उसको अपनी रानी बना लेगा। सो उसने वर्मवुड से शादी कर ली और इस तरह से वर्मवुड उस राज्य की रानी बन गयी। राजा उससे पागलपन की हद तक प्यार करता था।

एक दिन राजा को कहीं बाहर जाना था सो उसने रानी से कहा — "वर्मवुड, मुझे कहीं जाना है। पर मुझे चाहे कितनी भी कम देर के लिये जाना पड़े फिर भी मुझे तुमको यहाँ अकेले छोड़ने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता पर क्या करूँ।"

कह कर राजा वहॉ से चला गया।

एक शाम राजा को अपने राज्य के बाहर कुछ राजकुमार और नाइट्स[98] मिल गये। वहॉ सबने संग साथ में अपनी अपनी पत्नियों की तारीफ करनी शुरू की।

राजा बोला — "करते रहो, तुम लोग जितनी चाहो अपनी अपनी पत्नियों की तारीफ करते रहो पर तुममें से किसी की भी पत्नी मेरी पत्नी जैसी नहीं हो सकती।"

यह सुन कर एक नाइट बोला — "मैजेस्टी, मैं शर्त लगाता हूॅ कि मैं अगर आपकी गैरहाजिरी में पलेरमो गया तो मैं आपकी पत्नी साथ कुछ समय गुजार कर जरूर आऊॅगा।"

राजा बोला — "नामुमकिन, यह नामुमकिन है।"

नाइट बोला — "क्या हम इस बात पर शर्त लगा लें?"

राजा बोला — "हॉ हॉ, लगा लेते हैं।"

उन्होंने जायदाद पर शर्त लगायी। उन्होंने एक समय भी निश्चित किया – एक महीना। और वह नाइट पलेरमो चला गया।

पलेरमो पहुॅच कर वह सुबह शाम राजा के महल की खिड़की के नीचे चक्कर काटने लगा। दिन निकलते चले गये पर उसको रानी की एक झलक भी देखने को नहीं मिली। महल की खिड़की हमेशा बन्द ही रहती थी।

---

[98] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

एक दिन जब वह वहॉ बहुत ही नाउम्मीदी से घूम रहा था तो वहॉ एक बुढ़िया आयी और उससे भीख मॉगने लगी। गुस्से में उसने कहा — "चली जा यहॉ से। मुझे तंग न कर।"

बुढ़िया बोली — "सरकार, आप इतना क्यों परेशान है? क्या चीज़ आपको इतना उदास कर रही है?"

इस पर नाइट ने उसको अपनी शर्त के बारे में बता दिया और कहा कि वह महल में अन्दर जाना चाहता था ताकि वह यह देख सके कि रानी कैसी दिखायी देती थी।

बुढ़िया बोली — "आप शान्त हो जायें सरकार, मैं देखती हूॅ कि क्या करना है।"

कह कर उस बुढ़िया ने एक टोकरी में अंडे और फल भरे और उनको ले कर महल की तरफ चली। महल के दरवाजे पर जा कर उसने रानी से मुलाकात की इच्छा जाहिर की। उसको इजाज़त मिल गयी।

जब वह रानी के साथ अकेली थी तो उसने रानी को गले लगाया और उसके कान में फुसफुसायी — "मेरी बेटी, तुम मुझे नहीं जानती पर मैं तुम्हारी एक रिश्तेदार हूॅ। और मुझे बहुत खुशी है कि मैं तुम्हारे लिये ये कुछ चीज़ें ला सकी।"

रानी को अपने किसी रिश्तेदार के बारे में बिल्कुल पता नहीं था। उसने सोचा शायद यह बुढ़िया उसकी कोई रिश्तेदार रही होगी।

उसने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको महल में रहने के लिये बुला लिया। उसने सबको उसकी इज़्ज़त करने के लिये भी कह दिया।

अब रानी के कमरे में वह कभी भी आ जा सकती थी और महल में कहीं भी कुछ भी कर सकती थी।

एक दिन जब रानी सो रही थी तो वह बुढ़िया रानी के कमरे में घुसी। उसके बिस्तर के पास पहुँची और उसकी चादर के नीचे झाँका तो उसने देखा कि उसकी नंगी कमर पर एक मस्सा[99] था। उसने बड़ी सावधानी से कैंची से उसके मस्से के कुछ बाल काट लिये और वहाँ से चल दी। वह अपने काम से बहुत खुश और सन्तुष्ट थी।

वे बाल ला कर उसने नाइट को दे दिये। जब नाइट के हाथ में रानी के मस्से के बाल आ गये और उसने उस बुढ़िया के मुँह से रानी का वर्णन सुन लिया तो उसने उस बुढ़िया को इनाम में बहुत सारे पैसे दिये और वहाँ से तुरन्त ही चल दिया।

निश्चित दिन पर वह राजा और दूसरे नाइट्स के पास पहुँचा। वे सब लोग यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थे कि शर्त कौन जीतेगा।

वहाँ पहुँच कर वह नाइट बोला — "योर मैजेस्टी, जो मैं अब आपसे कहने जा रहा हूँ मुझे उसके लिये बहुत अफसोस है। पर

[99] Translated for the word "Mole"

अब आप यह बताऐं कि यह सच है या नहीं – आपकी पत्नी ऐसी है कि नहीं... ।" और उसने उसके चेहरे का बहुत ही थोड़ा सा वर्णन दे दिया।

राजा बोला — "यह बिल्कुल ठीक है। पर इससे तो कुछ साबित नहीं होता क्योंकि यह सब तो तुम बिना उसको देखे किसी से सुन कर भी बता सकते हो।"

"तो मैजेस्टी फिर आप ध्यान से सुनें। यह सच है या नहीं कि आपकी पत्नी बॉये कन्धे पर एक मस्सा है?"

यह सुन कर राजा तो पीला पड़ गया। वह बोला — "हॉ है तो।"

तब उस नाइट ने एक लाकेट निकाला और कहा — "मैजेस्टी, मुझे यह कहते में अच्छा तो नहीं लग रहा पर यह लाकेट यह साबित करता है कि मैं यह शर्त जीत गया।" कॉपते हाथों से उसने वह लाकेट खोला और उसमें से रानी के मस्से के बाल निकाले और राजा को दिखाये। उन बालों को देख कर तो राजा का सिर लटक गया।

तुरन्त ही राजा अपने महल लौटा। काफी दिनों की गैरहाजिरी के बाद में जब राजा घर आया तो वर्मवुड हॅसती हुई उससे मिलने आयी पर राजा ने न तो उसे गले लगाया और न ही उससे बात की।

उसने अपने नौकरों से अपनी घोड़ा गाड़ी तैयार करने के लिये कहा और फिर अपनी पत्नी से कहा "चलो बैठो इसमें।" रानी उसमें

बैठ गयी उसके बाद राजा भी उसके बराबर में बैठ गया और गाड़ी की रास[100] अपने हाथ में ले ली।

रानी ने आश्चर्य से राजा की तरफ देखा भी कि आज राजा उसके साथ इस तरह से क्यों बर्ताव कर रहा था पर राजा तो बिल्कुल चुपचाप बैठा था।

जब वे लोग पैलैग्रिनो पहाड़[101] की तलहटी में पहुँचे तो राजा ने घोड़ों की रास खींची, गाड़ी रोकी और रानी से कहा "उतरो।" रानी बेचारी उतर गयी।

राजा ने गाड़ी से बिना उतरे उसको एक कोड़ा मारा जिससे वह गिर पड़ी। उसको वहीं उसी हालत में छोड़ कर वह वहाँ से चला गया।

इत्तफाक से उस दिन एक डाक्टर और उसकी पत्नी उधर से सेन्ट रोज़ैली के मन्दिर[102] जा रहे थे। उन्होंने अपने बेटे के जन्म से पहले एक मन्नत मानी थी वे उसी को पूरा करने के लिये वहाँ जा रहे थे। उनके पीछे उनका एक नौकर अली उनके उस बेटे को ले कर आ रहा था।

जब वे पैलैग्रिनो पहाड़ की तलहटी के पास पहुँचे तो उन्होंने किसी के कराहने की आवाज सुनी। डाक्टर ने सोचा "यहाँ इस सूनी

[100] Translated from the word "Reins"
[101] Pellegrino Mountain
[102] The Sanctuary of St Rosali

जगह में यह कौन हो सकता है।" सो वह उसी तरफ चल दिया जिधर से वह कराहने की आवाज आ रही थी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो एक घायल और अधमरी स्त्री पड़ी हुई है। डाक्टर ने तुरन्त ही उसकी जितनी अच्छे तरीके से मरहम पट्टी कर सकता था उसकी मरहम पट्टी की और फिर अपनी पत्नी से कहा — "अब हम रोज़ैली के मन्दिर फिर कभी चलेंगे पहले हम इस स्त्री की सहायता कर लें। हम इसको घर ले चलते हैं और वहॉ इसको ठीक करने की कोशिश करेंगे।"

सो वे उसको अपने घर ले गये और वहॉ उसकी देखभाल की। डाक्टर की देखभाल में वर्मवुड जल्दी ही ठीक हो गयी।

डाक्टर ने उससे कितने ही सवाल पूछे पर रानी ने अपने बीते हुए दिनों के बारे में उनको कोई भी बात नहीं बतायी। न ही उनको यह बताया कि यह घटना उसके साथ कैसे हुई।

इस सबके बाद भी डाक्टर की पत्नी ने जब देखा कि वह स्त्री तो बहुत गुणों वाली है तो वह उसको पसन्द करने लगी और उसने उसको अपने घर में नौकरानी रख लिया। अब वह उनकी छोटी बच्ची को सॅभालती थी।

एक दिन डाक्टर बोला — "प्रिये उस दिन तो हम इस स्त्री की वजह से अपनी मन्नत पूरी नहीं कर पाये थे तो अब हम अपनी छोटी बेटी को इस स्त्री के पास छोड़ते हैं और अली के साथ अपनी उस मन्नत को पूरी करने के लिये सेन्ट रोज़ैली के मन्दिर चलते हैं।

सो अगले दिन वे अपनी बच्ची और उस स्त्री को सोता छोड़ कर घर से जल्दी ही निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने के बाद ही अली ने अपने माथे पर हाथ मारा और बोला — "मालिक, मैं खाने की टोकरी तो घर ही भूल आया।"

डाक्टर बोला — "अरे, तो जाओ और उसे जल्दी से ले कर आओ।"

खाने की टोकरी भूलने का तो उसका एक बहाना था। असल में तो इस नौकर को लग रहा था कि उसके मालिकों को यह नौकरानी बहुत पसन्द आ गयी थी सो उसको उस बेचारी के प्रति बहुत ही नफरत पैदा हो गयी थी।

वह तुरन्त घर की तरफ दौड़ा। वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि वह स्त्री और बच्ची तो अभी भी सो ही रहे थे।

उसने कसाई वाला एक बड़ा सा चाकू लिया और उससे उस छोटी बच्ची का गला काट दिया। गला काट कर वह वापस डाक्टर के पास चला गया।

जब वह स्त्री जागी तो वह खून में भीगी हुई थी। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि बच्ची का तो गला ही कटा हुआ है। देखते ही वह चिल्लायी — "ओ मेरे भगवान। बेचारे इसके माता पिता। मैं क्या करूॅ। मैं उनको क्या जवाब दूॅगी।"

परेशान हो कर उसने एक खिड़की खोली और वहॉ से कूद कर जितनी तेज़ भाग सकती थी बाहर भाग गयी।

भागती भागती वह एक खुले मैदान में आयी जहॉ टूटा फूटा एक महल खड़ा हुआ था। वह उस महल के अन्दर चली गयी। उस महल के अन्दर कोई नहीं था। वहॉ उसको एक सोफा दिखायी दे गया सो वह उस सोफे पर जा कर लेट गयी और डर और थकान की वजह से लेटते ही सो गयी।

X X X X X X X

अब हम रानी को यहीं सोता हुआ छोड़ते हैं और उस राजा के पास चलते हैं जो कोई लड़की नहीं चाहता था।

कुछ समय बाद उसकी रानी ने अपने पति को बताया कि उस समय उसने जिस लड़की को जन्म दिया था वह मरी नहीं थी बल्कि उसने उसको उसकी गौडमदर को दे दिया था। पर फिर उसने उसके बारे में कुछ नहीं सुना।

इसको सुन कर तो राजा बहुत बेचैन हो गया और एक दिन रानी से बोला — "प्रिये, मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने ऐसा फैसला किया और उस फैसले की वजह से तुमको ऐसा करना पड़ा।

मैं घर छोड़ कर जा रहा हूॅ और अब मैं तभी लौटूॅगा जब मुझे अपनी बेटी की कोई खबर मिल जायेगी।" और यह कह कर वह घर छोड़ कर चला गया।

वह चलता रहा चलता रहा। काफी दूर जाने के बाद जब रात हुई तो वह एक अकेली खुली जगह में खड़ा था। वहॉ एक टूटा फूटा महल खड़ा था। वह उस महल के अन्दर चला गया।

X X X X X X X

अब हम इस राजा को भी यहीं इस महल में छोड़ते हैं और उस राजा के पास चलते हैं जो अपनी रानी को पैलैग्रीनो पहाड़ की तलहटी में छोड़ कर चला गया था। वह राजा जितना अपनी पत्नी के बारे में सोचता था उसको उतना ही बुरा लगता था।

उसने उस नाइट से वह सब कुछ सुना तो था पर उसका मन नहीं मान रहा था कि वह सच था क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था।

वह सोचता रहा — "क्या हो अगर वह नाइट झूठ बोल रहा हो। क्या हो अगर मेरी पत्नी वाकई बेकुसूर हो। क्या वह अभी भी ज़िन्दा होगी या फिर वह मर गयी होगी? यहॉ इस महल में उसके बिना मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। मैं उसको सारी दुनियॉ में ढूँढूँगा और अब मैं तभी वापस लौटूँगा जब मुझे उसकी कोई खबर मिल जायेगी।"

सो वह भी अपनी पत्नी को ढूँढने के लिये महल से निकल पड़ा और चलते चलते वह भी एक अकेली खुली जगह में आ गया जहॉ टूटा फूटा एक महल खड़ा था।

वह उस टूटे महल के अन्दर चला गया तो उसने देखा कि एक और राजा वहॉ एक आराम कुर्सी पर बैठा आराम कर रहा था। वह भी वहीं पास ही एक दूसरी गर्म पर जा कर बैठ गया।

X X X X X X X

अब हम इस राजा को भी यहीं इसी महल में छोड़ते हैं और उस डाक्टर के पास चलते हैं जिसने वर्मवुड को बचाया था। जब वह अपनी यात्रा से वापस आया तो घर में इस आशा से घुसा कि वह अपनी छोटी बेटी को देखेगा पर उसको तो वह मरी हुई दिखायी दी। उसका गला कटा हुआ था।

तो सबसे पहले उसके दिमाग में यही आया कि वह उस नौकरानी को ढूँढे क्योंकि वह उसको उसी के पास छोड़ कर गया था।

सो वह बोला — "अली, हमको उस नीच स्त्री को अगर जरूरत हो तो दुनियॉ भर में ढूँढना चाहिये और उसको उसी तरह से मारना चाहिये जैसे उसने हमारी बेटी को मारा है।"

सो वह भी अली को साथ ले कर उस स्त्री की खोज में निकल पड़ा। उसको ढूँढते ढूँढते वह भी एक अकेले खुले मैदान में आ पहुँचा जहॉ एक टूटा फूटा महल खड़ा था और वह भी उस महल में घुस गया।

अन्दर जा कर उसने इधर उधर देखा तो वहॉ दो राजाओं को बराबर बराबर दो आराम कुरसियों पर बैठे आराम करते पाया। वह डाक्टर और उसका नौकर अली दोनों ही उनके सामने वाली कुर्सियों पर जा कर बैठ गये।

अब चारों वहॉ बैठे थे – चुपचाप। हर एक अपने अपने विचारों में खोया हुआ था। कमरे के बीच में एक लालटेन जल रही थी जिसको तेल की जरूरत थी।

तभी वहॉ एक तेल डालने वाली कुप्पी[103] आयी और उसने लालटेन से कहा — "ज़रा सा नीचे हो जाओ तो मैं तुम्हारे अन्दर तेल डाल दूँ।"

यह सुन कर लालटेन थोड़ा नीचे को हो गयी और तेल डालने वाली कुप्पी ने उसमें तेल डाल दिया।

तेल डालने के बाद कुप्पी ने लालटेन से पूछा — "क्या तुम्हारे पास मुझे बताने के लिये कोई मजेदार बात है?"

लालटेन बोली — "तुम मुझसे क्या सुनना चाहोगी? मेरे पास तुम्हें बताने के लिये कुछ मजेदार बात तो है।"

"तो बताओ न।"

लालटेन बोली — "तो सुनो। एक राजा था जो लड़की नहीं चाहता था। उसने अपनी पत्नी से कहा कि अगर उसने एक और लड़की को जन्म दिया तो वह उस लड़की को मार डालेगा।

[103] Translated for the "Oil Cruest:". See its picture above.

इत्तफाक से रानी ने अगली बार भी एक लड़की को जन्म दिया। रानी अपनी बच्ची को मरने देना नहीं चाहती थी सो उसने उसको बचाने के लिये उसको तुरन्त ही वहॉ से कहीं और भेज दिया।

आगे सुनो। जब यह बच्ची बड़ी हुई तो एक राजा ने उससे शादी कर ली। कुछ नाइट्स ने इस राजा को धोखा दिया और यह राजा उसको पैलैग्रीनो पहाड़ की तलहटी में ले गया, उसको मारा और उसको वहीं जमीन पर बेहोश पड़ा छोड़ कर वहॉ से चला गया।

एक डाक्टर उधर से जा रहा था जिसने उसके कराहने की आवाज सुनी।"

जैसे जैसे लालटेन अपनी कहानी आगे बढ़ाती जा रही थी वहॉ बैठे अधसोये लोगों की ऑखें खुलती जा रही थीं। उन्होंने एक दूसरे की तरफ देखा और अपनी अपनी कुरसियों से उछल पड़े। अली तो यह सब सुन कर पत्ते की तरह कॉपने लगा।

लालटेन ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "अब तुम ज़रा यह सुनो। उस डाक्टर ने क्या किया जब उसने वहॉ एक लड़की को घायल पड़े देखा तो वह उसको अपने घर ले गया और बाद में उसको अपनी बेटी की आया बना दिया।

उनके घर में उनका एक नौकर भी था जो उस आया से बहुत जलता था सो उसने उस छोटी बच्ची को मार दिया और सारा जुर्म उस बेचारी आया पर आ पड़ा।"

तेल डालने वाली कुप्पी एक लम्बी आह भर कर बोली — "वह बेचारी आया। पर वह आया अब है कहाँ? क्या वह ज़िन्दा है या मर गयी?"

लालटेन बोली — "श श श श। वह ऊपर वाले कमरे में सोफे पर सो रही है। यहाँ उसका राजा पिता और राजा पति बैठे हैं जो अपने किये पर पछता रहे हैं और उसको ढूँढ रहे हैं।

और वह डाक्टर भी यहीं बैठा है जो उससे बदला लेने की इच्छा से उसको ढूँढ रहा है। वह समझता है कि उसकी बच्ची का खून उसी ने किया है।"

तभी राजा पिता, राजा पति और डाक्टर अपनी अपनी कुर्सियों से उठे। इससे पहले कि अली वहाँ से बच कर भागता डाक्टर ने तुरन्त ही अली को पकड़ लिया। तीनों ने मिल कर उसको मार दिया।

फिर वे सब ऊपर दौड़े और उस काउच के पास घुटनों पर बैठ गये जिस पर वर्मवुड सो रही थी।

राजा पिता बोला — "यह मेरी है। यह मेरी बेटी है।"

राजा पति बोला — "यह मेरी है। यह मेरी पत्नी है।"

डाक्टर बोला — "यह मेरी है। मैंने इसकी जान बचायी है।"

आखीर में वह उस राजा के पास चली गयी जो उसका पति था। फिर उसने वर्मवुड के पिता राजा और डाक्टर को अपनी पत्नी के लौट आने की खुशी मनाने के लिये बुलाया। उसके बाद वे सब एक खुश परिवार की तरह से रहे।

14 सही आदमी[104]

एक बार की बात है कि एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। उनके एक बच्चा था जिसे वे तब तक बैप्टाइज़ नहीं करवाना चाहते थे जब तक कि उनको उसका गौडफ़ादर के लिये उसको कोई सही आदमी न मिल जाये।

आदमी ने बच्चे को अपनी बॉहों में लिया और किसी सही आदमी को ढूँढने के लिये बाहर सड़क पर चला गया कुछ दूर जाने के बाद उसको एक आदमी मिला जो हमारे लौर्ड थे।

उसने उनसे कहा — "मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय सही आदमी हैं।"

लौर्ड बोले — "मैं तो यह नहीं जानता कि सही आदमी हूँ या नहीं।"

सो वह आदमी उनको वहीं छोड़ कर और आगे बढ़ा तो उसको एक स्त्री मिली जो मडोना[105] थी। उसने उससे भी कहा — "मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय और सही हैं।"

---

[104] The Just Man. Translated from the book : "Italian Popular Folktales. By James Frederich Crane. 1885.

[105] Madonna is another name of Mary – Jesus' mother.

मडोना बोली — "मुझे नहीं मालूम कि मैं सही और न्यायप्रिय हूॅ या नहीं। तुम चलते जाओ तुमको जरूर ही कोई न कोई सही और न्यायप्रिय आदमी मिल जायेगा।"

सो वह फिर आगे चल दिया। आगे चल कर उसे एक और स्त्री मिली। यह मौत थी। वह उससे बोला — "मुझे आपके पास भेजा गया है क्योंकि मुझसे कहा गया है कि आप सही और न्यायप्रिय हैं। मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूॅ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय और सही हैं।"

मौत बोली — "हॉ मुझे विश्वास है कि मैं न्यायप्रिय और सही हूॅ। चलो बच्चे को बैप्टाइज़ करते हैं और फिर मैं तुम्हें दिखाती हूॅ कि मैं न्यायप्रिय और सही हूॅ या नहीं।"

तब उन्होंने बच्चे को बैप्टाइज़ कराया। उसके बाद मौत किसान को एक लम्बे कमरे में ले गयी जहॉ बहुत सारी रोशनियॉ जल रही थीं। किसान उस सबको देख कर आश्चर्यचकित रह गया उसने मौत से कहा — "गौडमदर ये रोशनियॉ यहॉ कैसी हैं।"

मौत बोली — ये रोशनियॉ सारी दुनियॉ के आदमियों की हैं। क्या तुम इन्हें देखना पसन्द करोगे। यह देखो यह तुम्हारी ज़िन्दगी की रोशनी है और यह तुम्हारे बेटे की ज़िन्दगी की रोशनी है।"

जब किसान ने देखा कि उसकी ज़िन्दगी की रोशनी तो बुझने वाली है तो उसने पूछा — "और तेल खत्म होने के बाद?"

मौत बोली — "तब तुमको मेरे साथ आना पड़ेगा क्योंकि मैं मौत हूँ।"

किसान चिल्लाया — "मुझ पर दया करो। मुझे मेरे बेटे की ज़िन्दगी की रोशनी में से थोड़ा सा तेल ले कर अपनी रोशनी में डालने दो।"

मौत बोली — "नहीं नहीं। मैं इस तरह का काम नहीं करती। तुमने एक न्यायप्रिय और सही आदमी चाहा था तो वैसा एक आदमी तुम्हें मिल गया है। अब तुम घर जाओ और अपना काम देखो सँभालो क्योंकि मैं तुम्हें बुलाने वाली हूँ।[106]

वेनिस की एक कहानी

यह कथा वेनिस में कही सुनी जाने वाली एक दंत कथा है जो यहाँ संक्षेप में दी गयी है। यह कथा मध्य कालीन युग में कही सुनी जाती थी। एक अमीर नाइट जिसने एक नीच और बुरी ज़िन्दगी गुजारी थी जब वह बूढ़ा हो जाता है तो पछताता है कनफ़ैस करता है और उसका पादरी उसको तीन साल की तपस्या करने के लिये कहता है।

नाइट उसकी इस बात को मानने से मना करता है क्योंकि उसको डर है कि वह दो साल में ही मर जायेगा। और केवल दो साल के लिये ही नहीं उसने एक साल या एक महीने तक के लिये

[106] Another Venetian version of this tale is in Widter-Wolf. (Tale No 3) – as "Godfather Death". There is one Sicilian version also – "Death and Her Godson". By Giuseppe Pitre. (Tale No 109).

मना कर दिया। वह केवल एक रात की तपस्या पर राजी हुआ। वह अपने घोड़े पर चढ़ता है अपने परिवार से विदा लेता है और चर्च पहुँचता है जो उसके घर से कुछ दूरी पर है।

कुछ दूर जाने के बाद वह देखता है कि उसकी बेटी उसके पीछे पीछे भागी हुई आ रही है यह कहने के लिये कि उसके आने के बाद कुछ डाकुओं ने महल पर हमला बोल दिया है।

वह अपने उद्देश्य से डिगता नहीं है और उससे कहता है वह घर वापस जाये घर पर महल की देखभाल करने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर हैं।

तभी एक नौकर चिल्लाता है कि महल में आग लग गयी है और उसकी अपनी पत्नी को लोग मार रहे हैं और वह सहायता के लिये चिल्ला रही है। नाइट अपने घर की देखभाल के लिये अपनी जगह अपने नौकरों को शान्ति से अपने रास्ते पर चलता चला जाता है और उससे कहता है कि अब उसके पास इसके लिये कोई समय नहीं है।

आखिर में वह चर्च में घुसता है और अपनी तपस्या शुरू करता है। चर्च की देखभाल करने वाला उसको वहाँ से उठाने की कोशिश करता है ताकि वह चर्च बन्द कर सके।

एक पादरी उसको वहाँ से जाने के लिये कहता है क्योंकि वह मास सुनने का अधिकारी नहीं है। रात को बारह चौकीदार आते हैं

जो उसको अपने साथ जज के पास चलने के लिये कहते हैं। पर वह किसी के कहे से हिल कर भी नहीं देता।

रात को दो बजे सिपाहियों की एक टुकड़ी आती है और उसको चारों तरफ से घेर कर उसको जाने के लिये कहती है। फिर सुबह पॉच बजे कुछ लोग वहॉ आते हैं और उसको वहॉ से भगाने की कोशिश करते हैं "हमको इसे बाहर निकाल देना चाहिये।" तब चर्च जलने लगता है और नाइट आग में चारों तरफ से घिर जाता है पर फिर भी वह वहॉ से कहीं जाता नहीं है।

आखिर जब नियत समय आता है तभी वह चर्च छोड़ कर घर लौटता है तो देखता है उसके किसी परिवार वाले ने महल नहीं छोड़ा जितने भी लागों ने उसे तपस्या के समय तंग किया वे सब शैतान के लोग थे उसको बहकाने के लिये।

उस समय नाइट को पता चलता है कि वह कितना बड़ा पापी था। उसके बाद वह यह घोषित कर देता है कि वह अब ज़िन्दगी भर तपस्या करेगा।

15 लौर्ड सेंट पीटर और अपोसिल्स[107]

एक बार लौर्ड अपने तेरह अपोसिल्स के साथ यात्रा पर निकले हुए थे कि वे एक ऐसे गॉव में आये जहॉ कोई रोटी नहीं थी। मालिक ने पीटर से कहा — "पीटर। तुम सब लोग एक एक पत्थर उठा कर ले चलो।"

सो उन सब लोगों ने एक एक पत्थर उठा लिया। सबने तो बहुत बड़े बड़े पत्थर उठाये और पीटर ने एक बहुत छोटा सा ही पत्थर उठाया। इस तरह सारे लोग तो बोझे से लदे हुए चल रहे थे पर पीटर बहुत आसानी से चल रहा था।

मास्टर बोले — "चलो अब दूसरे गॉव चलते हैं। अगर वहॉ पर रोटी होगी तो हम लोग वहॉ रोटी ख़रीद लेंगे और अगर नहीं हुई तो मैं तुम्हें दुआ दूँगा और तुम सबके पत्थर रोटी बन जायेंगे।"

वे दूसरे शहर में पहुँचे और वहॉ अपने अपने पत्थर रख दिये और आराम करने लगे। मास्टर ने उनके पत्थरों को दुआ दी तो वे सब रोटी बन गये। जिनके पत्थर बड़े बड़े थे उनकी रोटियॉ बड़ी बड़ी बनी थीं पर पीटर के पास तो छोटा सा पत्थर था सो उसकी रोटी बहुत छोटी सी बनी। उसका तो दिल ही डूब गया।

---

[107] Lord St Peter and the Apostles. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

वह मास्टर के पास पहुँचा और बोला — "मास्टर अब मैं खाना कैसे खाऊँ।"

"ओह मेरे भाई तुम इतना छोटा सा पत्थर ले कर क्यों चले। दूसरे लोग जो बड़े बड़े पत्थर ले कर चले उनके पास तो बहुत सारी रोटी है।"

वे फिर आगे चले तो मास्टर ने फिर से उन लोगों को पत्थर उठा कर ले चलने के लिये कहा। सेंट पीटर ने इस बार चालाकी की कि उसने बहुत बड़ा पत्थर उठाया जबकि दूसरे शिष्य छोटे छोटे पत्थर ही उठा कर चले।

लौर्ड ने अपने दूसरे शिष्यों से कहा — "अबकी बार हम पीटर के ऊपर थोड़ा हँसेंगे।"

वे एक दूसरे गॉव में आ पहुँचे। तो सब शिष्यों ने अपने अपने हाथ के पत्थर फेंक दिये क्योंकि वहॉ पर तो बहुत रोटी मिल रही थी। पर सेंट पीटर तो अपने पत्थर के बोझ से दोहरा हुआ जा रहा था। उसका उतना बड़ा पत्थर लाना तो बेकार ही रहा न।

वे आगे चले तो उन्हें एक आदमी मिला। अब क्योंकि पीटर सबसे आगे था तो उसने उससे कहा — "लौर्ड बस अब आने वाले हैं तो तुम उनसे जो चाहे मॉग लेना।"

वह आदमी पास आ कर बोला — "लौर्ड मेरे पिता बहुत बूढ़े हैं और बीमार हैं। मास्टर मेहरबानी कर के उन्हें ठीक कर दीजिये।"

लौर्ड बोले — "क्या मैं डाक्टर हूँ? तुम्हें पता है कि तुमको क्या करना चाहिये। तुम उनको एक ओवन में डाल दो तो तुम्हारे पिता एक लड़के के रूप में बाहर आ जायेंगे।"

उसने ऐसा ही किया और उसके पिता एक बालक के रूप में बाहर आ गये।

सेंट पीटर को यह विचार बहुत अच्छा लगा। सो एक बार जब वह अकेला था वह ऐसे लोगों की खोज में निकला जिन्हें बूढ़ों को जवान बनाने की जरूरत हो।

इत्तफाक से उसको एक मिल गया जो लौर्ड को ढूँढ रहा था। उसकी मॉ मरने वाली हो रही थी तो वह उसका इलाज करवाना चाहता था।

सेंट पीटर ने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये।"

वह आदमी बोला — "मैं लौर्ड से मिलना चाहता हूँ। केवल लौर्ड ही मेरी सहायता कर सकते हैं।"

पीटर बोला — "खुशकिस्मती से पीटर यहॉ मौजूद है। तुम्हें मालूम है कि तुम्हें क्या करना चाहिये? एक ओवन गर्म करो और उसको उसमें रख दो। वह ठीक हो जायेगी।"

पीटर जाना पहचाना था सो उस आदमी ने पीटर का विश्वास कर लिया। वह तुरन्त घर गया ओवन गर्म किया और अपनी मॉ को उसमें रख दिया। वह बेचारी जल कर मर गयी। वह चिल्लाया "उफ़ इस नीच आदमी ने तो मेरी मॉ को मार ही दिया।"

वह जल्दी से पीटर के पास भागा। मास्टर भी वहीं थे। जब उन्होंने उस आदमी की कहानी सुनी तो बड़ी ज़ोर से हॅसते हुए पूछा — "यह तुमने क्या किया पीटर।"

सेंट पीटर ने माफी भी मॉगी पर वह आदमी अपनी मॉ के लिये रोता रहा। अब मास्टर क्या करें। उनको उस आदमी के घर जाना पड़ा और उसकी मॉ को फिर से ज़िन्दा करना पड़ा – एक सुन्दर लड़की के रूप में। इस तरह से मास्टर ने पीटर को परेशानी से बचाया।

X X X X X X X

इस कहानी की आखिरी घटना बहुत लोकप्रिय है और कई कहानियों में पायी जाती है। इसके एक रूप में एक बार लौर्ड एक जोकर के साथ यात्रा कर रहे थे। एक दिन लौर्ड पहले एक दफ़न में गये और फिर एक शादी में गये। लौर्ड ने मरे हुए आदमी को वापस ज़िन्दा कर दिया तो वहॉ उनको बहुत सारा इनाम दिया गया।

उन्होंने उसमें से कुछ पैसा जोकर को दे दिया जिससे उसने एक मेमना खरीदा उसे भूना और उसके गुर्दे उसने खुद खा लिये। लौर्ड ने उससे पूछा कि कि उसके गुर्दे कहॉ हैं तो उसने जवाब दिया कि उस देश के मेमनों के गुर्दे नहीं हुआ करते थे।

अगली बार लौर्ड एक शादी में गये और जोकर एक दफ़न में गया। पर वहॉ वह मरे हुए आदमी को ज़िन्दा नहीं कर सका सो

उसको एक धोखा देने वाला मान लिया गया सो उसको सूली पर चढ़ाने की सजा दे दी गयी।

लौर्ड यह जानना चाहते थे कि मेमने के गुर्दे किसने खाये पर जोकर अपने पुराने जवाब पर ही जमा रहा कि उस मेमने के तो गुर्दे ही नहीं थे। पर इस झूठ के बावजूद लौर्ड ने मरे हुए आदमी को ज़िन्दा कर दिया और जोकर को आजाद कर दिया गया।

तब लौर्ड ने उसके साथ अपनी साझेदारी खत्म करनी चाही सो उन्होंने पैसे के तीन ढेर बनाये – एक अपने लिये दूसरा जोकर के लिये और तीसरा उस आदमी के लिये जिसने मेमने के गुर्दे खाये थे।

तब जोकर ने कहा — "भगवान की कसम। अब जब तुम ऐसा बोलते हो तो मैं तुम्हें बताता हूँ कि वे गुर्दे तो मैंने ही खाये थे। मैं तो इतना बूढ़ा हूँ कि अब मुझे झूठ नहीं बोलना चाहिये था।" इसलिये कुछ चीज़ें पैसे की सहायता से साबित की जा सकती हैं जिन्हें कोई आदमी मौत से बचने के लिये भी साधारण रूप से नहीं कहेगा।

16 लौर्ड, सेंट पीटर और लोहार[108]

एक बार की बात है कि एक छोटे से शहर में एक लोहार रहता था। वह एक बहुत अच्छा, मेहनती और अपने काम में बहुत ही होशियार आदमी था।

पर इस सबके लिये वह इतना घमंडी था कि जब तक कोई उसको प्रोफेसर कह कर न बुलाये वह उससे बात तक नहीं करता था। वैसे उसमें कोई खराबी नहीं थी पर उसके केवल इसी घमंड ने उसके लिये सबके दिलों में बड़ा असन्तोष फैला रखा था।

एक दिन सेंट पीटर[109] के साथ लौर्ड[110] उसकी दूकान में आये। लौर्ड जब बाहर जाते थे तो सेन्ट पीटर को अपने साथ ही रखते थे। लौर्ड ने लोहार से कहा — "प्रोफेसर, क्या तुम मुझे अपनी दूकान में थोड़ा सा काम करने दोगे?"

लोहार तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ और बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। आओ और जो चाहो वह कर लो। बोलो तुम क्या बनाना चाहते हो?"

---

[108] Lord, St Peter and the Blacksmith. From Venice. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

[109] St Peter was one of the 13 Apostles of Jesus Christ

[110] Here Lord word is used for Jesus Christ.

"यह तुम्हें जल्दी ही पता चल जायेगा।" और यह कह कर उन्होंने वहॉ से एक चिमटा[111] उठा लिया। उससे उन्होंने पीटर को पकड़ा और उसको उसकी भट्टी में तब तक रखा जब तक वह गर्म हो कर खूब लाल नहीं हो गया।

फिर उन्होंने उसको हथौड़े से चारों तरफ से खूब पीटा। दस मिनट के अन्दर अन्दर वह बूढ़ा गंजा अपोसिल एक बहुत सुन्दर नौजवान के रूप में बदल गया। उसके सिर पर तो बाल भी बहुत सुन्दर आ गये थे।

लोहार तो यह देख कर दॉतों तले उॅगली दबा बैठा। लौर्ड और सेन्ट पीटर ने उसको धन्यवाद दिया और वहॉ से चले गये।

कुछ देर बाद जब मास्टर लोहार को होश आया तो वह अपनी दूकान की दूसरी मंजिल पर दौड़ा गया जहॉ उसका बीमार पिता बिस्तर में लेटा हुआ था।

"पिता जी जल्दी यहॉ आइये। मैंने अभी अभी सीखा है कि आप जैसे आदमी को एक नौजवान आदमी कैसे बनाना है।"

उसका पिता कुछ डर कर बोला — "बेटे क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?"

"नहीं पिता जी। आप मेरा विश्वास करें। मैंने खुद देखा है। अब उसी तरीके से मैं आपको भी नौजवान बना सकता हूॅ।" कह कर वह उनको नीचे ले जाने की कोशिश करने लगा।

---

[111] Translated or the word "Tongs". See its picture above.

यह देखते हुए कि उसकी कोशिश काम नहीं कर रही है उसने अपने पिता को जबरदस्ती पकड़ा और नीचे अपनी दूकान में ले गया और उनके चिल्लाने और रोने के बावजूद उनको भट्टी में फेंक दिया।

पर जब वह उनको उस भट्टी में से निकालने लगा तो वह उसमें से उनकी केवल एक जली हुई टॉग ही निकाल सका। और जिसको जब उसने हथौड़े से पीटा तो वह तो एक ही बार में टुकड़े टुकड़े हो गयी। इससे वह बहुत दुखी हुआ और बहुत गुस्से से भर गया।

वह तुरन्त ही उन दोनों आदमियों को ढूँढने उनके पीछे पीछे भागा। उसकी खुशकिस्मती से वे दोनों उसको बाजार में ही मिल गये।

उनको देखते ही वह चिल्लाया — "जनाब। आपने क्या किया था। आपने तो मुझे धोखा दिया। मैं आपके तरीके की नकल कर रहा था कि उससे तो मेरे पिता ज़िन्दा ही जल कर मर गये। मेहरबानी कर के जल्दी मेरे साथ आइये और अगर मेरी सहायता कर सकते हैं तो कीजिये।"

लौर्ड मुस्कुराये और बोले — "आराम से घर जाओ। तुम्हें तुम्हारे पिता ठीक और ज़िन्दा मिल जायेंगे पर मिलेंगे बूढ़े ही।"

यह सुन कर वह लोहार दौड़ा दौड़ा घर गया और यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसके पिता ज़िन्दा थे।

उस दिन से उसका घमंड टूट गया। अब जब भी कोई उसको प्रोफेसर कह कर बुलाता तो वह कहता — "प्रोफेसर? वह भी क्या बेवकूफी थी। वेनिस में कुलीन लोग रहते है और पादुआ[112] में प्रोफेसर। मैं तो केवल एक सीखतर[113] हूँ।

सेंट इलोइ को अपने घमंड के पाप की सजा कैसे मिली

लोहार के अपने काम का घमंड इसी तरह की एक और कहानी में पाया जाता है। यह आयरलैंड की कहानी है और कैनेडी की लिखी हुई है – "सेंट इलोइ को अपने घमंड के पाप के लिये सजा कैसे मिली"।[114]

एक सेंट धार्मिक बनने से पहले सुनार था पर कभी कभी वह मजे के लिये घोड़ों की नाल भी लगा लेता था। और हमेशा ही अपनी डींग हॉकता था कि उसको इन कामों में अपने जैसा कोई मास्टर नहीं मिला।

एक दिन एक अजनबी उसकी दूकान पर आया और उससे अपने घोड़े की नाल लगाने की इजाज़त मॉगी। इलोइ ने उसको इजाज़त दे दी। उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि अजनबी ने घोड़े की एक टॉग काटी और उसको ले कर वह उसकी दूकान में आ पहुँचा और वहॉ ला कर उसकी नाल लगा दी।

---

[112] Venice and Padua are two great important places in Italy.

[113] Translated for the word "Learner"

[114] "How St Eloi Was Punished For the Sin of Pride". – an Irish story written by Kennedy

अजनबी ने फिर उस टॉग को उठाया और इलोइ से पूछा कि क्या वह किसी और को जानता था जो इतना अच्छा काम कर सकता हो। इलोइ तो देखता का देखता रह गया कुछ बोल ही न सका। अजनबी ने वह टॉग बाहर ले जा कर घोड़े के चिपका दी।

इलोइ खुद भी इसको करने की कोशिश करता है पर इस काम को करने में बुरी तरह असफल रहता है। अजनबी जो इलोइ का रक्षक देवदूत[115] था घोड़े का इलाज करता है और इलोइ को उसके घमंड के लिये बुरा भला कहता है और फिर गायब हो जाता है।

धरती पर हमारे सेवियर की एक यात्रा

नस्ट[116] ने यह लोक कथा धरती पर हमारे सेवियर की एक यात्रा के नाम से दी है जो इससे कुछ अलग है और इस तरह से है —

"एक पिता अपने जुआरी बेटे को एक सिपाही बना देता है। पर वह लड़का एक तूफानी रात को घर छोड़ कर चला जाता है और एक सराय में जा कर ठहर जाता है। वहॉ वह एक आदमी से मिलता है जो उसको ऐसा लगता है कि वह उसकी सारी ज़िन्दगी की बातें जानता है। उस आदमी का नाम "सेवियर"[117] है।

सेवियर को यह मालूम है कि पीटर घर छोड़ कर चला गया है और उसको वापस आने के लिये मनाया जा रहा है पर वह उसको

[115] Translated for the words "Guardian Angel"

[116] Knust, Hermann.

[117] Savior – means the man who saves. Normally this word is used for Jesus Christ

बचा लेंगे। रोजी रोटी कमाने के लिये वह सेवियर उसको अपनी यात्रा में साथ ले लेते हैं और बीमारों को ठीक करते हैं। यह करने के लिये उनको एक मौका भी मिल जाता है।

एक अमीर आदमी बहुत बीमार है। सेवियर तीन दिन में उसको ठीक करने का वायदा करते हैं। सेवियर सब लोगों को वहॉ से हटा देते हैं। वह कुछ जड़ी बूटियों से एक काढ़ा[118] तैयार करते हैं और उस बीमार को ठीक कर देते हैं।

उस अमीर आदमी के रिश्तेदार सेवियर को कृतज्ञता के तौर पर बहुत सारी कीमती चीज़ें भेंट करते हैं पर सेवियर अपनी ज़िन्दगी चलाने के लायक उनमें से केवल कुछ चीज़ें ही लेते हैं। इससे उनका वह साथी इतना नाराज हो जाता है कि वह उनको छोड़ कर चला जाता है। वह खुद अलग से अपने आप बीमारों को ठीक करना चाहता है।

एक बार उसको एक राजा की बीमार लड़की को ठीक करने का मौका मिल जाता है तो वह राजा से यह वायदा करता है कि वह उसकी बेटी को ठीक कर देगा। हालॉकि वह उसको ठीक करने के लिये ठीक उसी तरीके से सब कुछ करता है जैसे सेवियर ने किया था पर फिर भी उस काढ़े से वह राजकुमारी मर जाती है।

राजा को जैसे ही यह सब पता चलता है वह पीटर को जेल में डलवा देता है। जब पीटर को जेल ले जाया जा रहा होता है तो

[118] Translated for the words “A Potion from Herbs”

रास्ते में उसको सेवियर मिलते हैं। वह उनसे प्रार्थना करता है कि वह उसे बचा लें। सेवियर उसकी प्रार्थना पर उसकी सहायता करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

सेवियर तब राजा के पास जाते हैं और उससे कहते हैं कि अगर वह कैदी को छोड़ देगा तो वह उसकी बेटी को ज़िन्दा कर देंगे।

राजा इस बात पर राजी हो जाता है पर साथ में उसको यह धमकी भी देता है कि अगर वह उसकी बेटी को ज़िन्दा नहीं कर पाया तो उसको भी मार दिया जायेगा।

खैर, सेवियर राजकुमारी को ज़िन्दा कर देते हैं तो राजा अपनी कृतज्ञता दिखाते हुए अपनी बेटी का हाथ सेवियर को देना चाहता है पर सेवियर उसको यह कहते हुए मना कर देते हैं कि ऐसे काम करते हुए धरती पर घूमना तो उनका पेशा है इसलिये वह राजकुमारी को स्वीकार नहीं कर सकते। और वह राजकुमारी को अपने साथी को देने के लिये कह देते हैं।

लौर्ड और सेंट पीटर एक स्त्री के घर

ऐसी ही एक लोक कथा वेनिस में भी कही सुनी जाती है। उसमें लौर्ड और सेन्ट पीटर एक गरीब स्त्री के मेहमान बनते हैं जिसको पास उनको सुलाने के लिये कोई बिस्तर नहीं है। सो वह उनके लिये

भूसे का बिस्तर बनाती है और उस पर वह पॉच ऐल[119] लम्बी एक चादर बिछाती है जो उसने उसी दिन नयी खरीदी है।

अगले दिन लौर्ड जब वहॉ से जाते हैं तो उसको वरदान दे जाते हैं कि वह सारा दिन वही काम करती रहेगी जिस काम से वह अपना दिन शुरू करेगी।

वह अपने मेहमानों की चादर उठाती है और उसके टुकड़े कर कर के उसे फाड़ती रहती है। इस तरह उसके पास बहुत सारा कपड़ा हो जाता है।

उसकी एक पड़ोसन जब इस बारे में सुनती है तो वह भी लौर्ड के साथ ऐसा ही करती है पर अपने मतलबीपन के लिये उनसे सजा पाती है।

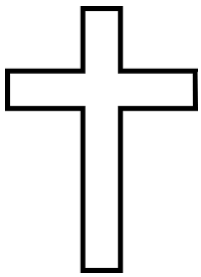

[119] Ell is a unit of measurement usually from the elbow of a man to the tip of his middle finger – about eighteen inches, so five ells are about two and a yards long.

17 इस दुनियॉ में एक रोता है दूसरा हॅसता है[120]

एक बार लौर्ड जब दुनियॉ बना रहे थे तो उन्होंने अपने एक अपोसिल को बुलाया और उससे कहा कि वह जा कर देखे कि दुनियॉ में क्या हो रहा है। अपोसिल ने देखा और बोला — "कितनी मजेदार बात है। लोग रो रहे हैं।"

लौर्ड बोले — "अभी तुमने सारी दुनियॉ देखी कहॉ है।"

अगले दिन लौर्ड ने अपोसिल से फिर कहा कि वह दुनियॉ को देखे कि वहॉ क्या हो रहा है। अपोसिल ने फिर देखा और बोला — "अरे यह तो बड़ी मजेदार बात है। यहॉ तो सारे लोग हॅस रहे हैं।"

लौर्ड ने फिर कहा — "अभी तुमने सारी दुनियॉ देखी कहॉ है।"

तीसरे दिन लौर्ड ने फिर कहा कि वह दुनियॉ में देखे कि क्या हो रहा है। सो उसने फिर से दुनियॉ में देखा तो बोला — "लौर्ड कहीं कोई रो रहा है तो कहीं कोई हॅस रहा है।"

लौर्ड बोले — "यह दुनियॉ है क्योंकि इसमें एक रोता है तो दूसरा हॅसता है।"

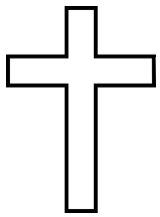

[120] In this World One Weeps and Another Laughs. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

18 गधा[121]

यह कहानी भी तब की है जब लौर्ड दुनियॉ बना रहे थे। उन्होंने सारे जानवर बनाये और फिर उनको नाम दिया। उन्होंने गधा भी बनाया। गधे ने बन जाने के बाद पूछा — "और मेरा नाम क्या है लौर्ड।"

लौर्ड बोले — "तुम्हारा नाम गधा है।"

गधा खुशी खुशी वहॉ से चला गया। कुछ समय बाद वह अपना नाम भूल गया तो वह फिर अपना नााम पूछने के लिये लौर्ड के पास आया तो लौर्ड ने कहा "गधा।"

कुछ समय बाद वह फिर अपना नाम पूछने आया और लौर्ड से पूछा — "माफ करें लौर्ड मेरा नाम क्या है।"

लौर्ड बोले — "गधा। गधा।"

गधा फिर चला गया पर कुछ समय बाद वह अपना नाम फिर भूल गया तो वह फिर से लौर्ड के पास आया — "लौर्ड मैं फिर भूल गया मेरा नाम क्या है।"

अब लौर्ड का धीरज छूट चुका था। वह गुस्से में आ कर उन्होंने उसके कान पकड़े और बहुत ज़ोर से खींचे तो वह चिल्लाया — "आस आस।"

[121] The Ass. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

उसके कान इतनी ज़ोर से खींचे गये थे कि वे काफी लम्बे हो गये थे और इसी लिये आज गधे के कान लम्बे हैं।

हम भी किसी के कान इसलिये खींचते हैं ताकि वह उस बात को भूल न सके जिस बात पर उसके कान खींचे गये हैं।

एक दूसरी दंत कथा हमें बताती है कि जब क्राइस्ट दुनियॉ में घूम रहे थे तो उनको बहुत ज़ोर की प्यास लगी। वह एक शहर पहुँचे तो वहॉ उनको एक स्त्री बालों में कंघी करती हुई दिखायी दी।

क्राइस्ट ने उससे कहा — "क्या आप मुझे एक गिलास पानी देंगीं। मैं प्यास के मारे मरा जा रहा हूँ।"

वह बोली — "मैं काम में लगी हूँ। यह पानी का समय नहीं है।"

क्राइस्ट ने तुरन्त ही कहा — "उस चोटी पर आफत आये जो शुक्रवार को बनायी जाये।" और अपनी यात्रा पर चले गये।

कुछ समय बाद उन्होंने एक स्त्री को रोटी के लिये आटा मलते हुए देखा। उन्होंने उससे कहा — "ओ भली स्त्री क्या आप मुझे थोड़ा पानी देंगीं पीने के लिये।"

"ओह जितना चाहे उतना पियो।" कह कर कर वह अन्दर से पानी ले आयी और क्राइस्ट को पीने के लिये दे दिया। तो क्राइस्ट बोले — "उस आटे को मेरी दुआ लगे जो शुक्रवार को बनाया जाता हो।"

इसी लिये कुछ स्त्रियॉ शुक्रवार को अपने बालों में कंघी नहीं करतीं।

लौर्ड की इच्छा

एक व्यंग्यात्मक दंत कथा है जिसका नाम है "लौर्ड की इच्छा"[122]। यह कथा बताती है कि जब लौर्ड के दुनियॉ छोड़ने का समय आया तो वह कुछ परेशान थे कि वह सब कुछ दुनियॉ में किसके ऊपर छोड़ जायें।

अगर वह किसी भलेमानस[123] पर छोड़ जाते हैं तो कुलीनता[124] क्या करेगी। और अगर वह किसी कुलीन आदमी पर छोड़ कर जाते है तो भले लोग[125] और मजदूर और किसान क्या करेंगे।

वह जब ऐसा सोच रहे थे तो बहुत सारे भलेमानस आये और उन्होंने उनसे सब कुछ उनको देने के लिये कहा जो लौर्ड ने उन्हें दे दिया। उनके बाद पादरी लोग आये तो उनसे कहा गया कि सब कुछ तो भलेमानसों को दे दिया गया है तो वे बोले — "ओह शैतान।"

लौर्ड बोले — "तो ठीक है मैं तुम्हें शैतान देता हूॅ।"

तभी साधुओं[126] के मुॅह से निकला — "धीरज।"

---

[122] The Lord's Will.

[123] Translated for the word "Gentlemen"

[124] Translated for the word "Nobility"

[125] Translated for the word "Gentry"

[126] Translated for the word "Monks"

तो उन्हें धीरज दे दिया गया।

मजदूर चिल्लाये — "यह धोखा है।"

तो उनको धोखा दे दिया गया। आखीर में किसान आये और मजबूरी से बोले — "जो भगवान की इच्छा।" और यह उनके हिस्से में आयी।

यही वजह है कि इस दुनियॉ में भले आदमी हुक्म चलाते हैं। शैतान पादरियों की सहायता करते हैं। साधु लोग धीरज वाले होते हैं। काम करने वाले लोग धोखाधड़ी करते हैं। और किसान लोगों को बहुत सारे ऐसे काम करने पड़ते हैं जो वे करना नहीं चाहते। उनको भगवान की इच्छा के आगे झुकना ही पड़ता है।

भला आदमी पापी के लिये सहता है [127]

इस कहानी में सेंट पीटर हमारे लौर्ड से शिकायत करता है कि निर्दोष लोग दोषी के लिये सहते हैं। हमारे लौर्ड उस समय तो इस बात का कोई जवाब नहीं देते पर कुछ देर बाद ही पीटर को मधुमक्खी के छत्ते का एक टुकड़ा तोड़ कर लाने को कहते हैं जिसमें मधुमक्खियॉ हों और उसको उसकी पोशाक में अन्दर रख देते हैं।

उसमें से एक मधुमक्खी पीटर को काट लेती है तो पीटर गुस्से में आ कर उन सब मक्खियों को मार देता है।

[127] Salomone Marino. "The Just Suffers For the Sinner"

हमारे लौर्ड उसे इस बात पर बहुत डॉटते हैं तो पीटर कहता है कि "मैं कैसे बता सकता था कि इनमें से किस मधुमक्खी ने मुझे काटा था।"

तो हमारे लौर्ड बोले — "तो तुम क्या समझते हो कि मैं गलत होता हूँ जब मैं आदमियों को इस तरह से सजा देता हूँ?"

सब काम पैसे के लिये होते हैं[128]

एक बार एक गरीब भिखारी मर गया जिसने बहुत ही पवित्र ज़िन्दगी बितायी थी। वह स्वर्ग जाने के लिये बहुत बेताब था।

जब उसकी आत्मा दरवाजे पर पहुँची और उसने दरवाजा खटखटाया तो सेंट पीटर ने पूछा कि वह कौन है और उससे इन्तजार करने के लिये कहा। उस बेचारी आत्मा ने दरवाजे के बाहर दो महीने इन्तजार किया पर सेंट पीटर ने उसके लिये दरवाजा नहीं खोला।

इस बीच एक अमीर बैरन[129] मर गया तो वह तो स्वर्ग चला गया और बिना उसके खटखटाये हुए ही स्वर्ग के दरवाजे खोल दिये गये। सेंट पीटर बोले — "दरवाजा खोल दो। बैरन को अन्दर आने दो। आइये सर बैरन। मैं आपका नौकर। ओह यह तो हमारे लिये कितनी इज़्ज़त की बात है।"

---

[128] "All Things Are Done For Money"

[129] Baron is a high status in Imperial system. Baroness is its feminine.

भिखारी की आत्मा अपने आप में कुछ सिकुड़ सी गयी वह बोली — "दुनियॉ अकेली ही ऐसी नहीं है जहॉ पैसे को पूजा जाता है। स्वर्ग में भी यही कानून है कि सारे काम पैसे के लिये होते हैं।"

सेंट पीटर की मॉ

सेंट पीटर की मॉ भी एक कहानी का विषय है जिसने एक बहुत ही लोकप्रिय कहावत को जन्म दिया है। ऐसा कहा जाता है कि वह एक बहुत ही लालची स्त्री थी जिसने कभी किसी का भला नहीं किया था।

वास्तव में अपनी सारी उम्र उसने किसी को कुछ नहीं दिया था सिवाय एक भिखारिन को एक लीक की पत्ती के।

सो जब वह मरी तो उसको नरक में डाल दिया गया। पीटर ने लौर्ड से विनती की कि वह उसको नरक से निकाल ले। उसके इस एक दयावान काम के बदले एक देवदूत लीक की एक पत्ती दे कर वहॉ भेजा गया ताकि उसकी सहायता से वह उसको निकाल ले।

पर जब वह देवदूत उसको वह पत्ती पकड़वा कर बाहर निकाल रहा था तो नरक में जो और बुरी आत्माऐं पड़ी थीं उन्होंने भी वहॉ से बच कर निकलने के लिये उसका स्कर्ट पकड़ लिया। पर वह बहुत मतलबी थी। उसने उन सबको झटक दिया। इस झटकने में लीक की पत्ती टूट गयी और वे सब फिर से नरक में जा पड़ीं।

इस कहानी से ही कहावत निकली "सेंट पीटर की मॉ की तरह से"। यह कहावत सारी इटली में पायी जाती है।

19 सेंट पीटर और उसकी बहिनें[130]

सेंट पीटर की दो बहिनें थीं एक बड़ी और एक छोटी। उसकी छोटी बहिन कौनवैन्ट[131] चली गयी थी और नन[132] बन गयी थी।

सेंट पीटर यह देख कर बहुत खुश था सो वह चाहता था कि उसकी बड़ी बहिन भी नन बन जाये। उसने उसको भी कहा कि वह भी नन बन जाये पर उसने उसकी एक नहीं सुनी और बोली "मैं तो शादी करूँगी।"

कुछ दिनों बाद पीटर भी अपने बलिदानों के बाद स्वर्ग का चौकीदार बना दिया गया।

एक दिन लौर्ड[133] ने उससे कहा — "पीटर आज स्वर्ग का दरवाजा जितना चौड़ा तुमसे हो सके उतना चौड़ा खोल दो और उसमें से सारे दैवीय गहने और सजावट निकाल कर स्वर्ग को सजा दो क्योंकि आज यहाँ एक बहुत ही बड़ी दैवीय आत्मा आ रही है।"

---

[130] St Peter and His Sisters. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885. Crane has taken it from the collection of Christian Schneller. p 6.

[131] Convent is a community of persons devoted to religious life under a superior – normally of females. Wherever they live that building is also called Convent. There Superior is called Abbess.

[132] A nun is a member of a religious community of women, typically one living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent.

[133] Here Lord word is used for Jesus Christ

सेंट पीटर ने खुशी खुशी वह सब कर दिया जो जीसस ने उससे करने के लिये कहा था। उसने सोचा "यकीनन मेरी छोटी बहिन मर गयी होगी वही आज यहॉ आ रही होगी।"

जब सब कुछ तैयार हो गया तो उसने देखा कि उसकी बड़ी बहिन की आत्मा चली आ रही है। वह कई बच्चे छोड़ कर मर गयी थी और वे बच्चे भी उसके लिये कोई दुख नहीं मना रहे थे। लौर्ड ने उसको स्वर्ग में एक ऊॅची जगह दी।

पीटर तो यह कभी सोच भी नहीं सकता था कि उसकी बड़ी बहिन की आत्मा वहॉ आयेगी और लौर्ड उसको स्वर्ग में इतनी ऊॅची जगह देंगे।

वह सोचने लगा कि जब उसकी छोटी बहिन की आत्मा वहॉ आयेगी तब वह क्या करेगा।

कुछ दिनों बाद लौर्ड ने पीटर से कहा "आज स्वर्ग का दरवाजा बस थोड़ा सा ही खोलना। तुमने सुना?"

सेन्ट पीटर ने वही किया जैसा कि लौर्ड ने उससे करने के लिये कहा था पर वह यह सोचता ही रह गया कि "आज कौन आ रहा है।"

उसने देखा कि उसकी छोटी बहिन की आत्मा चली आ रही है। उसको स्वर्ग के उस तंग दरवाजे में से अन्दर घुसने में बहुत तकलीफ हो रही थी। इसके अलावा उसको स्वर्ग में भी अपनी बड़ी बहिन से काफी नीची जगह मिली।

पीटर बोला "यह तो उसका बिल्कुल उलटा हुआ जो मैं सोच रहा था। पर कम से कम अब मैं यह कह सकता हूँ कि हर पेशे की अपनी अपनी जगह होती है और अगर वह चाहे तो हर कोई स्वर्ग में आ सकता है।

20 पाइलेट[134]

हमारे लौर्ड की कहानियों का सिलसिला तब तक खत्म नहीं हो सकता जब तक पाइलेट जूडास और घूमते हुए ज्यू की कहानी न दी जायें।

ऐसा कहा जाता है कि यह सब एक समय में रोम में हुआ था। एक बार पत्थरों से भरी एक गाड़ी देश में एक अकेली जगह से गुजर रही थी कि उसका एक पहिया जमीन में धॅस गया।

कुछ देर के लिये तो उसे कोई निकाल ही नहीं सका पर अन्त में उसको निकाल लिया गया पर उसको निकालने के बाद वहॉ एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया जिसके नीचे एक बहुत ही अॅधेरा कमरा था।

लोगों ने पूछा — "इस गड्ढे में कौन उतरना चाहता है?"

"इस गड्ढे में मैं उतरूॅगा।"

सो उन्होंने जल्दी ही एक रस्सी ढूॅढ ली और उस आदमी को उस रस्सी की सहायता से उस अॅधेरे गड्ढे में उतार दिया। इस आदमी का नाम मास्टर फ्रान्सिस[135] था।

---

[134] Pilate. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885. Crane has taken it from the collection of Giuseppe Pitre. (Tale No 119)

[135] Francis – name of the man who got down in the dark room underground.

जब यह आदमी नीचे उतर गया तो यह अपने दॉये हाथ की तरफ घूमा तो इसको उधर एक दरवाजा दिखायी दिया। उसने दरवाजा खोला तो अपने आपको अॅधेरे में पाया।

फिर वह अपने बॉये हाथ की तरफ मुड़ा तो उसने उधर भी वैसा ही पाया। फिर वह सामने की तरफ गया तो उसने उधर भी वैसा ही पाया।

वह एक बार फिर घूमा और उसने उस तरफ का दरवाजा खोला तो उसने क्या देखा कि एक आदमी एक मेज के सामने बैठा है। उस मेज पर उसके सामने एक कलम, स्याही और एक लिखा हुआ कागज रखा है और वह उसे पढ़ रहा है।

जब उसने उसे पढ़ना खत्म कर लिया तो वह उसे फिर से पढ़ने लगा। पर उसने उस कागज पर से अपनी ऑख ऊपर नहीं उठायी।

मास्टर फ्रान्सिस एक बहुत ही बहादुर आदमी था। वह उस आदमी के पास गया और उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया और अपना पढ़ना जारी रखा। मास्टर फ्रान्सिस ने उस आदमी से फिर पूछा — "तुम कौन हो?" फिर भी वह आदमी कुछ नहीं बोला।

पर मास्टर फ्रान्सिस भी उसको छोड़ने वाला नहीं था। उसने उससे तीसरी बार पूछा — "तुम कौन हो?"

इस बार वह बोला — "घूम जाओ और अपनी कमीज खोलो तो मैं तुम्हारी पीठ पर लिख दूँगा कि मैं कौन हूँ। जब तुम यहाँ से जाओ तो तुम सीधे पोप के पास जाना और उसको यह पढ़वाना कि मैं कौन हूँ। पर याद रखना कि इसे अकेले पोप को ही पढ़वाना किसी और को नहीं और जरूर पढ़वाना।"

मास्टर फ्रान्सिस घूम गया और उसने अपनी कमीज खोल दी। उस आदमी ने उसकी पीठ पर कुछ लिखा और फिर अपनी कुर्सी पर जा कर बैठ गया।

यह तो ठीक था मास्टर फ्रान्सिस एक बहुत ही बहादुर आदमी था पर वह लकड़ी का बना हुआ तो नहीं था। उस समय तो वह तो डर के मारे बस मर सा ही गया।

फिर जब वह होश में आया तो उसने अपनी कमीज ठीक की और उससे पूछा — "तुम यहाँ कब से हो?" पर उसे इसका भी कोई जवाब नहीं मिला।

यह देख कर कि उससे सवाल पूछना अपना समय खराब करना था उसने बाहर के लोगों को इशारा किया कि वे उसे ऊपर खींच लें सो उन्होंने उसे ऊपर खींच लिया।

जब उन्होंने उसे देखा तो वे तो उसे पहचान ही नहीं सके क्योंकि वह तो सारा सफेद हो गया था और नब्बे साल की उम्र का बूढ़ा लग रहा था।

एक बोला — "वहाँ क्या था? वहाँ क्या हुआ?"

वह बोला — "कुछ नहीं कुछ नहीं। तुम लोग मुझे पोप के पास ले चलो मुझे उससे कुछ कहना है।"

सो उनमें से दो आदमी उसको पोप के पास ले गये। पोप के पास जा कर उसने उसको वह सब कुछ बताया जो उसके साथ उस अँधेरे कमरे में हुआ था। फिर उसने अपनी कमीज उतारते हुए कहा — "योर होलीनैस, इसे पढ़िये।"

पोप ने उसे पढ़ा — "मैं पाइलेट[136] हूँ।"

और जैसे ही पोप ने मुस्कुराते हुए ये शब्द पढ़े तो वह आदमी तो बिल्कुल ही बुत बना खड़ा रह गया।

और यही कहा जाता है कि वही आदमी पाइलेट था जिसको वहाँ गुफा में रहने की सजा मिली थी।

वह हमेशा ही उस कागज पर से आँखें हटाये बिना ही वह वाक्य पढ़ता रहता था जो उसने जीसस क्राइस्ट के ऊपर पढ़ा था।

यही उस पाइलेट की कहानी है जिसको न तो बचाया ही जा सका और न सजा ही मिली।

[136] Pilate – Pontius Pilate was the fifth prefect of the Roan province of Judea from 26-36 AD. He served under Emperor Tiberius and is best known today for the trial and crucifixion of Jesus.

21 जूडास की कहानी[137]

जूडास के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि उसने एक इमली के पेड़ से लटक कर आत्महत्या कर ली थी। इस घटना से पहले इमली का पेड़ बहुत सुन्दर बड़ा और घना हुआ करता था। जूडास की आत्महत्या के बाद से अब वह बहुत छोटी सी बेआकार झाड़ी सी रह गयी है।[138] गद्दार की आत्मा को हवा में घूमते रहने की सजा दी गयी थी। जब कभी वह झाड़ी देखता है तो वह रुक जाता है और उसको लगता है कि कोई बदकिस्मत लाश उससे लटक रही है जिसे चिड़ियें और कुत्ते खा रहे हैं। यह लोकप्रिय कहानी कुछ ऐसे दी गयी है —

यह तो तुम सब जानते ही हो कि जूडास वह आदमी था जिसने जीसस को धोखा दिया था। सो जब जूडास ने जीसस को धोखा दे दिया तो जीसस ने उससे कहा — "तुम अपने किये का पश्चाताप कर लो तो मैं तुमको माफ कर दूँगा।"

पर जूडास? नहीं कभी नहीं। वह कभी पश्चाताप नहीं करेगा। वह स्वर्ग और धरती दोनों को नाउम्मीद हो कर कोसता हुआ अपना पैसा ले कर वहाँ से चला गया।

फिर उसने क्या किया?

जब वह इस तरीके से नाउम्मीद हो कर जा रहा था तो वह एक बड़े से इमली के पेड़ के सामने से गुजरा। उन दिनों इमली के पेड़ बहुत बड़े और छायादार हुआ करते थे। उसको देख कर और

[137] Story of Judas. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

[138] It is called "Vruca" which is the synonym for all that is worthless.

अपनी धोखेबाजी को याद करते हुए उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

उसने रस्सी का एक फन्दा बनाया और अपने आपको उस इमली के पेड़ से लटका लिया। और क्योंकि धोखा देने वाले जूडास को लौर्ड ने शाप दे दिया था इसलिये वह इमली का पेड़ सूख गया।

और उस दिन के बाद से वह पेड़ जैसा बड़ा होना भी रुक गया और छोटा और टेढ़ा मेढ़ा और उलझी हुई झाड़ी जैसा हो गया।[139]

इसकी लकड़ी भी किसी काम में नहीं ली जा सकती। न तो यह जलाने के काम आती है न इससे कोई चीज़ ही बन सकती है और यह सब इसलिये हुआ क्योंकि जूडास जो एक शापित आदमी था इस पेड़ से लटक गया था।

कुछ का कहना है कि जूडास नरक में भी सबसे नीची जगह पर गया है और वहॉ पर भी सबसे ज़्यादा दुख सह रहा है पर मैंने कुछ और लोगों से सुना है कि जूडास को इससे भी ज़्यादा कड़ी सजा मिली है।

उनका कहना है कि वह हवा में है और सारी दुनियॉ में घूम रहा है। और वह जहॉ है वहॉ से न तो वह ऊपर उठ सकता है और न ही नीचे जा सकता है।

[139] Maybe this happens in Italy. In India, even today, a tamarind tree is a very large tree.

और जिस किसी दिन वह जिस भी इमली की झाड़ी को देखता है वह उस पर अपना शरीर लटका हुआ देखता है जिसे कुत्ते फाड़ रहे होते हैं और जिसे चिड़ियें खा रही होती हैं।

उनका यह भी कहना है कि वह जो दर्द सह रहा है उसे बताया नहीं जा सकता। जीसस क्राइस्ट ने उसको इतना बड़ा धोखा देने का ऐसा ही शाप दिया था।

22 निराश मालकस[140]

एक ज्यू की एक मजेदार कहानी जिसने अपने हाथ की हथेली से हमारे लौर्ड को पीटने की कोशिश की[141] बाद में इसे मालकस के नाम से पहचाना गया जिसे सेंट जौन में बताया गया है।[142] इसका नाम है "निराश मालकस"।

यह मालकस एक ज्यू[143] था जिसने हमारे लौर्ड[144] को पीटा। यह ज्यू एक ऐसा बेरहम ज्यू था जिसकी बेरहमी को बताया नहीं जा सकता।

जब काइस्ट को पाइलेट के घर ले जाया जा रहा था तो इसी मालकस ने जीसस को अपने लोहे के दस्ताने पहने हाथों से एक ऐसा घूँसा मारा जिससे उनके सारे दाँत टूट गये थे।

इस बुरे काम के लिये लौर्ड ने उसको यह सजा दी थी कि वह सारे समय बिना आराम किये जमीन के नीचे के एक कमरे में खड़े खम्भे के चारों तरफ लगातार चलता ही रहे।

यह खम्भा एक गोल कमरे में खड़ा है और मालकस उसके चारों तरफ बिना आराम किये घूमे जा रहा है घूमे जा रहा है।

---

[140] Desperate Malchus. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885. Crane took it from the collection by Giuseppe Pitre. (Tale No 120).
In the Bible, Malchus is the servant of the Jewish High Priest Caiaphas who participated in the arrest of Jesus. According to the Bible, one of the disciples, Simon Peter, being armed with a sword, cut off the servant's ear in an attempt to prevent the arrest of Jesus.

[141] St. John. xviii, 22.

[142] St. John. xviii, 10

[143] Jew – a religion

[144] Here Lord means Jesus Christ

उनका कहना है कि वह इतना घूम चुका है कि उसके नीचे की जमीन कई गज नीचे तक टूट फूट गयी है और इसी वजह से वह खम्भा अब पहले से काफी ऊँचा दिखायी देता है क्योंकि जबसे लौर्ड को क्रास पर चढ़ाया गया है मालकस तभी से ऐसी ज़िन्दगी गुजार रहा है।

कहते हैं कि मालकस अब अपनी ऐसी ज़िन्दगी से इतना तंग आ चुका है और निराश हो चुका है कि जब वह उस खम्भे के चारों तरफ घूमता रहता हे तो वह उस खम्भे को पीटता रहता है उस पर सिर मारता रहता है गुस्से में भर जाता है और कराहता रहता है।

पर इतना सब होने के बावजूद वह मरता नहीं है क्योंकि लौर्ड ने उसको यही सजा दे रखी है कि उसको जजमैन्ट डे[145] तक ज़िन्दा रहना ही है।

[145] In Christian belief, it is the final and eternal judgment by God of the people in very nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

23 खम्भे के चारों तरफ मालकस[146]

मालकस की यह दूसरी लोक कथा इससे पहले वाली लोक कथा जैसी ही है पर उसका यह रूप इटली के वेनिस शहर में ज़्यादा लोकप्रिय है। वहॉ यह कथा इस तरीके से कही सुनी जाती है।

मालकस उन ज्यू[147] लोगों का सरदार था जिसने हमारे लौर्ड[148] को मारा। लौर्ड ने उन सबको तो माफ कर दिया था जिनका वह सरदार था पर उन्होंने मालकस को कभी माफ नहीं किया था क्योंकि उसने मडोना[149] को मारा था।

इस समय वह एक पहाड़ के नीचे बन्द है और वहॉ उसको बिना आराम किये इस दुनियॉ के आखीरी समय तक एक खम्भे के चारों तरफ घूमने की सजा मिली हुई है।

जब भी वह उस खम्भे के चारों तरफ घूमता है तो उस घूँसे की याद में जो उसने हमारे लौर्ड की मॉ को मारा था उस खम्भे को घूँसा मारता है।

---

[146] Malchus at the Column. From “Italian Popular Tales”. By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885. Crane has taken it from the collection of Dom. Giuseppe Bernoni “Leggende fantastiche…”
In the Bible, Malchus is the servant of the Jewish High Priest Caiaphas who participated in the arrest of Jesus. According to the Bible, one of the disciples, Simon Peter, being armed with a sword, cut off the servant's ear in an attempt to prevent the arrest of Jesus.

[147] Jew – a religion

[148] Here Lord means Jesus Christ

[149] The Madonna and Child or The Virgin and Child is often the name of a work of art which shows the Virgin Mary and the Child Jesus. The word Madonna means "My Lady" in Italian.

वह उस खम्भे के चारों तरफ इतना ज़्यादा चल चुका है कि वह जमीन में काफी धॅस गया है क्योंकि उसके चलने से वह जमीन वहॉ से टूटती जा रही है। इस समय उसकी केवल गरदन ही बाहर है।

जब उसका सिर भी उस जमीन के अन्दर चला जायेगा तब यह दुनियॉ खत्म हो जायेगी। तब भगवान उसको उसके लिये बनायी जगह भेज देंगे।

कुछ लोग हैं जो उससे मिलने आते रहते हैं। जब भी कोई उससे मिलने जाता है तो वह उनसे पूछता है कि क्या अभी बच्चे जन्म ले रहे हैं।

और जब वे कहते हैं कि "हॉ" तो वह एक गहरी सॉस भर कर कहता है कि "ओह तो फिर अभी समय नहीं आया है।"

क्योंकि उसका समय आने से सात साल पहले यानी इस दुनियॉ के खत्म होने से सात साल पहले से बच्चे पैदा होने बन्द हो जायेंगे। वह उसी समय का इन्तजार कर रहा है।

24 बुत्ताद्यु की कहानी[150]

यह दंत कथा हमें उस कहानी की याद दिलाती है जिसमें एक घूमता हुआ ज्यू है जो सिसिली में "बुत्ताद्यु" के नाम से जाना जाता है। या फिर "ज्यू जिसने जीसस काइस्ट को मारा" के नाम से जाना जाता है।[151] यह ज्यू सिसिली में प्रगट भी हो चुका है।

सालापरूता में रहने वाले एक किसान ऐन्टोनियो कैसियो की बेटी ने उसके अपने पिता के साथ सामना होने का हाल इस तरह से दिया है।

यह जाड़ों की बात है। मेरे पिता स्कैलोन में भंडारघर में थे। वहॉ वह आग के पास बैठे आग की गर्मी ले रहे थे कि उन्होंने एक अजीब सा आदमी उसमें घुसते हुए देखा जो वहॉ के आम लोगों से कुछ अलग तरह के कपड़े पहने था।

उसने पीली लाल और काले रंग की धारियों वाली ब्रीचेज़ पहन रखी थी और वैसी ही टोपी पहन रखी थी। मेरे पिता उसको देख कर डर गये। उनके मुॅह से निकला — "ओह यह कैसा आदमी है।"

आदमी बोला — "डरो नहीं। मेरा नाम बुत्ताद्यु है।"

---

[150] The Story of Buttadeu. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

[151] Buttadeu. Known as "The Jew Who Repulsed Jesus Christ".

मेरे पिता बोले — "ओह। मैंने सुना है। अगर आपकी खुशी हो तो कुछ देर यहाँ बैठिये और मुझसे कुछ कहिये।"

वह आदमी बोला — "मैं बैठ नहीं सकता। मुझे भगवान ने हमेशा चलते रहने की सजा दी हुई है।"

और जब वह यह सब कह रहा था तभी भी वह इधर उधर टहल ही रहा था और बहुत बेचैन था।

फिर वह बोला — "मैं जा रहा हूँ। मैं तुम्हें यहाँ छोड़े जाता हूँ। पर इसकी याद में हमारे लौर्ड के दाँये हाथ को तुम मेरे लिये श्रद्धा[152] कहना। और पाँच और श्रद्धा उनके बाँये हाथ की तरफ कहना। और मैरी से कहना कि मैं उसके बेटे की वजह से कितनी परेशानी सह रहा हूँ। नमस्ते।"

"अच्छा विदा।"

"विदा। मेरा नाम बुत्ताद्यु है।"

[152] Translated for the word "Credo".

25 क्रिवोलियू की कहानी[153]

संतों की पहली दंत कथा है "पत्थर पर ग्रिगोरी" जो मध्य कालीन युग की कविताओं में बहुत प्रचलित थी। इटली में भी इसके कई रूप प्रचलित हैं पर यहॉ इस कथा का जो सबसे पूरा वर्णन उपलब्ध है वही लिया गया है। कहते हैं कि रोम के सेंट पीटर्स स्क्वायर में उनका मकबरा मौजूद है।

एक बार की बात है कि एक भाई बहिन थे जिनके माता पिता नहीं थे। वे अकेले ही एक साथ रहते थे। वे एक दूसरे को इतना प्यार करते थे कि उन्होंने इस वजह से एक ऐसा पाप कर लिया जो उन्हें किसी भी हालत में नहीं करना चाहिये था।

जब समय आया तो बहिन ने एक बेटे को जन्म दिया जिसे भाई ने छिप कर बैप्टाइज़ कर दिया। फिर उसने उस बच्चे के कन्धों पर एक कौस खोद दिया जिसमें लिखा था "क्रिवोलियू जिसका बैप्टाइज़ेशन हो चुका है और जो एक भाई बहिन का बेटा है"।

इस तरह से उस पर निशान बना कर उन्होंने उसे एक बक्से में रख दिया और समुद्र में फेंक दिया। अब कुछ ऐसा हुआ कि उसी समय एक मछियारा अपनी नाव ले कर समुद्र में मछली पकड़ने

---

[153] The Story of Crivoliu. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.
Crivoliu is a corrupt form of Gregory and this legend is a peculiar transformation of the well-known legend of "Gregory on the Stone".

निकला था। उसने एक बक्सा समुद्र की लहरों पर बहता हुआ देखा तो उसने सोचा कि लगता है कि शायद कोई जहाज़ समुद्र में डूब गया है। मैं इस बक्से को ले कर आता हूँ शायद इसमें मुझे कोई काम की चीज़ मिल जाये।

सो उसने अपनी नाव उस तरफ खे दी और उस बक्से को उठा लिया। जब उसने उस बक्से को खोला तो उसमें तो उसको एक छोटा सा बच्चा मिला। उसको उस बच्चे पर तरस आ गया और वह उसे अपने घर ले गया।

और अपनी पत्नी को देते हुए बोला — "हमारा सबसे छोटा बच्चा तो अब दूध पीने के लिये काफी बड़ा हो गया है तो तुम उसकी बजाय अब इस बच्चे को दूध पिला कर पालो।"

सो उसकी पत्नी ने छोटे क्विोलियू को ले कर अपनी छाती से लगाया उसको दूध पिलाया और उसे पाला पोसा। उसने उसे उतना ही प्यार दिया जितना कि वह अपने किसी बच्चे को करती। बच्चा बढ़ता गया बड़ा हो गया और दिन पर दिन अक्लमन्द और ताकतवर होता गया।

मछियारे के दूसरे बेटे उससे जलने लगे क्योंकि उनके माता पिता उस उठाये हुए बच्चे को ज़्यादा प्यार करते थे हालॉकि वे उनको भी करते थे। जब वे उसके साथ खेलते और झगड़ते तो वे उसको "उठाये हुए" के नाम से पुकारते। बच्चे का दिल इस बात से दुखी हो जाता।

बहुत दुखी हो कर एक दिन वह अपने माता पिता के पास गया और उनसे पूछा — "मुझे बताइये क्या मैं आपका बेटा नहीं हूँ।"

मछियारे की पत्नी बोली — "यह कैसे हो सकता है बेटे। जब तुम एक बच्चे थे तब क्या मैंने तुम्हें अपना दूध नहीं पिलाया।"

मछियारे ने भी अपने बेटों को उससे ऐसा कुछ कहने से सख्ती से मना कर दिया।

जब बच्चा बड़ा हो गया तो मछियारे ने उसको भी अपने दूसरे बेटों के साथ पढ़ने के लिये स्कूल भेज दिया। मछियारे के बेटे भी जब यह देखते कि उनके माता पिता नहीं सुन रहे हैं तो उसे "उठाया हुआ" कहने से बाज़ नहीं आते। स्कूल के दूसरे बच्चे जब उनको यह कहते सुनते तो वे भी उसे वैसे ही पुकारते।

किवोलियू फिर अपने माता पिता के पास गया और उनसे फिर पूछा कि क्या वह उनका बेटा नहीं था। किसी तरह से उसे समझा बुझा कर उन्होंने फिर उसे राजी कर लिया कि जब वह चौदह साल का हो जायेगा तब वह उसको बतायेंगे।

इसके बाद तो वह अपने आपको "उठाया हुआ" सुनने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था। वह फिर से मछियारे और उसकी पत्नी के पास गया और उनसे पूछा — "मेरे प्यारे माता पिता। मैं आपसे यह बताने के लिये विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बता दें कि मैं आपका बेटा हूँ या नहीं।"

तब मछियारे ने उसे सब बताया कि कैसे वह उसे मिला था और उसके कन्धों पर क्या लिखा था।

यह सुन कर क्विवोलियू बोला — "तब तो मुझे अपने माता पिता के पाप के लिये तपस्या करनी पड़ेगी।"

यह सुनते ही मछियारे की पत्नी तो रो पड़ी। वह उसको जाने ही न दे पर क्विवोलियू को रोका न जा सका। वह इस बड़ी दुनियॉ में घूमता ही रहा।

जब वह बहुत समय तक घूम चुका तो एक ऐसी जगह आ पहुँचा जहॉ एक अकेली सराय खड़ी थी। उसने सराय की मालकिन से पूछा — "आप मुझे बतायें कि यहॉ पास में कोई गुफा है या नहीं जिसके दरवाजे के बारे में आप अकेली ही जानती हो।"

वह बोली — "हॉ मैं जानती हूँ ओ सुन्दर नौजवान। और मैं तुम्हें वहॉ बड़ी खुशी से ले चलूँगी।"

तब क्विवोलियू ने दो ग्रैनी[154] की रोटी ली और एक लोटा पानी लिया और सराय की मालकिन उसे गुफा की तरफ ले चली। वह गुफा सराय से कुछ दूर थी। उसका दरवाजा कॉटों और झाड़ियों से ढका हुआ था सो वह बड़ी मुश्किल से उसमें घुस सकता था।

सराय की मालकिन को उसने वापस भेज दिया। खुद गुफा में घुसा। रोटी और पानी नीचे जमीन पर रखी। हाथ जोड़ कर घुटनों

[154] Grani – currency of Italy in those times.

के बल बैठ गया और इस तरह से उसने अपने माता पिता के पाप के लिये वहॉ तपस्या की।

वहॉ उसे बहुत साल बीत गये, मुझे पता नहीं कितने, पर इतने कि उसके घुटनों से जड़ें निकल आयीं और कुछ ही दिनों में वह जमीन से बहुत कस कर चिपक गया।

अब ऐसा हुआ कि रोम में पोप मर गया और अब नया पोप चुना जाना था। सारे कार्डिनल्स[155] इकट्ठा हुए और एक सफेद फाख्ता छोड़ी गयी कि जिस किसी के सिर पर भी वह बैठ जायेगी वही पोप बन जायेगा।[156]

सफेद फाख्ता ने हवा में कई चक्कर काटे पर वह किसी के ऊपर भी नहीं बैठी। तब सारे बिशप और आर्चबिशप साधु संत बुलाये गये पर वह सफेद फाख्ता ने उनमें से किसी को नहीं चुना। सारे लोग बहुत निराश हो चुके थे।

तब कार्डिनल्स को शहर में चारों तरफ जाना पड़ा और ढूँढना पड़ा कि शायद कहीं कोई साधु मिल जाये। बहुत सारे लोग भी उनके साथ गये।

आखिर वे उसी सराय में आ पहुँचे जो पास में ही एक अकेली जगह खड़ी थी। उन्होंने उसकी मालकिन से पूछा कि क्या वह किसी साधु को जानती थी जो अभी भी दुनियॉ को न पता हो।

---

[155] Cardinal is a leading Bishop and Prince of the College of the Cardinals in the Catholic Church.

[156] This method of selection of Pope has been mentioned in other Italian tales too.

सराय की मालकिन ने कहा कि बरसों पहले एक बहुत ही दुखी नौजवान यहॉ आया था और वह मुझे अपना तप करने के लिये मुझे उस गुफा में ले गया। अब तो उसे बहुत दिन हो गये मुझे तो विश्वास है कि अब तक तो वह मर भी गया होगा।

कार्डिनल्स ने कहा — "हम देखेंगे कि वह अभी मर गया है या ज़िन्दा है। तुम हमको उसके पास ले चलो।"

तब सराय की मालकिन उन सबको उस गुफा के पास ले गयी। उसका दरवाजा मुश्किल से पहचान में आ रहा था। वहॉ बहुत सारी झाड़ियॉ और पौधे उग आये थे। उन सबके उसमें घुसने से पहले उनके नौकरों को उन सब पौधों को साफ करना पड़ा।

वे किसी तरह से गुफा में घुसे तो उन्होंने क्विोलियू को घुटनों पर बैठे हुए ही देखा। उसकी बॉहें उसकी छाती पर एक दूसरे के ऊपर रखी थीं। उसकी दाढ़ी इतनी बढ़ गयी थी कि वह जमीन को छू रही थी। उसकी रोटी अभी भी उसके पानी के लोटे के पास रखी हुई थी क्योंकि इन सालों में न उसने कुछ खाया था न पिया था।

जब उन्होंने सफेद फाख्ता को यहॉ खुला छोड़ा तो वह एक पल के लिये उसके सिर के चारों तरफ उड़ी और फिर उसके सिर पर जा कर बैठ गयी। तब कार्डिनल्स को लगा कि वह एक सेंट था। उन्होंने उससे अपने साथ आने और पोप बनने की विनती की।

जब उन्होंने उसे पकड़ कर उठाया तब उन्होंने देखा कि उसके घुटने तो जमीन से चिपक गये हैं और उनको उनकी जड़ें काटनी

पड़ीं। उसके बाद ही वे उसको रोम ले जा सके। वहॉ ले जा कर उसको पोप बना दिया गया।

उसी समय बहिन ने अपने भाई से कहा — "प्यारे भैया। जब हम लोग जवान थे तब हमने एक पाप किया था जिसका हमने अभी तक कन्फ़ैशन[157] नहीं किया है क्योंकि ऐसे पाप को केवल पोप ही माफ कर सकते हैं।"

सो वे दोनों रोम के लिये रवाना हो गये। जब वे चर्च में घुसे तो वहॉ पोप कन्फ़ैशन बौक्स में बैठे हुए थे। जब उन्होंने ज़ोर से बोल कर अपना कन्फ़ैशन कर लिया तब पोप बोले — "मैं ही आपका बेटा हूॅ क्योंकि जिस निशान की आप बात कर रहे हैं वह मेरे कन्धों पर है।

मैंने आप लोगों के पाप के लिये बहुत सालों तक तपस्या की है जब तक कि उसको माफ नहीं कर दिया गया। मैंने आपको आपके पाप से आजाद करवा दिया है इसलिये अब आप मेरे साथ आराम से रहें।"

सो फिर वे अपने बेटे के साथ रहे। जब उनके जाने का समय आया तब लौर्ड ने उन तीनों को स्वर्ग बुला लिया।

[157] Confession in Christianity is to confess any sin in front of the Priest – of course they have a curtain in between so that both of them cannot see each other.

26 गलीशा के सेंट जेम्स की कहानियॉ[158]

सेंट की कहानियों में एक कहानी बहुत ही मजेदार है और वह है "सेंट जेम्स द ऐल्डर" की कहानी। ये स्पेन के बहुत जाने माने सेंट थे। उनके मन्दिर को जो गलीशा के सैनटियागो शहर में है मध्य कालीन युग में बहुत लोग देखने के लिये आते थे।

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। उनकी बहुत इच्छा थी कि उनको कोई बेटी या बेटा हो। रानी गलीशा के सेंट जेम्स की बहुत प्रार्थना की — "ओह सेंट जेम्स। अगर आप मुझे एक बेटा दे देंगे तो जब वह अठारह साल का हो जायेगा तो वह आपके मन्दिर आयेगा।"

कुछ समय बाद समय आने पर सेंट जेम्स की कृपा से रानी को एक बेटा हुआ। वह बेटा इतना सुन्दर था जैसे उसको भगवान ने खुद बनाया हो। बच्चा जल्दी जल्दी बड़ा और और सुन्दर होने लगा।

जब वह बारह साल का था तो राजा की मौत हो गयी। अब रानी अपने बेटे के साथ अकेली रह गयी। कई साल बीत गये और अब वह समय पास आता जा रहा था जब वह अठारह साल का होता।

---

[158] The Story of St James of Galicia. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885. Crane has taken it from Laura Gonzenbach. (Tale No 90)

जब रानी ने सोचा कि अब उसे राजकुमार से अलग होना पड़ेगा। उसे उसको लम्बी यात्रा पर भेजना होगा तो वह बहुत रोयी और दिन भर रोती ही रही।

एक दिन राजकुमार ने मॉ से कहा — "मॉ आप सारा दिन क्यों रोती रहती हैं।"

रानी बोली — "कुछ नहीं बेटे मुझे केवल तुम्हारी चिन्ता है।"

"आपको किस बात की चिन्ता है। क्या आपको डर है कि आपके कैटैनिया के खेत ठीक से जुते नहीं हैं। आप मुझे वहॉ जाने की इजाज़त दें ताकि मैं उनकी देखभाल कर आपको उनकी खबर ला कर दूँ।"

रानी ने उसको इजाज़त दे दी और वह उन खेतों की तरफ चला गया जो उनकी थी। सारे खेत सब कुछ ठीकठाक थे। वह अपनी मॉ के पास वापस आया और बोला — "मॉ अब खुश हो जाओ और अपनी चिन्ता छोड़ो। हमारे सब जानवर बहुत अच्छे हैं। खेत खूब अच्छी तरह से जुते हुए हैं और अनाज भी जल्दी ही पक जायेगा।"

रानी ने जवाब दिया — "बहुत अच्छे मेरे बेटे।"

पर वह खुश नहीं हुई और अगले दिन से फिर से रोना शुरू कर दिया। राजकुमार फिर बोला — "मॉ अगर आप मुझे यह नहीं बतायेंगी कि आप क्यों रो रही हैं तो मैं घर से बाहर चला जाऊँगा और फिर बाहर ही घूमता रहूँगा।"

रानी बोली — "ओह मेरे बच्चे। मैं दुखी इसलिये हूँ क्योंकि तुम्हें अब मुझसे बिछड़ना है। क्योंकि तुम्हारे पैदा होने से पहले मैं तुम्हारे लिये बहुत इच्छुक थी तब मैंने गलीशा के सेंट जेम्स को वचन दिया था कि अगर वह मुझे एक बेटा देंगे तो वह अठारह साल का होने पर तुम्हारे मंदिर जरूर आयेगा। और अब तुम जल्दी ही अठारह साल के होने वाले हो।

मैं दुखी हूँ कि तुमको अब कई साल तक अकेले ही घूमना पड़ेगा क्योंकि सेंट तक पहुँचने में ही तुम्हें कम से कम एक साल तो लग जायेगा।"

बेटा बोला — "यह तो कुछ नहीं है माँ। आप दुखी न हों। केवल मरे हुए लोग ही वापस नहीं लौटते। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मैं जल्दी ही वापस आऊँगा।"

ऐसा कह कर उसने माँ को तसल्ली दी और जब वह अठारह साल का हो गया तब उसने अपनी माँ से विदा ली और बोला — "अच्छा विदा माँ। भगवान ने चाहा तो हम जल्दी ही मिलेंगे।"

रानी बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। आँसू बहाते हुए उसे अपने गले से लगाया फिर उसे तीन सेब दे कर कहा — "बेटा लो ये तीन सेब लो और मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम इतनी लम्बी यात्रा अकेले नहीं करोगे। जब कोई नौजवान तुम्हें यात्रा में साथ के लिये मिले तो उसको साथ ले लेना।

उसे सराय में ठहराना और खाना उसके साथ बॉट कर खाना। खाना खाने के बाद एक सेब को दो आधे हिस्सों में बॉटना जिनमें एक आधा थोड़ा बड़ा हो और दूसरा आधा थोड़ा छोटा हो। अगर वह बड़ा वाला हिस्सा ले ले तो उससे अलग हो जाना क्योंकि वह तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं है।

पर अगर वह छोटा वाला हिस्सा ले तो उसको तुम अपने भाई जैसा समझना और तुम्हारे पास जो कुछ हो उसे उसके साथ बॉटना।"

कह कर उसने एक बार अपने बेटे को फिर से गले लगाया आशीर्वाद दिया और राजकुमार वहॉ से चल दिया।

वह बहुत दिनों तक चलता रहा पर उसको उसके साथ के लिये कोई नहीं मिला। फिर एक दिन उसे एक नौजवान दिखायी दिया जो सड़क के किनारे किनारे जा रहा था। वह भी राजकुमार के साथ हो लिया।

उसने राजकुमार से पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो ओ सुन्दर नौजवान।"

राजकुमार बोला — "मैं गलीशा के सेंट जेम्स के मन्दिर जा रहा हूॅ।" और उसने अपनी मॉ की प्रतिज्ञा के बारे में उसे सब बता दिया।

दूसरा बोला — "मुझे भी वहॉ जाना चाहिये। क्योंकि मेरी मॉ के साथ भी वही हुआ जो तुम्हारी मॉ के साथ हुआ। अगर हम लोगों को एक ही जगह जाना है तो क्यों न हम साथ साथ चलें।"

सो दोनों एक साथ चलते रहे।

पर राजकुमार अपने साथी के बारे में कुछ बहुत ज़्यादा विश्वस्त नहीं था। उसने सोचा कि वह पहले उसका सेब से इम्तिहान लेगा। चलते चलते वे एक सराय के पास आ पहुॅचे। सराय देख कर राजकुमार बोला — "यहॉ कुछ खाया जाये बहुत भूख लगी है।"

वह नौजवान भी राजी हो गया सो दोनों उस सराय में चले गये। खाना खा चुकने के बाद राजकुमार ने अपना एक सेब निकाला और उसे एक बड़े और एक छोटे हिस्से में काट दिया। फिर उसने दोनों हिस्से अपने साथी की तरफ बढ़ाये तो उसने बड़ा हिस्सा ले लिया।

राजकुमार ने सोचा कि यह तो सच्चा दोस्त नहीं है। उससे बचने के लिये उसने बीमार होने का बहाना किया जिससे वह वहीं रह गया। दूसरे ने कहा — "अफसोस। मैं तुम्हारा इन्तजार नहीं कर सकता। मुझे बहुत दूर जाना है। सो विदा।"

जब राजकुमार ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की तो उसके मुॅह से निकला "ओह काश मुझे कोई सच्चा दोस्त मिल जाता ताकि मुझे अकेले यात्रा न करनी पड़ती।"

कुछ देर बाद ही उसे एक और नौजवान मिल गया। उसने राजकुमार से पूछा — "ओ सुन्दर नौजवान। तुम किधर की तरफ जा रहे हो।"

राजकुमार ने उसे भी वही जवाब दे दिया जो उसने अपने पहले साथी को दे दिया था। इसके साथ भी वही हुआ जो पहले के साथ हुआ था।

जब राजकुमार ने इसको भी छोड़ दिया तो उसने फिर से अपनी यात्रा शुरू की। उसने फिर इच्छा की कि उसको कोई सच्चा दोस्त मिल जाये जो उसके भाई की तरह से उसके साथ रहे।

जब वह भगवान से यह प्रार्थना कर रहा था तो उसे एक और नौजवान अपनी तरफ आता दिखायी दिया। यह नौजवान बहुत सुन्दर था और देखने में ऐसा लग रहा था जैसे इससे दोस्ती हो जायेगी। वह उसको देखते ही बहुत अच्छा लग गया। उसके मुँह से निकला "आह। हो सकता है कि यही मेरा सच्चा दोस्त हो।"

यह नौजवान भी राजकुमार के साथ ही चलने लगा। सब कुछ वैसे ही घटा जैसे पहले दोनों नौजवानों के साथ घटा था। बस एक बात अलग थी कि इसने सेब का छोटा वाला हिस्सा खाया था। यह देख कर राजकुमार बहुत खुश हुआ कि उसे अब उसका सच्चा दोस्त मिल गया था।

राजकुमार ने उस नौजवान से कहा — "हम लोगों को अब एक दूसरे को भाई समझ लेना चाहिये। जो मेरा है वह तुम्हारा है और

जो तुम्हारा है वह मेरा है। अब जब तक हम सेंट के मन्दिर नहीं आ जाते हम लोग एक साथ ही यात्रा करेंगे। और अगर हममें से कोई रास्ते में मर जाता है तो दूसरा उसकी लाश ले कर वहॉ जायेगा। हम आपस में यही वायदा करते हैं।"

उन्होंने ऐसा ही किया और एक दूसरे को अपना भाई समझा और साथ साथ चलते रहे। सेंट के मन्दिर पहुॅचने के लिये एक साल की जरूरत होती है तो ज़रा सोचो कि दोनों ने कितनी यात्रा एक साथ की होगी।

एक दिन वे थके हारे एक बड़े और सुन्दर शहर में आ पहुॅचे। सो वे बोले कि वे यहॉ कुछ दिन रह कर आराम करेंगे और उसके बाद ही अपनी यात्रा शुरू करेंगे। सो उन्होंने एक छोटा सा घर ले लिया और उसमें रहने लगे।

उस घर के सामने एक राजा का महल था। एक बार सुबह को जब वह अपने छज्जे पर खड़ा था तो उसने दो नौजवान देखे तो सोचा "ओह ये दोनों ही कितने सुन्दर नौजवान हैं पर फिर भी एक दूसरे से ज़्यादा सुन्दर है। मैं इससे अपनी बेटी की शादी कर दूॅगा।"

राजकुमार उन दोनों में ज़्यादा सुन्दर था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये राजा ने एक दिन उन दोनों को अपने महल में खाना खाने के लिये बुलाया। जब वे महल पहुॅचे तो दोनों का बहुत प्यार

से स्वागत किया गया। उसने अपनी बेटी को बुलाया जो सूरज चॉद से भी ज़्यादा सुन्दर थी।

जब रात को वे जाने लगे तो राजा ने एक जहरीला पेय राजकुमार के दोस्त को दे दिया जो उसके पीते ही मर गया। क्योंकि राजा ने सोचा था कि अगर इसका दोस्त मर जाता है तो यह यहीं रह जायेगा और सेंट के मन्दिर जाने की सोचेगा भी नहीं बल्कि मेरी बेटी से शादी कर लेगा।

अगली सुबह जब राजकुमार उठा तो उसने पूछा "मेरा दोस्त कहॉ है।" तो नौकरों ने जवाब दिया कि वह कल रात अचानक मर गये और अब उनको दफ़नाना बहुत जरूरी है।

राजकुमार बोला अगर मेरा दोस्त मर गया है तो मैं अब यहॉ एक पल भी नहीं रह सकता। मुझे यहॉ से इसी समय यहॉ से जाना चाहिये। राजा ने उससे विनती की कि वह वहीं रहे। वह उसको अपनी बेटी देना चाहता है।

राजकुमार बोला — "नहीं। मैं यहॉ रुक ही नहीं सकता। अगर आप मेरी कोई इच्छा पूरी करना ही चाहते हैं तो मुझे एक अच्छा सा घोड़ा दे दें और मुझे मेरी यात्रा पर शान्ति से जाने दें। जब मैं अपनी यात्रा पूरी कर लूॅगा तब मैं वापस आऊॅगा और आपकी बेटी से शादी कर लूॅगा।"

राजा ने तब उसे एक घोड़ा दे दिया जिस पर राजकुमार चढ़ गया फिर उसने अपने दोस्त के शरीर को अपने आगे रख लिया

और इस तरह अपनी यात्रा पूरी की। वह नौजवान भी अभी मरा नहीं था बल्कि बस गहरी नींद में था।

जब राजकुमार गलीशा के सेंट जेम्स के मन्दिर में पहुँचा तो वह घोड़े से नीचे उतरा। अपने दोस्त के शरीर को एक बच्चे की तरह से अपनी बाँहों में लिया और चर्च में घुसा। वहाँ जा कर उसने अपने दोस्त के शरीर को चर्च की वेदी की सीढ़ियों पर रख दिया और प्रार्थना की —

"देखिये गलीशा के सेंट जेम्स। मैंने अपनी बात रखी। मैं आपके पास आ गया हूँ और साथ में अपने दोस्त को भी ले आया हूँ। अब मैं इसे आपको सौंपता हूँ। अब अगर आप इसे ज़िन्दा कर देंगे तो हम आपकी दया का गुणगान करेंगे। पर अगर यह फिर से ज़िन्दा नहीं हुआ तो कम से कम इसने अपनी प्रतिज्ञा तो रखी ही है।"

और लो देखो जब वह इस तरह से सेंट की प्रार्थना कर रहा था उसका मरा हुआ दोस्त तो ज़िन्दा हो गया और बिल्कुल ठीक हो गया। दोनों ने सेंट को धन्यवाद दिया और मँहगी भेंटें दीं और घर वापस लौटने की यात्रा शुरू कर दी।

जब वे उस शहर में पहुँचे जिसके राजा ने उसकी शादी की प्रार्थना की थी तो वे राजा के महल के सामने जो मकान था उसी में जा कर ठहर गये।

राजा को उस सुन्दर राजकुमार को फिर से देख कर बहुत खुशी हुई। इस बार वह उसे पहले से भी ज़्यादा सुन्दर लगा। उसने बहुत सारे इन्तजाम किये और बड़े शानदार ढंग से शादी मनायी गयी। इस तरह से राजकुमार की शादी उस सुन्दर राजकुमारी से हो गयी। शादी के बाद वे राजा के पास कई महीनों तक रहे।

फिर एक दिन राजकुमार ने राजा से कहा कि उसे घर से निकले हुए काफी दिन हो चुके हैं अब वह यहॉ और नहीं रह सकता। वह अब अपनी पत्नी और दोस्त के साथ अपने घर जाना चाहता है। राजा ने उसे इजाज़त दे दी और उसने अपनी यात्रा का इन्तजाम करना शुरू कर दिया।

राजा को उस बेचारे दोस्त से जिसको उसने मारने वाला पेय दिया था और जो ज़िन्दा हो कर वापस आ गया था बहुत ज़्यादा घृणा हो गयी। उसने उसे दुखी करने के लिये यात्रा पर जाने वाली सुबह को ही उसे किसी काम पर भेज दिया।

उसने उससे यह भी कहा — "जल्दी करना। तुम्हारा दोस्त तुम्हारे बिना यहॉ से हिलेगा भी नहीं।"

वह नौजवान बिना इजाज़त लिये चला गया और राजा का काम कर लाया। इस बीच राजा ने राजकुमार से कहा — "जल्दी करो नहीं तो तुम समय से अपने घर नहीं पहुॅच पाओगे। तुम्हें बहुत रात हो जायेगी।"

राजकुमार बोला — "मैं अपने दोस्त के बिना नहीं जा सकता।"

राजा बोला — "तुम चलो तो सही। वह यहाँ एक घंटे में ही आ जायेगा और अपने तेज़ घोड़े पर सवार हो कर तुमको जल्दी ही पकड़ लेगा।"

उसके इतना जिद करने पर राजकुमार राजी हो गया। उसने अपने ससुर से विदा ली और अपनी पत्नी को साथ ले कर चल दिया।

राजकुमार का दोस्त राजा का काम कई घंटों तक नहीं कर सका और जब वह राजा का काम कर के वापस आया तो राजा ने उससे कहा — "तुम्हारा दोस्त तो अब तक बहुत दूर निकल चुका होगा देख लो तुम उसे कैसे पकड़ सकते हो।"

बेचारे नौजवान को उसी समय महल छोड़ना पड़ा और उसको कोई घोड़ा भी नहीं मिला। वह बेचारा दिन रात भागता ही रहा और किसी तरह राजकुमार को पकड़ा।

उसकी इतनी मेहनत और थकान से उस बेचारे को कोढ़ हो गया। वह बहुत ही बीमार और भयानक दिखायी देने लगा। राजकुमार ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया और एक भाई की तरह से उसकी देखभाल की।

आखिर वे घर पहुँचे जहाँ रानी उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। उसने खुशी में भर कर अपने बेटे को गले लगाया। राजकुमार ने भी अपने दोस्त के लिये एक चारपायी बिछवा दी।

उसने शहर और राज्य के सारे अच्छे डाक्टरों को उसका इलाज करने के लिये बुलवाया पर कोई उसका कोई इलाज नहीं कर सका। जब वह बेचारा नौजवान ठीक नहीं हो सका तो राजकुमार ने गलीशा के सेंट जेम्स से कहा — "ओ गलीशा के सेंट जेम्स। आपने ही मेरे दोस्त को ज़िन्दा किया। मेहरबानी कर के उसकी इस बार भी सहायता कीजिये और उसका कोढ़ ठीक कीजिये।"

जब वह सेंट जेम्स की इस तरह प्रार्थना कर रहा था कि उसका एक नौकर आया और बोला — "एक अजीब सा डाक्टर आया है। वह कहता है कि वह मरीज़ को ठीक कर देगा।"

यह डाक्टर तो सेंट जेम्स खुद थे जिन्होंने राजकुमार की प्रार्थना सुनी और उसके दोस्त की सहायता के लिये चले आये। राजकुमार के अब एक छोटी सी सुन्दर सी बेटी थी। सेंट मरीज़ के बिस्तर तक गये और उसकी जाँच की फिर राजकुमार से पूछा — "क्या तुम वास्तव में अपने दोस्त को किसी भी कीमत पर ठीक होते देखना चाहते हो।"

राजकुमार — "जी हाँ। किसी भी कीमत पर। बस मुझे बताइये कि वह किस चीज़ से ठीक होगा।"

सेंट बोले — "शाम को अपनी बेटी को ले जाना। उसकी सारी नसें खोल देना और वह खून अपने दोस्त के घावों पर लगा देना। वह तुरन्त ही ठीक हो जायेगा।"

राजकुमार तो यह सुनते ही डर गया कि उसको खुद को अपनी बेटी को मारना था। उसने फिर सॅभल कर कहा — "मैंने अपने दोस्त से वायदा किया था कि मैं उसके साथ अपने भाई जैसा व्यवहार करूॅगा। अगर इसका कोई और इलाज नहीं है तो मैं यह करूॅगा।"

शाम को वह बच्ची को ले गया उसकी नसें खोलीं और उनमें से खून निकाल कर अपने दोस्त के घावों पर लगा दिया। खून लगाते है उसके सारे घाव ठीक हो गये और उसका शरीर बिल्कुल साफ सुथरा हो गया।

लड़की बेचारी पीली पड़ गयी और ऐसी लग रही थै जैसे मर ही गयी हो। उन्होंने उसको उसके पालने में लिटा दिया। माता पिता बेचारे दोनों ही दुखी थे क्योंकि उनको लग रहा था कि उनकी बच्ची तो अब गयी।

अगली सुबह वह डाक्टर फिर आया और अपने मरीज़ के बारे में पूछा। राजकुमार ने कहा कि वह तो अब बिल्कुल्ल ठीक है। सेंट ने पूछा — "और तुमने बच्ची को कहॉ रखा?"

पिता दुखी आवाज में बोला — "वह वहॉ पालने में मरी पड़ी है।"

सेंट बोले — "एक बार ज़रा जा कर देख कर तो आओ कि वह वहॉ कैसी है।"

वे तुरन्त ही पालने की तरफ भागे तो उन्होंने देखा कि उनकी बच्ची तो ज़िन्दा है और ठीक है।

तब डाक्टर ने कहा — "मैं गलीशा का सेंट जेम्स हूॅ। मैं तुम्हारी सहायता करने आया हूॅ। मैंने तुम्हारी सच्ची दोस्ती देखी तो मुझे लगा कि मुझे तुम्हारी सहायता करनी चाहिये। तुम एक दूसरे को प्यार करते रहो। जब भी तुम्हें मेरी सहायता की जरूरत हो तो मुझे पुकार लेना। मैं आ जाऊॅगा।"

यह कह कर उन्होंने उन सबको आशीर्वाद दिया और तुरन्त ही गायब हो गये। उसके बाद वे सब बड़े पवित्र ढंग से रहे। वे हमेशा गरीबों की सहायता करते रहे। खुश रहे और सन्तुष्ट रहे।

गलीशा के सेंट जेम्स की कहानी–2 — "यात्री"[159]

एक बार एक पति पत्नी ने गलीशा के सेंट जेम्स की साधारण कसम खायी कि अगर वह उनको बच्चे दे देंगे तो वे सैनटियागो जरूर जायेंगे। तो जब उनके बच्चे पन्द्रह और सोलह साल के हुए तो वे यात्रा के लिये तैयार हुए। उन्होंने बेटे को साथ लिया और बेटी को एक पादरी के पास छोड़ दिया।

[159] "The Pilgrims". By Miss Busk. p 208.

पादरी ने उस लड़की के बारे में एक ऐसी झूठी और बुरी खबर दी कि बेटा अचानक ही घर लौट गया उसने बेटी का कत्ल किया और उसके शरीर को एक गड्ढे में डाल दिया।

एक राजा का बेटा वहॉ से गुजर रहा था उसको वह शरीर मिल गया। उसने देखा कि उसके शरीर में अभी भी थोड़ी जान थी सो वह उसको अपने घर ले गया। उसका इलाज किया और उससे शादी कर ली। बाद में वे राजा और रानी बन गये।

एक बार राजा लड़ाई पर गया हुआ था तो वाइसरौय ने उसकी रानी को ललचाया और जब वह नहीं मानी तो उसने उसके दो बच्चों को मार दिया और इस कत्ल का इलजाम उसके ऊपर लगा कर राजा को बता दिया।

रानी ने अपने दोनों बच्चों की लाशें उठायीं और इधर उधर घूमती रही। घूमते घूमते उसको मडोना[160] मिल गयी। उसने बच्चों को उससे ले लिया और रानी गलीशा चली गयी।

राजा और वायसराय भी रानी के मायके गये क्योंकि ऐसा माना जा रहा था कि जैसे उनकी बेटी मर गयी हो। सेंट के मन्दिर में सब मिल गये और सबने एक दूसरे को माफ कर दिया। उधर मडोना ने भी बच्चों को फिर से ज़िन्दा कर दिया और अब वे सब ठीक थे।

[160] Madonna – Mother Mary (Jesus' mother)

गलीशा के सेंट जेम्स की कहानी–3[161]

इस कहानी में हीरो सेंट जोसेफ़ की सहायता से राजा की बेटी जीत जाता है। एक राजा यह मुनादी पिटवाता है कि वह अपने बेटी उसको देगा जो कोई ऐसा जहाज़ बनायेगा जो धरती के साथ साथ पानी में भी तैरेगा।

तीन भाइयों में से सबसे छोटा भाई अपने दोनों भाइयों के इस काम में फेल हो जाने के बाद सेंट जोसेफ़ की सहायता से एक ऐसा जहाज़ बनाने में सफल हो जाता है।

सेंट जिसे नौजवान जानता भी नहीं है उसके साथ इन शर्तों पर जाने के लिये तैयार हो जाता है कि जो कुछ भी नौजवान को मिलेगा वह उसका आधा हिस्सा उसको दे देगा।

यात्रा पर जाते समय वे अपने जहाज़ में एक ऐसे आदमी को बिठा लेता है जो कोहरे को थैले में भर सकता है। एक और आदमी को बिठाता है जो आधी नदी पी सकता है। एक और आदमी को बिठाता है जिसका निशाना अचूक है और फिर एक ऐसे आदमी को भी बिठाता है जो इतने लम्बे लम्बे डगों से चलता है कि अगर उसका एक पैर कैटैनिया में है तो दूसरा पैर मसीना में है।

एक वैसा ही जहाज़ तैयार करने के बावजूद जैसा कि राजा चाहता था राजा उसको अपनी बेटी देने से इनकार कर देता है पर वह नौजवान अपने नौकरों और सेंट जोसेफ़ के साथ राजा का कहा

[161] Laura Gonzenbach. (Tale No 74)

हुआ सारा काम करता है और राजकुमारी को ले कर भाग जाता है।

जब नौजवान अपनी पत्नी और खजाने के साथ घर लौटता है तो सेंट जोसेफ़ उससे अपनी शर्त के अनुसार उसे आधा आधा बॉटने के लिये कहते हैं।

नौजवान उनको आधा खजाना तो दे देता है साथ में अपना आधा ताज भी दे देता है पर सेंट उसको याद दिलाते हैं कि उसने अभी अपनी सबसे अच्छी चीज़ तो बॉटी ही नहीं है – और वह है उसकी पत्नी।

नौजवान अपना वायदा निभाने के लिये तैयार है। वह अपनी तलवार निकालता है और राजकुमारी के दो हिस्से करने ही वाला हो रहा होता है कि सेंट जोसेफ़ उनके सामने प्रगट हो जाते हैं उनको आशीर्वाद देते हैं और फिर गायब भी हो जाते हैं।

द आर्कऐन्जिल माइकल और उनका एक भक्त[162]

एक गरीब माता पिता अपने बेटे पिपीनो[163] को एक राजा को बेच देते हैं ताकि वे आर्कऐन्जिल माइकल की दावत का दिन मना सकें जिनकी वह भक्ति करते थे। बच्चा महल में बड़ा होता रहता है राजकुमारी के साथ खेलता रहता है।

[162] "The Archangel Michael and One of His Devotees". By Giuseppe Pitre. (Tale No 116).

[163] Pippino. Read a parallel of this story in this book entitled "A Boat Loaded With …" – Tale No 8.

पर जब वह बड़ा हो जाता है तो राजा उससे बचने का कोई तरीका सोचता है क्योंकि उसकी बेटी उस लड़के से प्यार करने लगती है।

राजा यह चाहता नहीं है। सो वह उसको एक ऐसे जहाज़ को दे कर व्यापार के लिये भेज देता है जो समुद्र के लायक नहीं है। पिपीनो को व्यापार का कोई अनुभव नहीं है सो उसको यही नहीं पता कि वह क्या ले कर व्यापार करने जाये।

वह सेंट माइकिल से सहायता माँगता है। सेंट माइकल लड़के के सामने प्रगट होते हैं और उससे नमक भरवा कर उसका व्यापार करने के लिये कहते हैं।

लड़का नमक अपने जहाज़ में भरवा कर व्यापार करने के लिये चल देता है। बीच समुद्र में वह सड़ा हुआ जहाज़ टूटने वाला होता है तो लड़का सेंट माइकल को पुकारता है और वह आ कर उस जहाज़ को पूरा का पूरा सोने का बना देते हैं।

वह अपना नमक एक ऐसे राजा को सोने के बदले में बेच आता है जिसने पहले कभी नमक चखा भी नहीं होता। और इस तरह वह बहुत धनवान हो कर अपने देश वापस लौटता है। राजा की यह योजना फेल हो जाती है।

वह उसको एक बार फिर वैसा ही खराब जहाज़ ले कर व्यापार के लिये भेजता है। इस बार सेंट माइकल इसको बिल्लियाँ रखवा देते हैं। एक बार फिर उसका खराब जहाज़ टूटने को होता तो सेंट

माइकल उसको फिर से सोने का बना देते हैं ये बिल्लियॉ वह एक ऐसे राजा को बेच कर आता है जिसके राज्य में बहुत सारे चूहे थे।

वह ये बिल्लियॉ सोने के भाव में खरीद लेता है। और इस तरह वह बहुत धनवान हो कर अपने देश वापस लौटता है। राजा की यह योजना फेल हो जाती है। पर इस बार वह आ कर राजा की बेटी से शादी कर लेता है।

सेंट ओनीरिया या नीरिया की कहानी[164]

एक बार दो शिकारी रात में जंगल में खो जाते हैं। उनको वहॉ एक मकान मिलता है जिसमें रात के खाने की एक मेज लगी हुई है। उसी कमरे में आग जल रही है जिसमें बड़ी दैवीय खुशबू उड़ रही है।

वे आग के पास जा कर यह जानने की कोशिश करते हैं कि ऐसी दैवीय खुशबू कहॉ से आ रही है तो वे देखते है कि वहॉ तो कोयलों के ऊपर एक दिल पड़ा हुआ है।

जब अगली सुबह वे वहॉ से जाते हैं तो उस दिल को अपने साथ ले जाते हैं। कुछ दूर चल लेने के बाद वे एक सराय में रुकते हैं। सराय के मालिक की पवित्र और धार्मिक बेटी उनकी सेवा करती है।

[164] "The Story of the St Onieria or Neria". By Laura Gonzenbach. (Tale No 87).

वह उस खुशबू को सूँघती है जो उनमें से एक की जैकेट की जेब में से आ रही है जिसे उसने गर्मी की वजह से उतार कर रख दिया था। उसकी जेब में उसे एक दिल मिलता है जिसे वह ले जा कर अपने कमरे की एक मेज पर रख देती है।

एक दिन उसकी बहुत ज़ोर की इच्छा होती है कि वह उस दिल को खा ले। वह ऐसा ही करती है तो वह महसूस करती है कि उसको तो बच्चे की आशा हो गयी है।

उसका पिता उसके साथ बहुत ही बेरहमी का बर्ताव करता है क्योंकि वह तो परिवार की इज़्ज़त पर बट्टा लगाने वाली थी। पर उसकी गौडमदर बीच में पड़ गयी और उसे बचा लिया।

एक रात उसने सपना देखा कि उसके सपने में एक सेंट प्रगट हुए हैं। उन्होंने उससे कहा — "मैं सेंट ओनीरिया हूँ। मैं आग में जल कर मर गया था। केवल मेरा दिल ही बचा था इसलिये मैं शायद फिर दोबारा पैदा होऊँ। मेरा यही दिल सराय के मालिक की बेटी ने खा लिया है सो वह एक दिन मुझे जन्म देगी।"

जैसा कि सेंट ने कहा था वैसे ही उसको एक बच्चा पैदा हुआ और दिन पर दिन सुन्दर होता चला गया। नाना उसको बुरे तरीके से नहीं रख सका और उसकी माँ भी।

जब बच्चा पाँच साल का हो गया तो एक दिन बच्चे के नाना उसको शहर बाजार ले गये। रास्ते में वे एक ऐसी जगह से गुजरे

जहॉ बहुत गन्दगी पड़ी हुई थी। उसे देख कर बच्चे ने अपने नाना से कहा — "नाना जी। काश आप इसमें आराम से लेट पाते।"

उसके बाद उन्होंने एक गरीब आदमी देखा जिसको लोग बिना ताबूत के एक लकड़ी की सीढ़ी पर रख कर दफ़न के लिये ले जा रहे थे। यह देख कर बच्चे ने यहॉ भी वैसी ही इच्छा प्रगट की कि काश उसके नाना भी वैसे ही दफ़न के लिये ले जाये जाते।

इसके बाद उनको एक बड़ा जुलूस मिला जो एक मरे हुए अमीर आदमी के पीछे जा रहा था। उसको देख कर बच्चे ने इच्छा प्रगट की उसके नाना को मरने के बाद ऐसे न ले जाया जाये।

उसका नाना इन तीनों हालात में कहे गये बच्चे की तीनों इच्छाओं पर बहुत गुस्सा था और बड़ी मुश्किल से बच्चे को पीटने की इच्छा को दबा पा रहा था क्योंकि बच्चे की मॉ यानी उसकी बेटी का गौडफादर उनके साथ था।

शहर में जब उनका काम खत्म हो गया तो वे लोग घर वापस लौटने लगे तो वे लोग उस जगह पर आये जहॉ उनको अमीर आदमी के दफ़न का बड़ा सा जुलूस मिला था।

बच्चे ने अपने नाना से कहा कि वह जमीन पर कान रख कर सुने कि उसको वहॉ कितना शोर सुनायी दे रहा था। उसने वैसा ही किया तो उसने बहुत सारी कराहटों की और लोहे के मूसलों से किसी को पीटे जाने की आवाजें सुनायी पड़ रही थीं। तब बच्चे ने

उसे बताया कि वे आवाजें शैतानों की थीं जो उस अमीर आदमी को उनके हाथ से पीटे जाने पर हो रही थीं।

फिर वे उस जगह पर आये जहॉ से गरीब आदमी का जनाज़ा गुजर रहा था तो वहॉ भी उसने अपने नाना से धरती पर कान लगा कर सुनने के लिये कहा तो उन्होंने सुना कि देवदूत उस गरीब आदमी की आत्मा का वहॉ बड़े ज़ोर शोर से स्वागत कर रहे थे। फिर वे वहॉ आये जहॉ वह गन्दगी पड़ी हुई थी।

बच्चे ने अपने नाना से कहा कि वह उस जगह को खोदे जहॉ उसको एक बर्तन भर कर धन मिला जिसके लिये उसने उससे कहा कि वह उसे अपने पैसे से ज़्यादा अच्छी तरह से खर्च करेगा।

तब बच्चे ने बताया कि वह सेंट ओनीरिया था। उसकी मॉ ने कोई बुरा काम नहीं किया था। और कहा कि उसका नाना उससे फिर मिलेगा जब मरे हुए ज़िन्दा लोगों से बात करेंगे। उसके बाद वह स्वर्ग चला गया।

सालों बाद दो आदमी उसी सराय में ठहरे। एक आदमी ने दूसरे को मार दिया और उसकी लाश भूसे के नीचे छिपा दी जिसको दूसरे यात्रियों ने बाद में पाया। सराय के मालिक को इस कत्ल के जुर्म में पकड़ लिया गया। उसको फॉसी की सजा हो गयी। जब वह फॉसी के तख्ते पर था तभी एक सुन्दर नौजवान घोड़े पर सवार वहॉ चिल्लाता हुआ आया "माफी माफी।"

वह नौजवान वहॉ खड़े सभी लोगों को चर्च ले गया और कत्ल किये गये आदमी के ताबूत के सामने जा कर खड़ा हो गया और चिल्ला कर बोला — "उठो ओ मरे हुए। और ज़िन्दा लोगों से बात करो। हमें बताओ कि तुमको किसने मारा।"

लाश बोली — "सराय का मालिक बेकुसूर है। मेरी हत्या मेरे नीच साथी ने की थी।"

उसके बाद नौजवान सराय के मालिक को घर ले गया और वहॉ जा कर उसे बताया कि वह सेंट ओनीरिया है। उसने उनको आशीर्वाद दिया और फिर गायब हो गया।

एक साधु की कहानी[165]

यह कहानी भगवान के राज्य के रहस्य के बारे में है। यह कहानी लोगों में "पारनैल का साधु"[166] के नाम से मशहूर है। इसका सिसिली में कहा सुना जाने वाला रूप इस तरह से है —

"एक साधु को एक आदमी मिलता है जिसके ऊपर चोरी का झूठा इलजाम है और इसके लिये उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया।

तो साधु इसका परिणाम यह निकालता है कि यह सब भगवान का ही अन्याय है जिसकी वजह से उस आदमी को यह सब सहना

[165] "The Story of the Hermit". From Sicily. By Laura Gonzenbach. (Tale No 92).
[166] "Parnell's Hermit".

पड़ रहा है। सो उसने दुनियॉ में लौट जाने का विचार किया। जब वह दुनियॉ की तरफ चल दिया। रास्ते में उसे एक नौजवान मिला और दोनों साथ साथ चलने लगे।

एक खच्चर वाले ने उनको अपने खच्चर पर बिठा लिया। बदले में नौजवान खच्चर वाले के बटुए से उसका पैसा निकाल लेता है और उसे सड़क पर फेंक देता है। सराय की मालकिन उन दोनों का प्यार से स्वागत करती है और अपनी सराय में ठहराती है। लेकिन जब वे दोनों सुबह वहॉ से जाते है तो वह नौजवान सराय की मालकिन के पालने में पड़े हुए बच्चे का गला घोट कर मार देता है।

यह कर के नौजवान तुरन्त ही एक चमकता हुआ देवदूत बन जाता है और साधु से कहता है — "ओ आदमी सुनो। इतनी हिम्मत किसमें है जो भगवान के नियमों के खिलाफ बोल सके।"

उसके बाद वह उसको समझाता है कि उस आदमी पर जिस पर चोरी का झूठा इलजाम लगा है उसने सालों पहले अपने पिता को यहीं मारा था। खच्चर वाले का पैसा चुराया हुआ पैसा था। इसके अलावा सराय की मालकिन का बेटा अगर ज़िन्दा रह जाता तो वह डाकू और खूनी बन जाता।"

देवदूत फिर बोला — "अब तुमने देखा कि भगवान का न्याय उतनी दूर की देखता है जितनी दूर किसी आदमी की ऑख नहीं देख सकती। इसलिये अब तुम अपनी कुटिया में लौट जाओ। वहॉ

जा कर अपने भगवान को बुरा कहने के लिये माफी मॉगो भगवान तुम्हें जरूर माफ कर देंगे।"

इतना कह कर देवदूत गायब हो गया और वह साधु पहाड़ पर लौट गया। वहॉ पहुॅच कर उसने भारी तपस्या की और फिर एक सेंट हो कर मर गया।

गरीब लड़का[167]

सिसिली में कही सुनी जाने वाली एक कहानी है "गरीब लड़का"। यह एक सादे से नौजवान की कहानी है जो एक पादरी से स्वर्ग का रास्ता पूछता है तो वह कहता है कि उसको बहुत ही तंग रास्ते पर चलना चाहिये।

सो वह जो भी उसके सामने आया वही पहला रास्ता ले लेता है और उस पर चल कर एक कौनवैन्ट चर्च में पहुॅच जाता है जहॉ कोई त्यौहार मनाया जा रहा था। वह सोचता है कि वही स्वर्ग है।

बाद में सब वहॉ से चले जात हैं बस वही एक अकेला रह जाता है। चर्च वाला उससे जाने के लिये कहता है पर वह वहीं रहने की जिद करता है और वहीं रह जाता है।

वहॉ का सुपीरियर उसको पीने के लिये एक कटोरा सूप भिजवाता है जिसे वह पूजा की जगह पर रख देता है। जब वह

[167] The Poor Boy". By Giuseppe Pitre. (Tale No 112).

अकेला रह जाता है तो वह क्रौस पर लटके हुए लौर्ड से बड़े विश्चास से बात करता है।

वह पूछता है — "लौर्ड आपको किसने सूली पर चढ़ाया?"

"तुम्हारे पापों ने।"

इस तरह लौर्ड उसके सब सवालों के जवाब देते हैं। वह नौजवान रोने लगता है और वहॉ यह वायदा करता है कि आगे से वह कोई पाप नहीं करेगा। फिर वह लौर्ड को क्रौस पर से नीचे उतर आने के लिये कहता है और अपने साथ खाना खाने के लिये कहता है।

लौर्ड क्रौस से उतर कर नीचे आते हैं और उससे कहते हैं कि वह कौनवैन्ट के साधुओं से कहे कि जब तक वे अपनी सारी जायदाद बेच कर उसे गरीबों को दान में नहीं दे देंगे वे निश्चित रूप से नरक में जायेंगे।

अगर वे ऐसा करेंगे और फिर लौर्ड के पास आ कर कन्फ़ैस करेंगे लौर्ड उनका कन्फ़ैशन सुनेंगे और फिर उन्हें कम्यूनियन देंगे। जब यह सब खत्म हो जायेगा तब वे एक के बाद एक कर के मर जायेंगे और स्वर्ग जायेंगे।

वह बेचारा नौजवान लौर्ड का सन्देश कौनवैन्ट के सुपीरियर को देता है। सुपीरियर कौनवैन्ट की सारी जायदाद बेच देता है और फिर सब कुछ वैसा ही होता है जैसा लौर्ड ने कहा था। सब साधुओं ने वहॉ कन्फ़ैस किया फिर वे सब मर गये। बाकी लोग जो वहॉ

मौजूद थे या जिन्होंने यह घटना सुनी वे सब ईसाई बन गये और फिर लौर्ड के आशीर्वाद से मर कर स्वर्ग गये।

संत बच्चा[168]

ऐसी ही एक कहानी और भी कही जाती है यह कहानी है इस कहानी में एक सौतेली मॉ अपने एक संत बच्चे से बहुत बुरा व्यवहार करती है तो वह घर से बाहर भाग जाता है और एक कौनवैन्ट में शरण लेता है।

एक दिन वह एक कोने में एक छोटा सा कौस पड़ा देखता है जिस पर धूल जमी हुई है और जाले लगे हुए हैं। वह यह भी देखता है कि उस पर बनी हुई जीसस की मूर्ति कितनी पतली सी है।

सो जब वह अपना खाना खाने बैठता है तो वह खाना जीसस के लिये भी ले कर आता है और वहॉ वह जीसस की मूर्ति को भी खाना खिलाता है। मूर्ति आराम से मुॅह खोल कर पेट भर कर खाना खाती है। जैसे जैसे कौस पर बनी मूर्ति ताकतवर होती जाती है बच्चा दुबला होता जाता है।

कौनवैन्ट के सुपीरियर को जब यह पता चलता है तो वह बच्चे से कहता है कि वह लौर्ड से यह कहे कि लौर्ड उसे और बच्चे दोनों

[168] Laura Gonzenbach. "The Pious Child". (Tale No 1).

को अपने साथ खाना खाने के लिये बुलाये। अगले दिन मास के बाद दोनों अचानक मर जाते हैं।

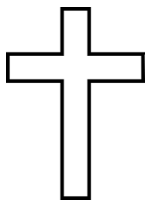

27 बेकर का नौकर[169]

एक बार की बात है कि एक बेकर था। वह रोज एक औंस कीमत की डबलरोटी एक घोड़े पर लादता जो उसकी दूकान पर आता था।

एक दिन उसने सोचा कि "मैं यह एक औंस कीमत की डबलरोटी रोज इस घोड़े को देता हूँ पर यह मुझे इसका कोई हिसाब नहीं देता कि यह इसका क्या करता है।

एक दिन उसने अपने नौकर को बुलाया और उससे कहा — "विनसैंज़ो। कल यह घोड़ा आयेगा और मैं इसको डबलरोटी दूँगा। तुम इसका पीछा करना कि यह कहाँ कहाँ जाता है।"

अगले दिन घोड़ा आया। बेकर ने उसे एक औंस कीमत की डबलरोटी दी। एक टुकड़ा उसने विनसैंज़ो को भी दिया। दोनों चले गये।

कुछ देर बाद ही घोड़ा एक दूध की नदी के पास आ गया। वहाँ आ कर उसने डबलरोटी खानी और दूध पीना शुरू कर दिया। पर फिर वह घोड़े को न पकड़ सका। वह वापस अपने मालिक के पास पहुँचा तो उसके मालिक ने देखा कि उसका उद्देश्य तो सफल ही नहीं हुआ था।

---

[169] The Baker's Apprentice. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

उसने अपने नौकर से कहा — "देखो घोड़ा कल फिर आयेगा। अगर तुम मुझे कल यह नहीं बता सके कि यह घोड़ा जाता कहाँ है तो मैं तुम्हें नौकरी से निकाल दूँगा।"

अगले दिन नौकर ने फिर उसका पीछा किया तो अबकी बार वह एक शराब की नदी के पास आ गया। वहाँ वह फिर अपनी डबलरोटी खाने और शराब पीने बैठ गया तो घोड़ा उसकी आँखों से आझल हो गया और वह घोड़े को फिर न पकड़ सका। वह फिर बिना घोड़ा पकड़े निराश सा अपने घर वापस लौट आया।

उसका मालिक बोला — "सुनो। पहली बार की गलती माफ कर दी जाती है। दूसरी बार की गलती पर चेतावनी दी जाती है पर तीसरी बार की गलती पर उसकी पिटायी होती है। अब अगर कल तुम उस घोड़े का पीछा नहीं कर सके तो मैं तुम्हारी बहुत पिटायी करूँगा और तुम्हें घर वापस भेज दूँगा।"

अब बेचारा विनसैंज़ो क्या करे। अगले दिन उसने फिर से घोड़े का पीछा किया। अबकी बार उसने अपनी आँखें खुली रखी थीं। इस बार वह एक तेल की नदी के पास आ गया।

नौकर ने सोचा "अब मैं क्या करूँ। यह घोड़ा तो अब मेरी आँखों से ओझल हो जायेगा।" सो उसने घोड़े की लगाम अपनी कमर से बाँध ली और अपनी रोटी तेल के साथ खाने लगा।

घोड़े ने उसे अपनी तरफ खींचा भी पर विनसैंज़ो बोला — "जब मैं अपनी रोटी खत्म कर लूँगा तब मैं आ जाऊँगा।"

सो जब उसने अपनी डबलरोटी खत्म कर ली तो वह फिर से घोड़े के पीछे पीछे चल दिया। कुछ समय बाद वह जानवरों के एक फार्म पर आ गया जहॉ घास बहुत लम्बी थी और घनी थी पर जानवर इतने पतले दुबले और कमजोर थे कि मुश्किल से अपने पैरों पर खड़े हो पा रहे थे। विनसैंज़ो इतनी लम्बी और घनी घास और इतने कमजोर जानवर देख कर आश्चर्य में पड़ गया।

कुछ देर बाद वह एक और फार्म पर आया जहॉ उसने देखा कि घास सूखी हुई सी और बहुत ही छोटी थी पर वहॉ के जानवर इतने मोटे थे कि वैसे जानवर उसने पहले कभी देखे नहीं थे।

उसने अपने मन में सोचा "ज़रा देखो तो। जहॉ घास लम्बी और घनी थी वहॉ जानवर कमजोर थे और जहॉ की घास सूखी हुई और छोटी छोटी है वहॉ के जानवर कितने मोटे हो रहे हैं।"

घोड़ा चलता रहा और विनसैंज़ो उसके पीछे पीछे चलता रहा। कुछ समय बाद विनसैंज़ो को एक सूअरी[170] मिली। उसकी पूँछ बहुत बड़ी गॉठों से भरी हुई थी। विनसैंज़ो ने सोचा कि "इसकी पूँछ पर इतनी सारी गॉठें क्यों हैं।"

कुछ और आगे चलने पर उसे एक पानी भरी नॉद दिखायी दी जहॉ एक मेंढक रोटी के एक टुकड़े को उठाने की कोशिश कर रहा था पर उठा नहीं पा रहा था।

[170] Translated for the word "Sow" – pronounced as "now" as a noun

विनसैन्ज़ो और आगे चला तो एक बहुत बड़े फाटक के पास पहुँचा। घोड़े ने अपने सिर से उस फाटक पर खटखटाया तो एक सुन्दर स्त्री ने दरवाजा खोला। उसने बताया कि वह मडोना[171] थी।

जब उसने एक नौजवान को देखा तो उसने पूछा — "तुम यहाँ क्यों आये हो?"

विनसैन्ज़ो बोला — "यह घोड़ा मेरे मालिक के पास बराबर एक औंस कीमत की डबलरोटी लेने आता है पर मेरे मालिक को यह पता नहीं चलता कि यह उस डबलरोटी का क्या करता है सो मैं यह जानने के लिये निकला हूँ।"

स्त्री बोली — ठीक है। आओ। मैं तुम्हें बताती हूँ कि वह उसे कहाँ ले जाता है।"

कह कर वह उसे अन्दर ले गयी और परगेटरी[172] से सारी आत्माओं को बुलाया — "मेरे बच्चों यहाँ आओ।"

जब आत्माऐं वहाँ आ गयीं तो उसने सबको किसी को बहुत थोड़ी सी किसी को थोड़ी ज़्यादा सी और किसी को और ज़्यादा सी डबलरोटी दी। तो वह डबलरोटी तो बहुत जल्दी ही खत्म हो गयी।

डबलरोटी खत्म हो जाने के बाद उस स्त्री ने विनसैन्ज़ो से कहा — "तुमने रास्ते में कुछ नहीं देखा?"

---

[171] Madonna is the name of Mary – Jesus' mother.

[172] Purgatory is the place in Catholic Christianity where the souls stay in the state of suffering where the souls of sinners wait for their trial before going to Heaven.

"हॉ देखा। पहले दिन जब मेरे मालिक ने मुझे इस घोड़े के पीछे भेजा तो मैंने एक दूध की नदी देखी।"

स्त्री बोली — "वह वह दूध था जो मैंने दिया था।"

"दूसरे दिन मैंने एक शराब की नदी देखी।"

स्त्री बोली — "वह वह शराब थी जिससे मेरे बेटे को पवित्र किया गया था।"

"तीसरे दिन मैंने एक तेल की नदी देखी।"

स्त्री बोली — "यह वह तेल था जो मुझसे और मेरे बेटे से मॉगा गया था। तीसरे दिन तुमने और क्या देखा?"

विनसैन्ज़ो बोला — "मैंने जानवरों का एक फार्म देखा जिसमें बहुत लम्बी और घनी घास थी पर वहॉ के जानवर बहुत ही पतले दुबले थे। उसके बाद मैंने एक और फार्म देखा जिसकी घास बहुत ही छोटी और पतली थी पर वहॉ के जानवर बहुत ही तन्दुरुस्त थे।"

स्त्री बोली — "वे वे लोग थे जो अमीर थे और जो खूब अमीरी में रहते हैं। और वे चाहे जितना खायें पर वह खाना उनका भला नहीं करता। और जो मोटे वाले जानवर थे जिनके पास खाने के लिये कोई घास नहीं थी उनकी मेरा बेटा सहायता करता है और उन्हें मोटा करता है। और तुमने क्या देखा?"

विनसैन्ज़ो बोला — "मैंने एक सूअरी देखी जिसकी पूँछ में बहुत सारी गॉठें पड़ी हुई थीं।"

स्त्री बोली — "ये वे हैं जो माला फेरते रहते है और मेरी या मेरे बेटे की प्रार्थना नहीं करते तो मेरा बेटा उनमें गॉठें बना देता है।"

विनसैन्ज़ो बोला — "इसके बाद मैंने एक पानी की नॉद देखी जहॉ एक मेंढक रोटी का टुकड़ा लेना चाहता था पर ले नहीं पा रहा था।"

स्त्री बोली — "यह एक आदमी था जिसने एक स्त्री से थोड़ी सी रोटी मॉगी तो उसने उसके हाथ पर इतनी ज़ोर से मारा जिससे उसके हाथ पर रखी रोटी नीचे गिर गयी। और मेरे बेटे तुमने और क्या क्या देखा।"

"और तो कुछ नहीं।"

"तो आओ मेरे साथ मैं तुम्हें कुछ और दिखाती हूॅ।"

कह कर वह उसका हाथ पकड़ कर नरक की तरफ ले गयी। जब उस बेचारे नौजवान ने जंजीरों के खड़कने की आवाज सुनी और अॅधेरा दिखायी दिया तो वह तो मरने वाला सा हो गया और वहॉ से जाना चाहता था।

स्त्री बोली — "देखो। ये जो रो रहे हैं और जंजीरों से बॅधे हैं और अॅधेरे में है वे सब दुनियावी पाप किये हुए हैं। आओ अब मैं तुम्हें परगेटरी लिये चलती हूॅ।"

वहॉ उन्होंने कुछ नहीं सुना और वहॉ अॅधेरा भी इतना था कि वहॉ उन्हें कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। विनसैन्ज़ो अब वहॉ से

जाना चाहता था क्योंकि वह दुख की वजह से बहुत खिन्न हो गया था।

स्त्री बोली — "आओ अब मैं तुम्हें "होली फ़ादर्स" के चर्च लिये चलती हूँ। तुम इसे देख रहो हो न मेरे बेटे। यह होली फ़ादर्स का चर्च है जो पहले तो भरा हुआ था पर अब बिकुल्ल खाली है। आओ अब मैं तुम्हें लिम्बो लिये चलती हूँ। तुम ये छोटी छोटी चीज़ें देख रहे हो न। ये वे हैं जो बिना बैप्टाइज़ेशन के मर गये थे।"

स्त्री विनसैन्ज़ो को स्वर्ग भी दिखाना चाहती थी पर वह इतना घबरा गया था इसलिये उसने उससे एक खिड़की में से देखने के लिये कहा — "तुम यह महल देख रहो हो न। यहाँ ये तीन सीट हैं – एक तुम्हारे लिये दूसरी तुम्हारे मालिक के लिये और तीसरी तुम्हारी मालकिन के लिये।"

इसके बाद वह उसको फाटक की तरफ ले चली। अब वहाँ घोड़ा नहीं था। विनसैन्ज़ो बोला — "अब मैं अपने घर का रास्ता कैसे ढूँढूँगा। मैं घोड़े के पैरों के निशान देखते देखते चला जाऊँगा और अपने घर पहुँच जाऊँगा।"

स्त्री बोली — "अच्छा अब अपनी आँखें बन्द करो।"

विनसैन्ज़ो ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और फिर खोलीं तो वह तो अपने मालिक के पिछले दरवाजे पर खड़ा था। जब वह अन्दर घुसा तो उसने जा कर अपने मालिक और मालकिन को वह सब बताया जो वह देख कर आया था।

जब उसने अपनी कहानी सुना ली तो तीनों मर गये और स्वर्ग चले गये।

सिसिली की स्पाडोनिया की कहानी[173]

यह कहानी भी ऊपर वाली कहानी जैसी है। स्पाडोनिया एक राजा का बेटा है जो रोज कुछ डबलरोटी बेक करता है और लौर्ड के दिये हुए गधे पर लाद कर उसे परगेटरी में रह रही आत्माओं को भेजता है। लौर्ड ने यह गधा उसे इसी लिये दिया हुआ है।

बाद में स्पाडोनिया राजा बन जाता है तो एक दिन वह अपने एक नौकर पैपै को इस गधे के पीछे यह देखने के लिये भेजता है कि वह यह जा कर देखे कि यह गधा डबलरोटी ले कर कहॉ जाता है। पैपै उसके पीछे पीछे चल देता है।

पहले तो पैपै एक साफ पानी की नदी पार करता है फिर वह एक दूध की नदी पार करता है और फिर वह एक खून की नदी पार करता है। उसके बाद उसको एक बहुत ही हरे भरे मैदान में पतले दुबले बैल नजर आते हैं और उसके बाद सूखे मैदान में बहुत मोटे ताजे बैल नजर आते हैं।

इसके बाद उसको बहुत लम्बे और छोटे पेड़ एक साथ ही उगे हुए नजर आते हैं। उनमें एक नौजवान अपनी चमकीली कुल्हाड़ी से

[173] Laura Gonzenbach. "The Story of Spadonia". (Tale No 88)

एक बड़ा पेड़ एक ही वार में काट देता है और फिर एक छोटा पेड़ एक ही वार में काट देता है।

फिर वह गधे के पीछे पीछे एक दरवाजे में से निकला तो वहॉ सेंट जोसेफ़ सेंट पीटर और दूसरे सारे सेंटों को देखा और इन सबके साथ देखा पिता भगवान को।

पैपै ने दूर और दूसरे सेंटों को भी देखा। वहॉ स्पाडोनिया के माता पिता भी थे। अन्त में वह एक ऐसी जगह आया जहॉ लौर्ड और उनकी मॉ एक सिंहासन पर बैठे हुए थे।

लौर्ड ने उससे कहा कि — "स्पाडोनिया को सिक्यूला से शादी कर लेनी चाहिये[174] और एक सराय खोल लेनी चाहिये जिसमें कोई भी बिना कोई कीमत दिये हुए ठहर सके और खा पी सके।"

फिर लौर्ड ने उसको उस सबके बारे में समझाया जो उसने वहॉ देखा था। उन्होंने कहा "पानी की नदी अच्छे कामों की है जो परगेटरी की दुखी आत्माओं को सहायता करती है और उन्हें ताजा करती है।

दूध की नदी ने काइस्ट का पोषण किया था और खून की नदी वह है जो उसने पापियों के लिये बहाया था। पतले दुबले जानवर उसके साथी थे और मोटे वाले वे थे जो भगवान में विश्वास रखते थे। जो नौजवान पेड़ काट रहे थे वे मौत थे।

[174] Spadonia must marry Secula and open an inn.

पैपै यह सुन कर वहॉ से लौट आया और अपने मास्टर को आ कर यह सब बताया तो स्पाडोनिया सिक्यूला की खोज में निकल पड़ा। खोजते खोजते उसको इस नाम की एक गरीब लड़की मिल गयी। वह उससे शादी कर लेता है और जैसा कि क्राइस्ट ने उससे कहा था वह वैसी ही एक सराय खोल लेता है।

कुछ समय बाद लौर्ड और उसके अपोसिल्स उस सराय में आते हैं। राजा और उसकी पत्नी उनकी सेवा करते हैं और बहुत ध्यान और प्यार से उनकी देखभाल करते हैं।

अगले दिन जब वे चले जाते हैं तब स्पाडोनिया और उसकी पत्नी को पता चलता है कि उनके वे मेहमान कौन थे। तूफान के होते हुए भी वे उनके पीछे पीछे दौड़ते हैं।

उनके पास पहुॅचने पर वे उनसे अपने पापों की माफी मॉगते हैं और जो उनके सगे सम्बन्धी हैं उनके लिये हमेशा के लिये खुशी मॉगते हैं। लौर्ड उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं और उनको किसमस पर तैयार रहने के लिये कहते हैं जब वे उनको लेने आयेंगे।

पति पत्नी घर आते हैं अपनी सारी धन सम्पत्ति गरीबों में बॉट देते हैं। किसमस के दिन वे कन्फ़ैस करते हैं कम्यूनियन लेते हैं और एक दूसरे के पास बैठे बैठे शान्ति से मर जाते हैं। सिक्यूला के बूढ़े माता पिता भी वहीं बैठे हुए थे वे भी मर जाते हैं।

28 औकेशन[175]

एक बार की बात है कि एक माता पिता थे जिनके एक छोटा बेटा था। उसके माता पिता मर गये तो वह बच्चा सड़क पर पड़ा रह गया। एक पड़ोसी को उस पर दया आ गयी तो वह उसको अपने घर ले आया। बच्चा जल्दी जल्दी बढ़ने लगा।

जब वह बड़ा हो गया तो जिस आदमी ने उसे पाला पोसा था वह उससे बोला — "ओ औकेशन। अब तुम आदमी हो गये हो तो अब तुम खुद ही अपने आपको सॅभालने के बारे में क्यों नहीं सोचते और हमें अपनी इस देखभाल से छुटकारा देते।"

यह सुन कर लड़के ने एक गठरी बॉधी और वहॉ से चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा जब तक कि उसके कपड़े नहीं फट गये और वह भूख से निढाल नहीं हो गया।

एक दिन उसने एक सराय देखी तो वह उसके अन्दर घुस गया और सराय के मालिक से पूछा — "क्या आप मुझे नौकरी देंगे? बदले में मुझे आपसे रोटी का केवल एक टुकड़ा चाहिये।"

सराय के मालिक ने अपनी पत्नी से पूछा — "रोज़ैला क्या बोलती हो। हमारे कोई बच्चा नहीं है तो हम इस बच्चे को अपने पास रख लेते हैं।"

"हॉ यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

---

[175] Occasion. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

बच्चा बहुत होशियार था। उससे जो कुछ कहा जाता था वह उसको उसी तरह से बहुत जल्दी कर देता था। आखिर उसके मालिक और मालकिन जो अब उसको अपने बेटे की तरह प्यार करने लगे थे जज के पास गये और उसको गोद ले लिया।

समय गुजरता रहा। समय के साथ सराय का मालिक और उसकी पत्नी मर गये और अपना सब कुछ अपने बेटे को दे गये। औकेशन ने जब देखा कि उसके पास इतना सब कुछ है तो उसने अपनी सराय के आगे नोटिस लगाया कि "जो कोई औकेशन की सराय में आ कर ठहरेगा उसे खाने का कोई पैसा नहीं देना पड़ेगा।"

तुम लोग सोच सकते हो कि वहॉ जो जाते होंगे उन्हें कैसा लगता होगा।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि लौर्ड और उनके अपोसिल्स उधर से गुजर रहे थे तो सेंट थोमस ने यह नोटिस पढ़ा तो बोला — "मैं जब तक अपनी ऑखों से न देख लूॅ अपने हाथ से छू कर न देख लूॅ तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा। तो चलो चल कर देखते हैं।"

सो वे उस सराय में गये। वहॉ जा कर उन्होंने खूब खाया और पिया। औकेशन ने उनको बड़े अच्छे तरह से रखा। वहॉ से जाने से पहले सेंट थोमस ने औकेशन से कहा — "तुम मालिक से कुछ मॉग क्यों नहीं लेते?"

यह सुन कर औकेशन ने कहा — "मास्टर। मेरे दरवाजे के सामने एक अंजीर का पेड़ है। बच्चे मुझे इस पेड़ की अंजीरें नहीं खाने देते।

यहॉ से जो कोई भी गुजरता है वह इस पेड़ पर चढ़ जाता है और इसकी अंजीरें तोड़ लेता है। आप ऐसा कुछ कीजिये कि अब से जो कोई इस पेड़ पर चढ़े वह इसी पेड़ से चिपका रहे जब तक मैं उसे नीचे उतरने की इजाज़त न दूँ।"

लौर्ड ने उसकी इच्छा पूरी की और पेड़ को आशीर्वाद दिया और चले गये। अब तो बहुत बढ़िया हो गया। जो पहला उस पेड़ पर चढ़ा वह उससे इतनी ज़ोर से चिपक गया कि हिल भी न सका।

एक दूसरा आया तो उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। और फिर ऐसा ही होता रहा। जो कोई भी उस पेड़ पर चढ़ता उसका या तो हाथ चिपक जाता या पैर।

जब औकेशन ने यह देखा तो पहले तो उसने सबको बहुत डॉटा और फिर छुड़ाया और उन्हें भगा दिया। उसके बाद से बच्चे बहुत डर गये और फिर किसी ने भी उस अंजीर के पेड़ को नहीं छुआ।

सालों गुजर गये। अब औकेशन का पैसा खत्म होने को आ रहा था सो उसने एक बढ़ई को बुलवाया और उससे उस अंजीर के पेड़ को काटने के लिये कहा और उससे उसकी एक बहुत बड़ी

बोतल बनाने के लिये कहा जिसमें वह जिसको चाहता उसी को बन्द कर सकता था।

बढ़ई ने पेड़ काट कर उसकी एक बोतल बना दी। अब यह बोतल लौर्ड के वरदान की वजह से यह गुण रखती थी कि औकेशन जिस किसी को इसमें बन्द करता तो वह उसमें से बाहर नहीं निकल सकता था।

समय गुजरता गया। औकेशन काफी बूढ़ा हो गया था सो एक दिन मौत उसको लेने आ गयी।

औकेशन बोला — "मैं आपकी सेवा में हूँ। मैं अभी आपके साथ चलता हूँ पर पहले आप मेरे ऊपर एक कृपा कर दें। मेरे पास यह एक शराब की बोतल है और इसमें एक मक्खी गिर गयी है और मैं इसमें से शराब पीना नहीं चाहता। ज़रा आप इसमें अन्दर घुस कर वह मक्खी निकाल दें तब मैं आपके साथ चलता हूँ।"

बेवकूफ मौत उस बोतल के अन्दर घुस गयी। जैसे ही वह बोतल के अन्दर घुसी तो औकेशन ने उस पर डाट लगा कर उसे बन्द कर दिया और यह कहते हुए अपने थैले में डाल लिया कि "अब तुम थोड़ी देर मेरे पास रहो।"

अब मौत तो ओकेशन के पास बन्द थी सो धरती पर कोई नहीं मर रहा था। जहाँ देखो वहीं लम्बी लम्बी दाढ़ी वाले बूढ़े लोग दिखायी दे रहे थे। यह भी एक देखने के लायक दृश्य था।

यह दृश्य अपोसिल्स ने भी देखा तो वे कई बार लौर्ड के पास गये सो आखिर लौर्ड को ओकेशन से मिलने के लिये आना पड़ा।

उन्होंने उससे कहा — "यह सब क्या है। यहॉ तुमने मौत को कितने सालों से बन्द कर रखा है उधर लोग बिना मरे बुढ़ापे से परेशान हैं। किसी को मौत नहीं आ रही।"

औकेशन बोला — "मास्टर। क्या आप चाहते हैं कि मैं मौत को छोड़ दूॅ। अगर आप मुझे स्वर्ग में जगह दें तो मैं मौत को छोड़ दूॅगा।"

लौर्ड चिन्ता में पड़ गये कि वह अब क्या करें। अगर मैं इसका कहा नहीं करता हूॅ तो यह मुझे शान्ति से जीने नहीं देगा। सो उन्होंने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

यह सुन कर औकेशन ने मौत को छोड़ दिया। औकेशन को कुछ साल के लिये और ज़िन्दा छोड़ दिया गया। उसके बाद मौत आ कर उसको ले गयी।

इसलिये कहा जाता है कि "औकेशन के बिना मौत नहीं है।"

29 भाई जियोवानोने[176]

एक बार की बात है कि कैसिलटरमिनी के एक कौनवैन्ट[177] में बहुत सारे साधु रहते थे। उनमें से एक साधु का नाम भाई जियोवानोने था।

जिस समय लौर्ड अपने अपोसिल्स के साथ दुनियॉ में घूम रहे थे तो एक दिन वे उस कौनवैन्ट में भी आये। सारे साधुओं ने उनसे अपनी अपनी आत्माओं को माफ कर देने की प्रार्थना की। पर भाई जियोवानोने ने उनसे कुछ नहीं मॉगा।

तो सेंट पीटर ने उससे पूछा — "क्यों भाई। दूसरों की तरह से तुमने भी लौर्ड से अपनी आत्मा के लिये माफी क्यों नहीं मॉग ली।"

उसने जवाब दिया — "मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं है।"

सेंट पीटर बोले — "ठीक है। जब तुम स्वर्ग आओगे तब तुमसे बात करेंगे।"

जब मास्टर वहॉ से चले गये और काफी दूर चले गये तब भाई जियोवानोने रो कर कहने लगा — "रुक जाइये मास्टर रुक जाइये। मुझ पर एक कृपा करते जाइये। मुझे बस इतना देते जाइये कि मैं जिस किसी को कहूँ वह मेरे थैले में आ कर बन्द हो जाये तो वह

[176] Brother Giovannone. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

[177] Convent of Castletermini

मेरे थैले में आ कर बन्द हो जाये और जब तक उसे मैं बाहर निकालूँ वह तब तक बाहर न निकलने पाये।"

मास्टर वहीं से बोले — "तुम्हारी इच्छा पूरी की जाती है।"

भाई जियोवानोने बूढ़ा था। एक दिन उसकी मौत आयी और उससे बोली — "भाई जियोवानोने अब तुम्हारी ज़िन्दगी के केवल तीन घंटे ही बाकी बचे हैं।

भाई जियोवानोने ने कहा — "जब तुम मेरे लिये आओ तो उससे आधे घंटे पहले मुझे जरूर बता देना।"

कुछ देर बाद मौत फिर आयी और आ कर बोली — "तुम तो एक मरे हुए आदमी हो।"

भाई जियोवानोने ने जवाब दिया — "भाई जियोवानोने के नाम पर ओ मौत मेरे थैले में आजा।"

उसके बाद भाई जियोवानोने अपने थैले को एक बेकर के पास ले गये और उससे कहा कि वह उसे चिमनी में टॉग दे और तब तक उसे न खोले जब तक मैं इसे लेने न आऊँ।

इस घटना के चालीस साल हो गये वहॉ कोई नहीं मरा। तब कहीं जा कर जियोवानोने ने मौत को छोड़ा ताकि वह मर सके क्योंकि अब वह इतना बूढ़ा हो गया था कि कुछ भी नहीं कर सकता था।

जैसे ही मौत आजाद हुई उसने सबसे पहले भाई जियोवानोने को ही मारा। उसके बाद ही मौत ने उन सबको मारा जिनको उसने चालीस साल से नहीं मारा था।

जब भाई जियोवानोने मर गया तो वह स्वर्ग गया और उसके दरवाजे पर दस्तक दी तो सेंट पीटर ने अन्दर से कहा — "तुम्हारे लिये यहॉ कोई जगह नहीं है।"

भाई जियोवानोने ने पूछा — "तो फिर मैं कहॉ जाऊॅ।"

सेंट पीटर बोले — "परगेटरी में।"

सो वह परगेटरी गया और वहॉ जा कर उसने परगेटरी का दरवाजा खटखटाया तो परगेटरी वालों ने कहा — "यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।"

"तो फिर में कहॉ जाऊॅ।"

"तुम नरक जाओ।"

भाई जियोवानोने नरक पहुॅचा और वहॉ नरक का दरवाजा खटखटाया तो लूसीफ़र[178] निकला और पूछा — "कौन है?"

"मैं भाई जियोवानोने।"

तब लूसीफ़र ने अपने शैतानों को बुलाया और उनसे कहा — "तुम गदा लो तुम हथौड़ा लो तुम चिमटा[179] लो।"

[178] Lucifer – another name of Satan.

[179] Translated for the word "Tongs". See its picture above.

तो भाई जियोवानोने बोला — "इन सब हथियारों का आप क्या करेंगे।"

"इनसे हम तुम्हें मारेंगे।"

भाई जियोवानोने बोला — "भाई जियोवानोने के नाम पर तुम सारे शैतान मेरे थैले में आ जाओ।" बस लूसीफ़र और सारे शैतान भाई जियोवानोने के थैले में आ कर गिर गये। उसने वह थैला अपने कन्धे पर डाला और उसको एक लोहार के पास ले गया। वह लोहार कुल मिला कर नौ आदमी काम करते थे – आठ उसके नौकर और एक वह खुद।"

भाई जियोवानोने ने उससे पूछा — "इस थैले को आठ दिन रात तक पीटने का तुम क्या लोगे।"

दोनों में अट्ठाईस औंस पर समझौता हो गया। वे उस थैले को दिन रात मारते रहे जब तक कि उसके अन्दर रखी हुई चीज़ पाउडर नहीं बन गयी। इस बीच भाई जियोवानोने वहीं बैठा रहा।

लोहारों ने आखिरी दिन कहा — "ये कैसे शैतान थे कि हम इनका पाउडर ठीक से नहीं बना सके।"

भाई जियोवानोने बोला — "ये वास्तव में शैतान थे। इनको और ज़ोर से मारो।"

लोहार ने उस थैले को कुछ देर और मारा और एक सपाट जगह पर बिखेर दिया। वे शैतान इतने ज़्यादा घायल हो चुके थे कि बड़ी मुश्किल से अपने आपको नरक तक घसीट कर ले जा सके।

उाके बाद भाई जियोवानोने फिर से स्वर्ग गया और वहॉ का दरवाजा खटखटाया

"बाहर कौन है।"

"भाई जियोवानोने।"

"यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।"

"पीटर अगर तुम मुझे अन्दर नहीं घुसने दोगे तो मैं तुम्हें गंजा कहॅूगा।"

पीटर बोले — "अब तुमने तो मुझे पहले ही गंजा कह दिया तो अब तो तुम बिल्कुल ही अन्दर नहीं घुस सकते।"

भाई जियोवानोने बोला — "तुमने क्या कहा। मैं तुम्हारे साथ समझौता कर लॅूगा? नहीं कभी नहीं।"

कह कर वह स्वर्ग के दरवाजे के पास खड़ा हो गया और उन सब आत्माओं से जो स्वर्ग में अन्दर जाने के लिये खड़ी थीं बोला — "भाई जियोवानोने के नाम पर ओ सारी आत्माओं मेरे थैले में आ जाओ।"

बस अब क्या था सारी आत्माऐं भाई जियोवानोने के थैले में बन्द हो गयी थीं। इस तरह कोई आत्मा स्वर्ग में नहीं गयी। एक दिन पीटर ने मास्टर से पूछा कि कोई आत्मा स्वर्ग में क्यों नहीं आ रही।

लौर्ड बोले — "क्योंकि दरवाजे के बाहर भाई जियोवानोने खड़ा है और उसने सारी आत्माओं को अपने थैले में बन्द कर रखा है।"

पीटर ने पूछा — "तो फिर अब हम क्या करें।"

लौर्ड बोले — "देखो अगर तुम उसका थैला उससे ले सकते हो तो। इससे सारी आत्माऐं एक साथ स्वर्ग में आ जायेंगी।"

भाई जियोवानोने दरवाजे के बाहर खड़ा खड़ा यह सब बातचीत सुन रहा था। उसने क्या किया कि उसने कहा "मैं भी अपने थैले में पहुँच जाऊँ।" एक पल में ही वह खुद भी अपने थैले में था।

उधर जब पीटर लौर्ड से बात कर के स्वर्ग के दरवाजे पर आया तो उसको भाई जियोवानोने तो कहीं दिखायी नहीं दिया हाँ एक थैला जरूर दरवाजे पर रखा हुआ था। पीटर को यही तो चाहिये था सो बस उसने वह थैला उठाया स्वर्ग का दरवाजा बन्द किया और अन्दर आ गया।

अन्दर आ कर उसने थैला खोला तो पहली आत्मा जो थैले में से निकली वह भाई जियोवानोने की आत्मा थी। उसने बाहर निकलते ही पीटर से झगड़ना शुरू कर दिया क्योंकि सेंट पीटर उसको बाहर छोड़ना चाहता था और वह बाहर नहीं जाना चाहता था।

लौर्ड बोले — "एक बार जब कोई जीसस के घर में घुस आता है तो फिर वह वहाँ से बाहर कभी नहीं जाता।"

ऐसी ही दो दंत कथाऐं और

एक बार लौर्ड अपने अपोसिल्स के साथ एक सराय में गये। सराय के मालिक ने उन सबका बहुत अच्छे से स्वागत सत्कार किया। जाते समय लौर्ड ने कहा "जो तुम्हारी इच्छा हो मॉग लो।"

सराय का मालिक लौर्ड से दो इच्छाऐं प्रगट करता है – एक तो ताश में हमेशा जीतने की इच्छा प्रगट करता है और दूसरे जो कोई उसके अंजीर के पेड़ पर चढ़े वह वहीं पर रह जाये। लौर्ड उसको उन इच्छाओं का वरदान दे कर वहॉ से चले जाते हैं।

जब मौत आती है तो वह उससे कुछ अंजीर तोड़ने के लिये कहता है। जब मौत पेड़ पर चढ़ जाती है तो सराय का मालिक उसको वहॉ से उतारने के लिये मना कर देता है जब तक मौत उसे चार सौ साल की ज़िन्दगी नहीं देती।

सो मौत को उसको चार सौ साल की ज़िन्दगी देने पर राजी होना पड़ता है। पर जब वह चार सौ साल बाद आती है तो सराय के मालिक को चुपचाप उसके साथ जाना भी पड़ता है।

वे नरक के सामने से गुजरते हैं तो सराय का मालिक शैतान के साथ नयी आयी हुई आत्माओं को दॉव पर लगा कर ताश खेलने की इजाज़त मॉगता है।

वहॉ वह जीत जाता है और उन सब आत्माओं को अपने साथ स्वर्ग ले जाता है पर सेंट पीटर उस "भीड़" को अन्दर लाने के लिये मना करता है।

तब जीसस क्राइस्ट कहते हैं कि सराय के मालिक का आना तो ठीक है पर दूसरों से हमारा कोई मतलब नहीं।

इस पर सराय का मालिक कहता है कि जब जीसस क्राइट कई लोगों को ले कर उसकी सराय में आये थे तो उसने तो कोई अड़ंगा नहीं लगाया था तो आज उसके साथ आये लोगों को अन्दर क्यों नहीं दिया जा रहा है।

जीसस क्राइस्ट बोले — "ठीक है ठीक है। तुम ठीक कह रहे हो। सबको अन्दर आने दो।"

दूसरी दंत कथा में एक पादरी प्रेत ओलीविओ[180] अपनी मेहमानदारी के बदले में लौर्ड से सौ साल की उम्र पाता है और जब मौत उसको लेने के लिये आये तब वह उससे जो कुछ चाहे वह करवा सकता था और उसे पादरी की हर बात माननी पड़ेगी।

जब मौत सौ साल बाद उसको लेने के लिये आती है तो वह उससे कहता है कि जब तक वह मास पढ़ता है तब तक वह आग के पास बैठे। मौत आग के पास बैठ जाती है।

वह आग में लकड़ी डाल कर उसको बहुत तेज़ करता रहता है। आग और तेज़ होती जाती है पर मौत वहॉ से ज़रा भी नहीं हिल नहीं सकती जब तक पादरी उसे वहॉ से हिलने की इजाज़त नहीं देता। फिर वह इस शर्त पर उसे वहॉ से उठने की इजाज़त देता है कि वह उसे फिर से सौ साल जीने देगी।

[180] Pret Olivio

मौत जब सौ साल के बाद दोबारा आती है तो प्रेत ओलीविओ मौत से कुछ अंजीरें तोड़ने के लिये कहता है और कहता है है कि जब तक वह न बुलाये तब तक वह वहीं बैठी रहे। इस तरह मौत उसको फिर से सौ साल की ज़िन्दगी देने पर मजबूर हो जाती है।

अबकी बार जब मौत आती है तो प्रेत ओलीविओ अपनी पादरी की पोशाक पहन लेता है अपने साथ ताश की गड्डी लेता है और मौत के साथ चल देता है।

मौत उसको सीधे स्वर्ग ले जाना चाहती है पर वह नरक के रास्ते से हो कर और शैतान के साथ ताश की एक बाजी खेलते हुए जाना चाहता है। दॉव पर आत्माऐं लगी हैं और जैसे ही प्रेत ओलीविओ एक बाज़ी जीतता है वह एक आत्मा को अपनी पोशाक पर लगा लेता है।

इस तरह वह आत्माओं से अपनी पूरी पोशाक ढक लेता है। फिर वह उनको अपनी टोपी पर लगाता है। अन्त में उसके पास कोई उनको लगाने की कोई जगह ही नहीं बचती। जब वह स्वर्ग आता है तो पीटर उसके अन्दर आने में रोड़ा अटकाता है पर बाद में लौर्ड उन सबको अन्दर आने की इजाज़त दे देते हैं।

30 गौडफ़ादर कष्ट[181]

गौडफ़ादर कष्ट बहुत बूढ़े थे। भगवान ही जानता है कि वह कितने बूढ़े थे। एक दिन जीसस और सेंट पीटर जब दुनियॉ में देशों का नाम देने के लिये घूम रहे थे तो वे गौडफ़ादर कष्ट के पास आये। उन्होंने अपने मेहमानों को पोलैन्टा[182] खिलाया और सोने के लिये अपना बिस्तर दिया।

जीसस उनकी इस मेहमानदारी से बहुत खुश हुए। खुश हो कर उन्होंने गौडफ़ादर कष्ट को कुछ पैसे दिये और उनकी तीन इच्छाऐं पूछीं जिन्हें वह पूरा कर सकें।

उनमें से उनकी एक इच्छा पूरी की कि जो कोई भी आग के पास वाली उनकी बैंच पर बैठेगा वह उस पर से उठ नहीं पायेगा। उनकी दूसरी इच्छा पूरी की कि जो कोई अंजीर के पेड़ पर चढ़ जायेगा वह वहॉ से उतर नहीं पायेगा। और आखीर में क्योंकि वह पीटर की बहुत इज़्ज़त करते थे सो उसकी आत्मा को मोक्ष।

एक दिन मौत उनके घर आयी और उनको ले जाना चाहती थी। तो गौडफ़ादर कष्ट ने कहा "अभी तो यात्रा करने के लिये बहुत ठंडा है।" मौत ने उनसे चलने की जिद की तो गौडफ़ादर

[181] Godfather Misery. From Tuscan area. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. 1885.

[182] Polenta is an Italian dish made from corn or maize flour by boiling it in the water.

कष्ट ने उससे कहा कि वह आग के पास पड़ी बैन्च पर बैठ कर थोड़ा गर्म हो ले फिर चलते हैं।

इस बीच उन्होंने काफी सारी लकड़ी आग में डाल दी। मौत जलने लगी उसने उस बैन्च पर से उठने की कोशिश भी की पर वह तो उठ ही नहीं सकी। तब मौत से सौ साल की ज़िन्दगी ले कर गौडफ़ादर कष्ट ने उसे वहॉ से उठने दिया।

मौत आजाद हो गयी। साल बीतते गये। सौ साल भी जल्दी ही बीत गये। मौत फिर आयी। उस समय गौडफ़ादर कष्ट दरवाजे पर खड़े थे और ऐसा बहाना बना रहे थे जैसे कि वह उसका इन्तजार ही कर रहे हों। वह अंजीर के पेड़ की तरफ बड़े दुख से देख रहे थे।

जब मौत ने उनसे चलने के लिये कहा तो उन्होंने कहा "तुम ज़रा इस पेड़ से यात्रा के लिये थोड़ी सी अंजीर तोड़ लो तब चलते हैं।"

मौत पेड़ पर चढ़ तो गयी लेकिन वह गौडफ़ादर कष्ट से सौदा किये बिना नीचे नहीं उतर सकी। गौडफ़ादर कष्ट ने उससे फिर से सौ साल की ज़िन्दगी मॉग ली थी।

अब ये सौ साल भी गुजर गये। मौत तिबारा आयी। अब इस बार उनके पास और कोई चारा नहीं था सो उनको जाना ही पड़ा।

मौत ने उनको इतना समय दे दिया कि वह अवे मारिया और पैटरनोस्टर[183] पढ़ लें।

गौडफ़ादर कष्ट के पास इतना समय नहीं था क्योंकि मौत जल्दी कर रही थी सो उन्होंने मौत से कहा — "तुमने मुझे समय दिया है और मैं इसे ले रहा हूँ फिर इतनी जल्दी क्यों?"

इस बीच मौत को एक विचार आया। उसने एक जैसूट की शक्ल बनायी और गौडफ़ादर कष्ट के घर गयी और वहाँ उपदेश देने लगी। पहले तो गौडफ़ादर कष्ट ने उसको सुना ही नहीं पर फिर उनकी पत्नी ने उनको जाने के लिये कहा कि वह जा कर चर्च में उपदेश सुनें।

जैसे ही गौडफ़ादर कष्ट चर्च में घुसे मौत चिल्लायी जिसने भी अवे मारिया पढ़ा है वह अपनी आत्मा को बचा ले।

गौडफ़ादर कष्ट ने मौत को पहचान लिया वह चिल्लाये — "तुम चली जाओ यहाँ से। तुम मुझे नहीं पकड़ सकतीं।"

निराश हो कर मौत वहाँ से चली गयी और फिर गौडफ़ादर कष्ट को कभी नहीं पकड़ सकी। गौडफ़ादर कष्ट अभी भी रह रहे हैं क्योंकि कष्ट तो कभी ख़त्म होता नहीं और मौत उन्हें पकड़ नही सकती।

[183] Ave Maria - a prayer to the Virgin Mary used in Catholic worship. The first line is adapted from Luke 1:28. And Paternoster is the Lord's Prayer, especially in Latin.

ऐसी ही एक कहानी और

ऐसी ही एक और कहानी में ऐसी ही कुछ भेंटें एक लोहार को दी जाती हैं क्योंकि वह हमेशा से ही एक बहुत अच्छा ईसाई रहा था। इनकी सहायता से वह शैतान से दो साल के लिये अपनी आत्मा का सौदा करने से बच जाता है।

पहली बार जब शैतान आता है तो वह उसको आग के पास एक बैन्च पर बिठा देता है तो वह फिर बिना उसकी मर्जी के वहॉ से उठ नहीं पाता जब तक कि वह उसका दो साल का समय और नहीं बढ़ा देता।

अगली बार जब वह आता है तो वह उसके घर में नहीं घुसता बल्कि एक खिड़की से अन्दर झॉकता है। उस खिड़की में इतनी ताकत है कि जो भी उसमें से अन्दर झॉकता है वह वहीं पकड़ा जाता है सो वह वहीं चिपक जाता है।

तीसरी बार शैतान एक अंजीर के पेड़ पर पकड़ा जाता है तब एक नया कौन्ट्रैक्ट लिखा जाता है जिसके अनुसार वह शैतान को फिर कभी नहीं देखता।

इसी तरह की एक कहानी और – "शराबखाने का नौकर"[184]

एक बहुत दानी मेजबान अपने आपको मेहमानदारी के चक्कर में बर्बाद कर लेता है और शैतान से सात साल के लिये इस शर्त पर

[184] "The Tapster". By Christian Schneller. (Tale No 17)

पैसे उधार लेता है कि अगर वह सात साल के बाद उसे न लौटा सका तो उसकी आत्मा शैतान की हो जायेगी। वह आदमी उसके बाद भी खुले हाथ खर्च करता रहता है और सात साल के बाद पहले से भी ज़्यादा गरीब हो जाता है।

फिर एक दिन उसकी सराय में लौर्ड सेंट पीटर और सेंट जौन आते हैं और उससे तीन वर मॉगने के लिये कहते हैं। पहले वर में वह यह मॉगता है कि जो कोई उसके सामने वाले अंजीर के पेड़ पर चढ़ जाये वह बिना उसकी इच्छा के उतरे नहीं।

दूसरे वर में वह यह मॉगता है कि जो कोई उसके काउच पर बैठ जाये वह उसके ऊपर से बिना उसकी मर्जी के उठ नहीं सके। और तीसरे वर में वह यह मॉगता है कि जो कोई उसकी एक खास आलमारी छुए वह बस उससे वहीं चिपक जाये और जब तक वह उसको आ कर न छुड़ाये तब तक उसी से चिपका खड़ा रहे।

शैतान सबसे पहले अपने सबसे बड़े बेटे को उसके पास पैसे लेने के लिये भेजता है। तो वह आदमी उसको अंजीर के पेड़ पर चढ़ा देता है और फिर उसकी खूब पिटायी करता है।

उसके बाद शैतान अपने दूसरे बेटे को भेजता है तो वह उसको काउच पर बिठा देता है और उसको भी खूब पीटता है। अन्त में शैतान खुद आता है तो वह आदमी उसे अपने आप ही आलमारी में से पैसे निकालने के लिये कहता है। जैसे ही शैतान आलमारी में हाथ डालता है वह आलमारी उसको पकड़ लेती है।

वह आदमी फिर उसको वहॉ से तभी आजाद करता है जब शैतान अपना सारा पैसा उसे माफ कर देता है।

मौत का मजाक बनाना [185]

इस कथा में एक स्कूलमास्टर जादूगर होता है। वह अपने एक शिष्य से कहता है कि वह रोज उसकी एक इच्छा पूरी करेगा। पहले दिन शिष्य मॉगता है कि जो कोई उसके नाशपाती के पेड़ पर चढ़े वह वहीं रह जाये।

दूसरे दिन वह मॉगता है कि जो कोई उसकी फायरप्लेस[186] के पास आये वह वहीं बैठा रह जाये। और तीसरे दिन वह मॉगता है कि उसको पास जो ताश के पत्ते हैं वह उनसे जब भी खेले जीत जाये।

जब वह शिष्य सौ साल का हो जाता है तो मौत उसे लेने आती है तो वह उसको नाशपाती के पेड़ पर चढ़ा देता है जिससे वह वही की वहीं रह जाती है। जब वह उसको सौ साल की ज़िन्दगी और देती है तब वह उसको पेड़ से नीचे उतारता है।

अगली बार मौत जब आती है तो उसे फायरप्लेस के पास बिठा कर वह सौ साल की ज़िन्दगी और मॉग लेता है।

[185] "Death Mocked". By Domenico Comparetti. (Tale No 34). From Monteferrato area.

[186] Fireplace is a place where in cold countries people burn fire to keep their houses warm.

इसके बाद वह शिष्य मर जाता है और स्वर्ग जाता है पर लौर्ड उसको अन्दर नहीं आने देते क्योंकि उसने उनकी दया नहीं मॉगी। नरक भी उसको लेने को तैयार नहीं है क्योंकि वह हमेशा से ही भला आदमी रहा है।

सो वह परगेटरी के दरवाजे पर जाता है और वहॉ बैठ कर ताश खेलने लगता है। दॉव पर आत्माऐं लगाता है और इतनी सारी आत्माओं को जीत लेता है कि अब उसकी अपनी आत्माओं की एक सेना तैयार हो जाती है।

उसके बाद वह स्वर्ग जाता है तो लौर्ड कहते हैं कि केवल वह अकेला ही अन्दर घुस सकता है। पर वह जिद करता है कि उसके साथ उसकी जीती हुई सारी आत्माऐं उसके साथ ही जायेंगी तो लौर्ड फिर सबको अन्दर आने देते हैं।

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and the other brother of John) also called James the Greater
3. John (son of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip of Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

    The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

List of Stories of “Christianity in Italian Folktales-1”

1. The Devotee of Joseph
2. One Night in Paradise
3. Jesus and Saint Peter in Friuli
4. Jesus and Saint Peter in Sicily
5. Fra Ignazio
6. Olive
7. Three Orphans
8. A Boat Loaded With ….
9. The Child Who Fed the Crucifix
10. St Anthony's Gift
11. The Lion's Grass
12. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
13. Wormwood
14. The Just Man
15. Lord Saint Peter and Apostles
16. The Lord, St Peter and the Blacksmith
17. In This World One Weeps and Another Laughs
18. The Ass
19. Saint Peter and His Sisters
20. Pilate
21. Story of Judas
22. Desperate Malchus
23. Malchus at the Column
24. The Story of Buttadeu
25. The Story of Crivoliu
26. The Story of St James of Galacia
27. The Baker's Apprentice
28. Occasion
29. Brother Giovannone
30. Godfather Misery

List of Stories of “Christianity in World Folktales-2”

1. Six Candles
2. Peter and Brother Robin
3. Twelve Apostles
4. The Tailor in Heaven
5. Godfather Death
6. The Cardplayer-2
7. Spirit of a Priest
8. Three Wishes
9. Richard and His Deck of Cards
10. Gertrude's Bird
11. Beer and Bread
12. Journey to Jerusalem
13. Elijah the Prophet and Saint Nicholas
14. The Brother of Christ
15. A Story of Nicholas
16. Christ and the Geese
17. Christ and Folk Songs
18. Clever Wife
19. Cardplayer-1
20. Finn the Giant and the Minster of Lund
21. The Origin of Creation
22. The Physician's Son and the King of the Snakes

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022